

केंद्रीय राजनीतिक सांगठनिक समीक्षा 2020

जनवरी 2021 में सीसी की 7वीं बैठक में पारित

केंद्रीय कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

विषयसूची

प्रस्तावना		5
1. राजनीतिक परिस्थिति		9
2. पार्टी		14
3. सैनिक क्षेत्र		65
4. जन संगठन – संयुक्त मोर्चा		99
5. शहरों में कामकाज		128
6. भारत के क्रांतिकारी आंदोलन की वर्तमान स्थिति का आकलन – हमारे कर्तव्य		133
फौरी कर्तव्य		146

प्रस्तावना

भारत देश में, दो क्रांतिकारी धाराओं जिनका बहुत लंबा इतिहास रहा है, का प्रतिनिधित्व करने वाली पार्टियों—एमसीसीआई, भाकपा (मा—ले) [पीपुल्सवार] के सितंबर, 2004 में विलय से भाकपा (माओवादी) का उद्भव हुआ. जनवरी, 2007 में पार्टी के नेतृत्व में हमने एकता कांग्रेस—9वीं कांग्रेस का सफलतापूर्वक आयोजन किया था. भाकपा (माओवादी) के गठन के साथ ही हमारे देश में सर्वहारा पार्टी व जनसेना के निर्माण में न सिर्फ एक छलांग संभव हुआ बल्कि मजबूत क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चे के गठन की नींव पड़ी. अब यह कहा जा सकता है कि 2014 में भाकपा (माओवादी) द्वारा नक्सलबाड़ी पार्टी के साथ एकता हासिल करने के साथ ही हमने भारत में क्रांतिकारियों के एकता की प्रक्रिया पूरी की है. इन सारे परिणामों ने भारत के शासक वर्गों के बीच व्यग्रता पैदा की. भाकपा (माओवादी) के उदय होते ही उसे शासक वर्गों ने “भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए बहुत बड़ा खतरा” घोषित किया. तबसे हमारी पार्टी पर शासक वर्गों ने तीव्र फासीवादी दमनकांड आरंभ किया.

एकता—9वीं कांग्रेस के सफलतापूर्वक संपन्न होकर 14 साल बीत गए हैं. इस समयावधि में दुश्मन के तीव्र दमन की वजह से हमारी पार्टी द्वारा एक और कांग्रेस का आयोजन नहीं किया जा सका है. हालात का जायजा लेने से यही दिख रहा है कि समीप भविष्य में भी पार्टी कांग्रेस आयोजित करने के अवसर प्राप्त नहीं होंगे. इसलिए हमारी केंद्रीय कमेटी ने नई राजनीतिक, सांगठनिक समीक्षा तैयार करने लग गई. इस प्रतिकूल समय में एवं कांग्रेस आयोजित न कर पाने के हालात में, जनवादी केंद्रीयता की पद्धति के तहत ही, कांग्रेस द्वारा किए जाने वाले कार्य को इस समीक्षा के जरिए पूरा करने का प्रयास करना पड़ा. ऐसा नहीं है कि इतिहास में पहली बार हम ही इस तरह का प्रयत्न करने लगे हैं. दुनिया के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में ऐसे ऐतिहासिक संदर्भ हम देख सकते हैं जहां विभिन्न देशों में जब—जब दमन तेज हुआ और सर्वहारा वर्ग की पार्टियों ने जो सही समय पर कांग्रेस (सर्वोच्च महासभाएं) आयोजित नहीं कर सकीं, क्रांतिकारी आंदोलन का मार्गदर्शन देने के लिए विविध किस्म की पद्धतियों का चयन कर समीक्षाएं तैयार की थी. पार्टी को एक

पथ पर चलाने के लिए व्यवहारयोग्य पद्धति के तौर पर हमने भी इस केंद्रीय राजनीतिक, सांगठनिक समीक्षा तैयार करना आरंभ किया।

मार्क्सवादी पद्धति यही है कि क्रांतिकारी आंदोलन की समीक्षाएं कभी भी वास्तविकता पर आधारित होनी चाहिए न कि मनागतवाद (सब्जेक्टिविज्म) पर। मार्क्सवादी पद्धति के अनुसार यह वास्तविक विश्लेषण करना चाहिए कि भौतिक क्रम की स्थिति (वर्ग संघर्ष) जोकि जनयुद्ध व प्रतिक्रांतिकारी युद्ध इन दो विरोधी तत्वों के बीच चलने वाले संघर्ष का रूप है, में अस्थायी तौर पर मजबूत स्थिति में कौनसा तत्व है और कमजोर स्थिति में कौनसा है। इसके साथ ही इस बात का भी विश्लेषण करना चाहिए कि वर्तमान में कमजोर तत्व भविष्य में मजबूत तत्व के रूप में एवं वर्तमान मजबूत तत्व भविष्य में कमजोर तत्व में बदलने का वस्तुगत आधार क्या है। तभी वर्तमान अस्थायी स्थिति पर ही नहीं बल्कि भविष्य व दीर्घकालीन दृष्टि से तय किए जाने वाले दांव-पेंच एवं रणनीति सही रहती हैं। अन्यथा इसके विपरीत किए जाने वाले विश्लेषण एवं आकलन एकांगीपन व अल्पदृष्टि का शिकार होकर अति व मित आकलनों के चलते राजनीतिक तौर पर गलत निर्णयों के लिए वे रास्ता बनाते हैं। मालेमा ने हमें यह पद्धति (मैथडॉलजी) उपलब्ध करायी है। हमारी पार्टी प्रारंभ से इसी पद्धति का अनुसरण करती आ रही है। नक्सलबाड़ी व श्रीकाकुलम के क्रांतिकारी संघर्षों की अस्थायी रूप से पीछेहट के फलस्वरूप उस समय क्रांतिकारी शिविर में निराशा, हताशा व अविश्वास का माहौल निर्मित था। उस स्थिति में सफलताओं व असफलताओं को अलग कर, सफलताओं के आधार पर आगे बढ़ने की योजनाओं की तब के हमारे नेतृत्व ने रूपकल्पना की। उस योजना के अनुरूप संचालित आचरणात्मक प्रयास का ही नतीजा है, आंध्र-तेलंगाना, बिहार-झारखंड, दंडकारण्य के क्रांतिकारी आंदोलनों का उभार। इन चार दशकों में विभिन्न क्षेत्रों में जब-जब नई परिस्थितियां सामने आयीं, हमने कार्यनीति, कार्य पद्धतियों व पॉलिसियों को विकसित कर उन्हें व्यवहार में लाया। उससे जीतें हासिल की, हम विकसित हुए। इन आंदोलनों के साथ अन्य राज्यों के क्रांतिकारी आंदोलन भी उतार-चढ़ावों, मोड़-घुमावों, पीछे हटना-आगे बढ़ना, व ज्वार-भाटों के दौर से गुजरा। इस पूरे क्रम में हमारी केंद्रीय कमेटी ने अनुकूलताओं-चढ़ाव, मोड़, आगे बढ़ना, ज्वार की

स्थितियों में विभिन्न आंदोलनों को और उच्च स्तर में विकसित करने की योजनाओं को बनाते हुए ही प्रतिकूलताओं—उतार, घुमाव, पीछे हटना, भाटा की स्थितियों में उन्हें पार करने के लिए वस्तुगत (ऑब्जेक्टिव) व आत्मगत (सब्जेक्टिव) परिस्थिति में मौजूद तात्कालिक व दीर्घकालिक मौकों को चिह्नित कर, उन पर समूची पार्टी को विश्वास हासिल करने योग्य रणनीतिक योजनाओं को बनाकर संचालित किया। यही सही व क्रांतिकारी पद्धति है। फिलहाल हम इसी पद्धति (मैथडॉलजी) का अनुसरण करेंगे।

केंद्रीय कमेटी ने अब तक 6 बैठकें आयोजित की। छठवीं सीसी बैठक विशेष परिस्थितियों में सितंबर 2018 में पहला चरण के रूप में और दिसंबर 2020—जनवरी 2021 में दूसरा चरण के रूप में आयोजित की। लगभग हर बैठक के समय कांग्रेस कर्तव्यों के अमल के लिए विस्तारपूर्वक प्रस्ताव पारित करने के साथ—साथ आंदोलन के सकारात्मक व नकारात्मक विषयों का विश्लेषण करके फौरी कर्तव्यों को तय की। राज्य कमेटियों ने विभिन्न संदर्भों में प्लीनमों का आयोजन कर आंदोलन की समीक्षाओं के साथ नए कर्तव्यों को तय किया। सीआरबी, ईआरबी ने विस्तारित बैठकें आयोजित कर अपने—अपने आरबी इलाकों के आंदोलनों की समीक्षाएं की, कर्तव्य तय किए एवं उन पर अमल किया। ये सारी समीक्षाएं केंद्रीय राजनीतिक व सांगठनिक समीक्षा तैयार करने में उपयोगी रहीं।

किंतु अभी तक अलग—अलग रीजनल ब्यूरो और एसएसी/एसजडसी/एससीयों ने आंदोलन की समीक्षाएं कर, यह मान लिया कि अलग—अलग इलाकों के आंदोलन कमजोर हो गए। कमजोरी होने की स्थिति के मुताबिक 'कठिन', 'भाटा', 'अस्थायी तौर पर पीछेहट' के नाम निर्देशित किए। इन समीक्षाओं में अलग—अलग आंदोलन कमजोर होने के लिए दुश्मन द्वारा संचालित प्रतिक्रांतिकारी हमले को, उत्पादन संबंधों में, युद्ध परिस्थितियों में आए बदलावों के अनुसार कार्यनीति को तय करने में व लागू करने में हुई त्रुटियों व सीमितताओं को, पार्टी, पीएलजीए और जननिर्माणों का पर्याप्त मात्रा में बोल्शेवीकरण नहीं कर पाने को मुख्य कारण बताया।

जैसाकि पहले बताया गया, देशभर में अलग—अलग इलाकों के आंदोलन अलग—अलग स्तरों में कमजोर होने के बावजूद, विगत 14 वर्षों में आंदोलन

द्वारा अग्रगति को भी दर्ज किया गया. ठोस रूप से कहा जाए, तो इन 14 वर्षों के काल में पहले 2007 से 2011 तक याने 5 वर्षों तक देश के क्रांतिकारी आंदोलन अग्रगति में रहा है, 2012 से वह कमजोर होते हुए कठिन दौर में चला गया, 2018 से आस्थायी तौर पीछेहट की स्थिति का सामना कर रहा है. देशभर के क्रांतिकारी आंदोलन में ऐसी स्थिति बनने के कारणों को इस राजनीतिक सांगठनिक समीक्षा में गहराई से समीक्षा की गयी. प्रधानतया क्रांति की जीत को सुनिश्चित करने के तीन जादुई हथियारों – पार्टी, जनसेना व संयुक्तमोर्चा के विकास क्रम में व्यक्त हुए कमी-कमजोरियों व सीमितताओं को संपूर्ण रूप से चर्चा कर ठोस सबक लिए गए. वास्तवों पर आधारित होकर मालेमा को अन्वय करते हुए, फौरी, प्रधान व केंद्र कर्तव्यों में जरूरी बदलाव किए गए.

प्रिय कामरेडो!

इस राजनीतिक सांगठनिक समीक्षा को और समृद्ध बनाने के लिए आप के सामने रखा जा रहा है। इस कार्य को सैद्धांतिक व राजनीतिक प्रयास के अंदर ही देखना व संभालना चाहिए। इसलिए आप से केंद्रीय कमेटी का आग्रह है कि पार्टी कैडरों व कतारों द्वारा इस दस्तावेज को गहराई से अध्ययन किया जाए, जरूरी संशोधन भेजा जाए. इस अवसर पर पार्टी कैडरों व कतारों को इस समीक्षा को गहराई से अध्ययन कर, समृद्ध बनाने की जरूरत को समझने के लिए कामरेड मार्क्स का यह उल्लेखन का याद करेंगे –

“क्रांति की राह पर चलने वाले वीर योद्धा हर पराजय से नयी ताकत संग्रहित करते हैं. इतिहास के प्रवाह में जितना तैरते हैं, उतना मनोबल बढ़ता है”.

1. राजनीतिक परिस्थिति—हमारा व्यवहार

जनवरी 2007 में संपन्न एकता कांग्रेस—9वीं कांग्रेस भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में ऐतिहासिक महत्व रखने वाली घटना है। भारत के क्रांतिकारी आंदोलन का साधारण व मौलिक दिशा—निर्देशन करते हुए इस कांग्रेस ने मार्क्सवाद—लेनिनवाद—माओवाद, पार्टी कार्यक्रम, पार्टी संविधान, भारत की क्रांति की रणनीति—कार्यनीति, राजनीतिक प्रस्ताव एवं एमसीसीआई व सीपीआई (एमएल) (पीपुल्सवार) की राजनीतिक व सांगठनिक समीक्षाओं की मसविदा दस्तावेजों को अंतिम रूप दिया था। एकीकृत पार्टी/भाकपा (माओवादी) के गठन के बाद की समयावधि (सितंबर, 2004 से जनवरी, 2007 तक के 27 महीनों की समयावधि) के व्यवहार की समीक्षा कर, विलय के बाद की राजनीतिक व सांगठनिक समीक्षा को अंतिम रूप दिया था।

एकता कांग्रेस—9वीं कांग्रेस संपन्न होकर अभी 14 साल हो गए हैं। कांग्रेस द्वारा तय राजनीतिक व सैनिक लाइन पर आधारित होकर इन 14 सालों की समयावधि में भारत की क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए हमने जो राजनीतिक, सैनिक, सांगठनिक व सांस्कृतिक कार्य किया, मालेमा की रोशनी में उस समूचे कार्य की समीक्षा करने की जरूरत है।

एकता कांग्रेस ने वस्तुगत व आत्मगत परिस्थितियों का आकलन करने के तहत तब की समकालीन अंतर्राष्ट्रीय व देशीय परिस्थिति एवं तत्कालीन क्रांतिकारी आंदोलन की स्थिति का आकलन लगाया। इस आकलन पर आधारित होकर समूची पार्टी के सामने फौरी, प्रधान व केंद्रीय कार्यभार निर्देशित किया। एकता कांग्रेस की राजनीतिक व सांगठनिक समीक्षा में उल्लेखित राजनीतिक परिस्थिति एवं उसके बाद अलग—अलग समयों में आयोजित केंद्रीय कमेटी की बैठकों में तय 'राजनीतिक परिस्थिति पर हमारा आकलन एवं हमारे कार्यभारों' और निर्णयों की समीक्षा करेंगे।

केंद्रीय कमेटी पहली बैठक जहां 9वीं कांग्रेस संपन्न हुई वहीं पर होने के कारण राजनीतिक परिस्थिति पर अलग से कुछ हमारा आकलन व कार्यभारों

का सर्कुलर नहीं तैयार की गयी. केंद्रीय कमेटी ने अपनी दूसरी बैठक (नवंबर, 2007), तीसरी बैठक (जनवरी, 2011), चौथी बैठक (मार्च, 2013), पांचवीं बैठक (फरवरी, 2017), छठवीं बैठक (सितंबर, 2018), छठवीं धारावाहिक बैठक (दिसंबर 2020—जनवरी, 2021) में राजनीतिक प्रस्ताव जारी किए. 2009 के चुनावों के बाद की परिस्थिति पर पीबी ने सर्कुलर जारी किया. अप्रैल, 2014 में आयोजित संसदीय चुनावों के बाद केंद्र में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए (नेशनल डेमोक्रेटिक अलयंस—राष्ट्रीय जन तांत्रिक गठबंधन) की सरकार बनने के साथ ही देश की राजनीति में आए बदलाव का विश्लेषण करते हुए पार्टी द्वारा अपनाए जाने वाले कार्यभारों के बारे में हमारी पोलित ब्यूरो ने मार्गदर्शन दिया. अंतर्राष्ट्रीय परिणामों के तहत चीन के नयी साम्राज्यवादी ताकत (सामाजिक साम्राज्यवाद) के रूप में उभरने के क्रम का विश्लेषण करते हुए जुलाई, 2017 में केंद्रीय कमेटी ने दस्तावेज जारी की. जून 2019 में मोदी सरकार दोबारा सत्ता में आने के बाद चुनाव उपरांत परिस्थिति का विश्लेषण करते हुए, पार्टी द्वारा लिए जाने वाले कर्तव्यों के बारे में केंद्रीय कमेटी ने एक सर्कुलर जारी की. भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के उन्मूलन के लिए केंद्र, राज्य सरकारों द्वारा जारी प्रतिक्रांतिकारी हमले की योजनाओं के बारे में केंद्रीय कमेटी ने नवंबर, 2017 में एक सर्कुलर, जनवरी, 2011 में विवरणात्मक प्रस्ताव बनाया था जबकि जुलाई, 2018 में केंद्रीय सैन्य आयोग (सीएमसी) ने सर्कुलर/परिपत्र जारी किया. उसी तरह छठवीं बैठक और छठवीं धारावाहिक बैठकों के बाद राजनीतिक परिस्थितियों में आ रहे बदलावों समेत, केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा क्रांतिकारी आंदोलन पर हमले तेज करने के तहत प्रस्तावित 'समाधान', व 'प्रहार' जैसे हमलों का सामना करने के लिए सीसी का मार्गदर्शन देते हुए सर्कुलरों को बनाकर पहुंचाया गया. इनके साथ ही जब-जब अंतर्राष्ट्रीय व देशीय परिस्थितियों में महत्वपूर्ण परिणाम सामने आए, ऐसे हर मौके पर हमारी केंद्रीय कमेटी व पोलित ब्यूरो ने प्रेस विज्ञप्तियां जारी कर उन घटनाओं व परिणामों पर हमारी पार्टी के रुख का ऐलान करते हुए आवश्यक आंदोलन के कार्यक्रमों के लिए आह्वान दिए.

कुल मिला कर देखा जाए, इन 14 सालों की कालावधि में अंतर्राष्ट्रीय व देशीय परिस्थितियों में कुछ प्रमुख बदलाव उत्पन्न हुए. इन सभी बदलावों ने

यह साबित किया कि एकता कांग्रेस द्वारा बनायी गयी राजनीतिक प्रस्ताव दस्तावेज में, पीबी व सीसी द्वारा जारी की गयी सर्कुलरों में किये गये विश्लेषणों एवं दिए गए आकलनों मूलतया सही हैं। इस बात निम्नांकित उल्लेखनों से स्पष्ट हो जाता है।

“इस तरह पूरी स्थिति को देखने से दुनिया का प्रधान अंतरविरोध — साम्राज्यवाद एवं उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं व जनता के बीच का अंतरविरोध तथा अन्य अंतरविरोध दिन—ब—दिन तीखे होते जा रहे हैं। इसके फलस्वरूप दुनिया की हालत और अनुकूल बन गई है। इसने वर्तमान में कमजोर आत्मगत शक्तियों के परिपक्व (मजबूत) होने की स्थिति निर्मित की।

“देश के सभी प्रमुख अंतरविरोधों के तीव्र व तीखा होने के कारण देश में क्रांतिकारी युद्ध को आगे बढ़ाने के लिए स्थिति अत्यंत अनुकूल बन गई। यह पूरे देश में आत्मगत शक्तियों के विकास के लिए अत्यंत अनुकूल स्थिति उपलब्ध करा रही है। यदि हम इन मौकों का सही इस्तेमाल करते हैं, पूरी पहलकदमी के साथ जनता को राजनीतिक रूप से गोलबंद करेंगे तो निश्चित तौर पर छापामार युद्ध को और उच्च स्तर में ले जा सकते हैं। क्रांतिकारी आंदोलन को देश के चारों कोनों में फैला सकते हैं।”

“कई राज्यों में एवं केंद्रीय स्तर पर इतने पैमाने पर नेतृत्व को गंभीर नुकसान पहुंचने के बावजूद कुल मिलाकर देखा जाए, तो हमारा आंदोलन विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ रहा है। उसी समय पार्टी, पीएलजीए, संयुक्त मोर्चा का निर्माण कर मजबूत करने में गंभीर त्रुटियां व कमजोरियां जारी हैं।”

“झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, आंध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश के सुसंपन्न खनिज संसाधनों वाले इलाकों को हथियाकर, अपने इच्छानुसार उन संपदाओं को हड़पना ही उन राज्यों में शासक वर्गों द्वारा क्रांतिकारियों पर बेहद क्रूर युद्ध संचालित करने व उनके तेज होते सैनिक हमले के पीछे का एक तात्कालिक व मुख्य कारण है।”

इन 14 सालों के परिणाम यही साबित कर रहे हैं कि अंतर्राष्ट्रीय व देशीय राजनीतिक परिस्थिति, आंदोलन की स्थिति व दुश्मन के हमले की तीव्रता के कारणों को उपरोक्त तरीके से उल्लेखित करते हुए बनाए गए फौरी

कार्यभार मूलतया सही हैं।

इन 14 सालों के समय में, देश में हुए राजनीतिक परिणामों को देखा जाए तो, जब पार्टी की एकता कांग्रेस का आयोजन हुआ, केंद्र में कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व वाली यू.पी.ए. (संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन) सत्ता में थी। यह गठबंधन सरकार 2014 में हुए संसदीय चुनावों में हार जाने के बाद, भाजपा नेतृत्व वाली एन.डी.ए. (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन) सत्ता में आयी। 2019 में हुए 17वें संसदीय चुनावों में फिर से एनडीए सरकार ही जीत कर, वर्तमान सत्ता में बनी हुई है। इस पूरे समय में साम्राज्यवादी वित्तीय पूंजी ने वैश्वीकरण के तहत विश्व के देशों पर, विशेषकर पिछड़े देशों पर हमला तेज किया। इस हमले के लिए भारतीय दलाल शासक वर्ग ने वाहक के रूप में काम करते हुए, देश की संपदा को साम्राज्यवादियों में सौंपते हुए, अपने भी पेट भरते आ रहे हैं। यह प्रक्रिया, भारत के दलाल शासकों के लिए राजनीतिक रूप से प्रतिनिधित्व करने वाली यूपीए और एनडीए सरकारों के नेतृत्व में लागू होती रही है। इस दौरान हुई और एक महत्वपूर्ण बदलाव यह है कि साम्राज्यवाद की सेवा करने वाली देश के लगभग तमाम संसदीय पार्टियां ब्राह्मणीय हिंदुत्व सामंतवाद और दलाल नौकरशाह पूंजीवाद का प्रतिनिधित्व करती हैं, बावजूद इस विषय में अत्यंत 'दक्षिणपंथी पार्टी' के रूप में जानने वाली भाजपा ने 2014 के बीच से सत्ता में बनी रही है। यह अपनी 'हिंदुराष्ट्र' की स्थापना के एजेंडे को बहुत ही आक्रामकता, निरंकुश चाल-चलन और संसद में बहुत के बल पर लागू करती आ रही है।

इसी के तहत ही हमारी एकता पार्टी के गठन के फौरन बाद से साम्राज्यवादियों के दिशानिर्देशन में केंद्र व राज्य सरकारें हमारी पार्टी एवं क्रांतिकारी आंदोलन पर प्रतिक्रांतिकारी हमला देशव्यापी विस्तृति एवं तीव्रता के साथ जारी रहा। 2004 से 2009 तक यूपीए-1 शासन द्वारा क्रांतिकारी आंदोलन पर जारी प्रतिक्रांतिकारी हमले को क्रांतिकारी आंदोलन ने परास्त किया था। इसके बाद यूपीए-2 सरकार ने 'ऑपरेशन ग्रीनहंट' के नाम पर 2009 से समग्र प्रतिक्रांतिकारी रणनीति बनाकर अमल किया। बाद में भाजपा भी उसे जारी रखा। इस हमले का भी हमारी पार्टी के नेतृत्व में जनता एवं पीएलजीए ने साहसिक ढंग से प्रतिरोध किया। ऐसी स्थिति में देशभर में हमारी पार्टी नेतृत्व

में पीएलजीए ने बुरकापाल एंबुश आदि छापामार कार्रवाइयों को अंजाम दिया तो देशीय व अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों, क्रांतिकारी आंदोलन की अग्रगति के लिए मौजूद अवसरों, क्रांतिकारी आंदोलन के जनाधार एवं अन्यान्य विषयों को ध्यान में रखकर और भी ताकत के साथ क्रांतिकारी आंदोलन के दमन के लिए मई 2017 में केंद्र सरकार 'समाधान' के नाम से और भी समग्र प्रतिक्रांतिकारी रणनीति बनाकर हमले को जारी रखी हुई है।

ऐसी परिप्रेक्ष्य में ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद के खिलाफ और साम्राज्यवादी नयी उदारवादी नीतियों, जिसकी वह सेवा करती है, के खिलाफ विभिन्न स्वरूपों में हमारी सीसी ने अपनी राजनीतिक हस्तक्षेप बढ़ाती आ रही है। विशेषकर, जनता द्वारा सामना की जा रही मौलिक समस्याओं के लिए ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद और नयी उदारवादी नीतियों को जिम्मेदार ठहराते हुए विभिन्न स्वरूपों में (पर्चा, बुकलेट और प्रेस विज्ञप्तियां) प्रचार करते हुए, जनता को चेतनाबद्ध करने का प्रयास किया। इस राजनीतिक प्रचार के साथ-साथ, बड़े पैमाने पर विस्थापन जो नयी उदारवादी नीतियों का नतीजा है, ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद, उसके विभिन्न स्वरूपों के व्यक्तीकरणों, राज्य का फासीवादी दमन के खिलाफ व्यापक जनमंचों को गठित कर, राजनीतिक और प्रचार आंदोलन चलाएं।

अंतरराष्ट्रीय और देशीय स्तर पर शोषक शासक वर्गों द्वारा सामना किए जा रहे आर्थिक व वित्तीय संकट को हल करने के लिए तेजी से बदलाव ला रहे हैं, जो जनता के खिलाफ हैं। इन बदलावों को 'विकास', 'वृद्धि' के नाम पर किए जा रहे हैं। जब इन बदलावों के जनविरोधी, घातुक स्वभाव और उसकी गति के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए, तो बता सकते हैं कि उन्हें पर्दाफाश कर, जनता को जागृत करने में और शोषक-शासक वर्गों के खिलाफ मजबूत राजनीतिक आंदोलन को संचालित करने में पार्टी का राजनीतिक हस्तक्षेप पर्याप्त मात्रा में नहीं है। वर्तमान में जब आंदोलन अस्थायी पीछेहट की स्थिति का सामना कर रहा है, इससे उबरते हुए क्रांतिकारी आंदोलन में एक उभार पैदा करने के लिए पार्टी अपना राजनीतिक हस्तक्षेप और बढ़ाने की आवश्यकता है।

2. पार्टी

दीर्घकालिक जनयुद्ध के रास्ते में भारत की क्रांति को सफल बनाने के लिए आवश्यक तीन अद्भुत हथियारों में से पहला है, पार्टी जोकि न केवल महत्वपूर्ण है बल्कि वह वीर योधा के तौर पर दो और अद्भुत हथियारों – जन सेना, संयुक्त मोर्चा को हाथ में लेकर क्रांति का नेतृत्व करती है। ऐसी महत्वपूर्ण पार्टी का हम निरंतर विकसित करते आ रहे हैं। नक्सलबाड़ी से शुरू कर हमने मार्क्सवादी–लेनिनवादी–माओवादी पार्टी को विकसित करते हुए 2004 में एकीकृत पार्टी की स्थापना की। इससे भारत की क्रांति में एक छलांग संभव हुआ। एक देशव्यापी मजबूत पार्टी का निर्माण किया जा सका। इससे भारत की क्रांति का महान जीतों के साथ आगे बढ़ना प्रारंभ हुआ। जनवरी, 2007 में संपन्न हमारी पार्टी की एकता–9वीं कांग्रेस ने डीके–बीजे को मुक्तांचलों में विकसित करने हेतु छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में एवं पीएलजीए को पीएलए में विकसित करने का केंद्रीय कार्यभार तय किया था। इसके साथ दुश्मन के हमले को परास्त करने के कार्यभार, आंदोलन की ताकत व कमजोरी पर आधारित होकर विभिन्न स्पेशल एरियाओं/स्पेशल जोनों/राज्यों द्वारा हासिल किए जाने वाले राजनीतिक कार्यभार, सैनिक कार्यभार, संयुक्त मोर्चा के कार्यभार, सांगठनिक कार्यभार एवं शहरी कार्यभारों को तात्कालिक कार्यभार के रूप में समूची पार्टी के लिए निर्देशित किया। विगत 14 सालों की कालावधि में कांग्रेस निर्देशित केंद्रीय कार्यभार की पूर्ति के लिए एवं अन्य कार्यभारों की पूर्ति के लिए पार्टी, पीएलजीए एवं संयुक्त मोर्चा के निर्माणों ने राजनीतिक, सैनिक व सांगठनिक कार्यों को जारी रखा।

सदा पार्टी लाइन से जुड़े रहकर काम करने के चलते ही इन 14 सालों के दौरान क्रांतिकारी आंदोलन ने कई सफलताएं हासिल की और नए अनुभव प्राप्त किया, इनके पीछे हजारों शहीदों के खूनी बलिदान हैं। तथापि साम्राज्यवादियों के दिशानिर्देशन में भारत के दलाल शासक वर्गों का प्रतिक्रांतिकारी हमले की वजह से इस दौरान हमारी पार्टी ने कई उतार–चढ़ावों का सामना किया। इस समय काल के भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को हमें दो चरणों में विभाजित कर पड़ताल करना होगा। पहला चरण में 2007 से 2011 अंत तक 5 सालों के

समय तक वह अग्रगति में था, जबकि 2012 शुरूआत से 2020 तक के दूसरा चरण में से 2018 तक, याने 7 साल तक कठिन स्थिति का सामना किया और 2018 से अस्थायी तौर पीछेहट गयी. इसके कारणों का गहन अवलोकन व समीक्षा कर, उनका हल दर्शाने के द्वारा ही पार्टी नयी नवेली बनकर भारत की क्रांति का सक्षम नेतृत्व कर सकती है. इस कर्तव्य निर्वाह के तहत पार्टी के क्षेत्र में हमने जो कार्य किया है, उसकी समीक्षा करेंगे.

“क्रांति को जीत की ओर अग्रसर करने के लिए एक राजनीतिक पार्टी को अवश्य अपनी सही राजनीतिक लाइन व अपने सांगठनिक दृढ़ता पर आधारित होना चाहिए” (माओ, अंतरविरोधों पर).

“लेनिनवादी दृष्टिकोण के मुताबिक, किसी भी देश में यदि क्रांति को सफल करना है तो वहां के सर्वहारा वर्ग की अपनी एक ऐसी सच्ची मार्क्सवादी—लेनिनवादी पार्टी होनी चाहिए जो मार्क्सवाद—लेनिनवाद—माओवाद के सार्विक सत्यों को अपने स्वयं के देश की क्रांति के ठोस व्यवहार के साथ एकात्म करने में निपुण हो, विभिन्न कालावधियों में क्रांति के दुश्मनों को ठीक से निर्धारित करने में योग्य हो एवं प्रधान शक्ति व मित्र शक्तियों को संगठित करने के सवाल तथा किन पर निर्भर होना है और किनके साथ एकताबद्ध होना है, इस सवाल का हल निकालता हो. क्रांतिकारी सर्वहारा पार्टी को अपने वर्ग की जनता एवं ग्रामीण इलाकों में अर्ध—सर्वहारा यानी गरीब किसानों के व्यापक जनसमुदायों पर अवश्य निर्भर होना चाहिए तथा सर्वहारा के नेतृत्व में मजदूर—किसान गठबंधन स्थापित करना चाहिए. सिर्फ तभी इस गठबंधन की बुनियाद पर उन तमाम सामाजिक ताकतों जिनके साथ एकताबद्ध होना संभव है, को एकताबद्ध करना एवं विभिन्न देशों में विभिन्न कालावधियों के दौरान वहां की ठोस परिस्थितियों के अनुरूप तमाम गैर—श्रमिक जनता जिसके साथ एकताबद्ध होना संभव है, को साथ में लेकर श्रमिक जनता के संयुक्त मोर्चा की स्थापना संभव होगा. यदि ऐसा करने में सर्वहारा वर्ग विफल हो जाता है तो वह क्रांति की विभिन्न अवस्थाओं में जीत पाने का मकसद हासिल नहीं कर पाएगा.” (लांग लिव लेनिनिज्म—सीपीसी आर्टिकल, पृष्ठ संख्या 49.)

तथापि हमें केंद्रीय कर्तव्य को हासिल करने के लिए उपयुक्त मजबूत एकीकृत पार्टी के रूप में पार्टी संगठन को क्या हमने सुदृढ़ किया? या नहीं?

सैद्धांतिक, राजनीतिक तौर पर समाज में, क्रांतिकारी आंदोलन में निरंतर होने वाले बदलावों को सही समय पर समझते हुए उसके अनुरूप क्या हमने कार्यनीति तय की? क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के हमारे प्रयासों में मौजूद खामियां क्या हैं? हमारा देश में सामंती व पूंजीपति विचारधारा पर लड़ते हुए माओवाद को संरक्षित करने में हमने क्या काम किया?

उपरोक्त मामलों में हमारे व्यवहार का परीक्षण करना होगा.

द्विधात्मक सिद्धांत के मुताबिक एक दो में विभाजित होता है. इन 14 सालों में क्या हमने हमारे द्वारा हासिल सफलताओं, विफलताओं का सही समय पर आकलन किया है? या आंदोलन में सकारात्मक बिंदुओं के साथ ही उत्पन्न होने वाले नकारात्मक मामलों को ध्यान में रखकर क्या हमने उन पर केंद्रित करके सुधारने की कोशिश की या नहीं? उन्हें अध्ययन कर सही समय पर हल किए हैं या नहीं? यही असली सवाल है. इसके लिए निम्नांकित मामलों में हमारी पार्टी के व्यवहार में प्राप्त सकारात्मक व नकारात्मक विषयों के साथ-साथ हासिल अनुभवों की समीक्षा करेंगे. इन समस्याओं की गहन समीक्षा के जरिए ही हम सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक व सांगठनिक तौर पर पार्टी का बोल्शेवीकरण कर सकेंगे.

अ. सैद्धांतिक व राजनीतिक कार्य

ब. दांव-पेंच तय करने में खामियां

स. पार्टी में एकरूपता की समस्या

द. पार्टी की कार्यशैली

ए. नेतृत्व के नुकसानों पर

फ. उत्पादन के संबंध-अध्ययन

ग. अंतर्राष्ट्रीय कामकाज पर प्रतिवेदन-कार्यभार

ह. पार्टी शिक्षा

झ. केंद्रीय कार्यभार, अन्य प्रधान कार्यभार

ज. गैर-सर्वहारा वर्गीय रुझान

अ. सैद्धांतिक व राजनीतिक कार्य

समाज व प्रकृति का अध्ययन करते हुए कॉमरेड्स कार्ल मार्क्स एवं एंगेल्स ने वर्ग संघर्ष को महत्वपूर्ण मसले के रूप में पहचाना. कॉमरेड्स लेनिन, स्तालिन एवं माओ ने उसी परंपरा का निर्वाह किया. उसके फलस्वरूप ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद का अपरोक्ष सिद्धांत अस्तित्व में आया. सर्वहारा के महान शिक्षकों ने विगत के समाजों के वर्ग अंतरविरोधों व अपनी कालावधियों के समाजों के वर्ग अंतरविरोधों का अध्ययन किया. उन्होंने यह शोध किया कि बुर्जुआ वर्ग एवं सर्वहारा एक-दूसरे के खिलाफ आमने-सामने खड़े होकर राज्यसत्ता के लिए कैसे जान की बाजी लगाकर लड़ते हैं. समाज में मजदूर वर्ग को अत्यंत क्रांतिकारी प्रगतिशील वर्ग के रूप में पहचाना. यह भी चिह्नित किया कि उसके मित्र कौन हैं और शत्रु कौन? उस तरह सर्वहारा के सिद्धांत को सबसे पहले कार्ल मार्क्स और एंगेल्स ने 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' के जरिए सुस्पष्ट रूप से दुनिया के सामने रखा. तब से वह कम्युनिस्टों व सर्वहारा वर्ग के व्यवहार की करदीपिका बन गया. इसीलिए कॉ. लेनिन ने कहा, 'सिद्धांत व्यवहार का पथप्रदर्शक है'. इस व्यवहार के क्रम में ही अपराजेय मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवादी सिद्धांत विकसित होकर प्रकाशमान है. सिद्धांत की रोशनी में निरंतर व्यवहार को जारी रखने के जरिए, समाज का उसके ठोस रूप में व उसकी गतिशीलता में अवलोकन करने के द्वारा वह (सिद्धांत) निरंतर नए सत्यों को अपने में समेटकर वह नित नया बनकर रह पाता है.

हमारे देश की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व भौगोलिक परिस्थितियों का अध्ययन कर मौजूदा वर्ग अंतरविरोधों का ठोस विश्लेषण के द्वारा हमने नक्सलबाड़ी के समय ही यह तय किया था कि हमारे देश की क्रांति का रास्ता दीर्घकालिक लोकयुद्ध के रूप में जारी रहेगा. उसी तरह यह तय किया था कि हमारे देश की क्रांति पहले नवजनवादी क्रांति की अवस्था को पूरा कर समाजवादी अवस्था में आगे बढ़ेगी.

कॉमरेड माओ ने कहा - "हथियारबंद ताकत के जरिए राज्यसत्ता को हासिल करना, युद्ध के जरिए समस्या का हल निकालना, यही क्रांति का केंद्रीय कार्यभार है, उन्नत रूप है. तथापि उसूल (सभी देशों के लिए) एक होने

के बावजूद सर्वहारा पार्टी द्वारा उसका कार्यान्वयन अलग-अलग परिस्थितियों के मुताबिक अलग-अलग तरीकों में अभिव्यक्त होता है.”

उपरोक्त उसूल को हमारे देश की ठोस परिस्थितियों में लागू करके विगत 50 सालों से हम क्रांति को जारी रखे हुए हैं. हमारे देश की ठोस परिस्थितियों में हमारी पार्टी द्वारा कई सालों के कठिन क्रांतिकारी कार्य से प्राप्त सबकों की रोशनी में, एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस में क्रांति के फौरी, प्रधान व केंद्रीय कार्यभार को तय करके कामकाज प्रारंभ किया गया था. ठोस रूप से यह तय किया गया कि “दंडकारण्य, बिहार-झारखंड के रणनीतिक इलाकों में आधार इलाकों की स्थापना के लिए छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध जोकि गुणात्मक तौर पर और उन्नत अवस्था है, में विकसित करना, पीएलजीए को पीएलए के रूप में रूपांतरित करना, यही प्रधान, केंद्रीय कार्यभार होगा.”

इस लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में हमारा सैद्धांतिक, राजनीतिक कार्य केंद्रित होना चाहिए. भारत देश की ठोस परिस्थितियों से अन्वय करना चाहिए. तभी हमारा सैद्धांतिक, राजनीतिक कार्य धारदार बनेगा. हमने जो फौरी, प्रधान व केंद्रीय कार्यभार तय किया है, आंदोलन में उत्पन्न होने वाले ज्वार-भाटा की स्थितियों के अनुसार भले ही उसमें बदलाव हो सकता है, लेकिन लक्ष्य को हासिल करने के लिए निरंतर जारी रखने वाले सैद्धांतिक, राजनीतिक कार्य में कोई बदलाव नहीं होगा, बल्कि उसे और तेजी से जारी रखने की आवश्यकता होगी.

हमारे सैद्धांतिक, राजनीतिक कार्य में यदि हम सही द्वंद्वात्मक नीति अपनायी होती तो हमारे अंदर जारी खामियों को सुधारने का अवसर मिलता. हमारे अंदर उत्पन्न होने वाली गैर-सर्वहारा रुझानों – मनोगतवाद, स्वतःस्फूर्तता, उदारतावाद को कम करने में; ठोस परिस्थिति पर निर्भर करके दांव-पेंच को तय करने में; पार्टी नेतृत्व के नुकसानों, गिरफ्तारियों, मुठभेड़ों व आत्मसमर्पणों/अधःपतनों को कम करने में; समूची पार्टी की संघर्ष की तैयारी को उन्नत करने में; वर्ग संघर्ष को विकसित करने में, पूरी पार्टी को परिवर्तित-रीमाउल्ड करना संभव होता. दुश्मन द्वारा हम पर तीव्र रूप से चलाए गए फासीवादी हमले में पार्टी को गंभीर नुकसान पहुंचने व समन्वय में

तीव्र समस्याएं उत्पन्न होने के बावजूद पूरी पार्टी को सैद्धांतिक व राजनीतिक कार्य के द्वारा आगे बढ़ाने में मदद मिलती. सैद्धांतिक, राजनीतिक कार्य को देश भर में संचालित करने को उपयुक्त महत्व न देकर अपने इलाकों में उत्पन्न समस्याओं में पार्टी डूब गयी. इस स्थिति से बाहर आने के लिए हमें सही सैद्धांतिक, राजनीतिक कार्य पर केंद्रित करना होगा.

एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस में अनुमोदित पार्टी की बुनियादी दस्तावेजों, पॉलिसी पेपरों पर समूची पार्टी में शिक्षा जारी रही. इस शिक्षा के द्वारा दस्तावेजों में शामिल किए गए नए विषयों पर पार्टी कैडरों में समझदारी बनी. केंद्रीय कमेटी के निर्णय के अनुसार भूल सुधार अभियान के तहत कैडरों को परिपत्र व पत्र पर शिक्षा दी गयी. इनके द्वारा भूल सुधार अभियान संचालित करने का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ. दस्तावेजों पर शिक्षा कुछ रीजनल ब्यूरोओं में समग्रता से नहीं दी गयी. फिर भी पार्टी के लिए यह शिक्षा उपयोगी रही. मध्य रीजनल ब्यूरो और पूर्वी रीजनल ब्यूरो के इलाकों में बोल्शेवीकरण, नेतृत्व प्रशिक्षण के जरिए भी शिक्षा दी गयी. केंद्रीय कमेटी के द्वारा जब-तब जारी पार्टी संदेशों, पत्रों के द्वारा पार्टी को सैद्धांतिक, राजनीतिक समझदारी दी गयी. खासकर अंतर्राष्ट्रीय महत्व के चार वर्षगांठ समारोहों के मौकों पर पार्टी द्वारा जारी संदेशों, लेखों के जरिए पार्टी एवं जनता को शिक्षित किया गया.

जमीन के लिए आंदोलन व विस्थापन विरोधी आंदोलनों में 'पहला पुनरवास, बाद में विस्थापन', 'ना जान देंगे, ना जमीन देंगे' जैसे नारों के परदे में होने वाले संशोधनवादियों और सुधारवादियों को पर्दाफाश कर उन जनांदोलनों के लिए हमारी पार्टी ने सही क्रांतिकारी दिशा दिलायी. नवजनवादी क्रांति के तहत लालगढ़ और नारायणपटना जैसे आंदोलनों को संचालन किया, जिसके जरिए जमीन व विस्थापन विरोधी आंदोलनों का प्रत्यक्ष नमूने देश की जनता के सामने पेश किया.

हमारी पार्टी ने एकता कांग्रेस के बाद 'महिला सवाल पर हमारा दृष्टिकोण' नामक पुराने दस्तावेज को समृद्ध बनाकर जारी किया.

सीपीएन, नेपाल में अपने नेतृत्व में चल रहे नवजनवादी क्रांति को व जनयुद्ध को विश्वसघात देकर संसदीय मार्ग में चला गया, जिसे हमारी पार्टी

ने भंडाफोड़ किया और घोषित की कि प्रचंड और भट्टाराय के नेतृत्व वाली उस पार्टी ने आधुनिक संशोधन पार्टी के रूप में तब्दील हो गयी।

संसदीय चुनावों का बहिष्कार करने का आह्वान करते हुए जब का जब पार्टी की समझदारी को न सिर्फ पार्टी कैडरों और जनता तक पहुंचाया बल्कि वर्तमान शोषक वर्गों का राजसत्ता के विकल्प के तौर पर नवजनवादी क्रांतिकारी सरकार के एजेंडे को देश का राजनीतिक पटल पर लाया।

पृथक तेलंगाना राज्य के लिए संचालित आंदोलन में जनवादी तेलंगाना नारे को लेकर जनता को सही दिशा दिलायी।

पुलिस और माओवादियों के बीच आदिवासी पिस रहे हैं, के शूतुर मुर्ग वाले, वर्ग समर्पणवादी व संशोधनवादी दलीलों का भंडाफोड़ करते हुए सक्रिय जन प्रतिरोध को तेज किया।

इसी तरह 'हिंसा' को विरोध करने के नाम पर गांधीवाद के परदे तले परोक्ष रूप से शोषक वर्गों को समर्थन देने वाली शक्तियों को जब का तब भंडाफोड़ किया। वर्ग संघर्ष की वास्तविकता को, उसमें उत्पीड़ित जनता के जायज भूमिका को ऊंचा उठाते हुए राज्य आतंक का व्यापक जनता में पर्दाफाश किया।

पंडा, श्रीरामुलु, लंका पापिरेड्डी, जंपन्ना, सुधाकर जैसे भगोड़ों व विश्वासघातियों द्वारा सामने लाए गए अवसरवादी दलीलों का सैद्धांतिक व राजनीतिक रूप से कारगर ढंग से मुकाबला किया।

आरसीपी (यूएसए) द्वारा सामने लायी गयी अवाकियनिज्म सिद्धांत को आधुनिक संशोधनवादी सिद्धांत के रूप में करार किया।

पार्टी नेतृत्व को नुकसान पहुंचने के बावजूद केंद्रीय कमेटी ने अंतर्राष्ट्रीय संस्था के गठन के मामले पर 'सर्वहारा के अंतरराष्ट्रीय संगठन गठित करने पर हमारी पार्टी का दृष्टिकोण' और चीन को सामाजिक साम्राज्यवादी देश के रूप में चिह्नित करने वाले 'चीन एक नयी सामाजिक-साम्राज्यवादी शक्ति है! वह विश्व पूंजीवाद-साम्राज्यवादी व्यवस्था का अभिन्न अंग है' नामक नई दस्तावेजों को तैयार की। जाति समस्या पर पुराना दस्तावेज 'भारत देश में जाति का सवाल-हमारा दृष्टिकोण' को समृद्ध बनाकर जारी किया। राष्ट्रीयताओं

की समस्या पर 'भारतवर्ष' में राष्ट्रीयताओं का सवाल—हमारी पार्टी का दृष्टिकोण' दस्तावेज बनायी. विशेषकर अंतरराष्ट्रीय संगठन पर जारी किए गए दस्तावेज में उस तरह का निर्माण गठित करने के मामले में हमारी पार्टी की समझदारी को विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन के सामना लाया. जाति समस्या पर समृद्ध बनाए गए हमारी दस्तावेज में सामंतवाद को जाति आधारित सामंतवाद के रूप में और ब्राह्मणवाद उसकी विचारधारा के रूप में चिन्हित किया. ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद को ऐसा चिन्हित किया कि वह वर्तमान भारत की राजसत्ता का रूप में है.

ब. दांव—पेंच तय करने में खामियां

आंदोलन के ज्वार—भाटा, सैनिक क्षेत्र में आत्मरक्षा—हमला, अग्रगति—पश्चगमन इन मामलों में, क्रांतिकारी शक्तियों की मजबूती व कमजोरियों एवं राजनीतिक परिस्थितियों में होनेवाले बदलावों पर आधारित होकर कार्यनीति में बदलाव करना होता है. आंदोलन में ज्वार—भाटा, जब का तब अपनाए जाने वाले राजनीतिक दांव—पेंचों, इन दांव—पेंचों के मुताबिक अपनाए जाने वाले सैनिक दांव—पेंचों, इन दोनों के अनुरूप बनाए जाने वाले नारों, संघर्ष व संगठन के रूपों पर निर्भर होते हैं. उसी तरह यह समझ सैनिक क्षेत्र में आत्मरक्षा—हमला और अग्रगति व पश्चगमन के मामलों में भी लागू होती है.

हमारे देश के क्रांतिकारी आंदोलन का विकास असमानताओं से युक्त है. देशभर में मजबूत क्रांतिकारी आंदोलन नहीं होने की वजह से दुश्मन अपना बरतारता से कुछ इलाकों पर केंद्रित कर हमला कर पा रहा है. उन्होंने कुछ इलाकों पर केंद्रीकरण करके क्रूर दमन अभियान को जारी रखते हैं, जबकि और कुछ इलाकों में क्रांतिकारी आंदोलन के विकसित होने के अवसर मिल रहे हैं. वह भी उक्त असमान विकास वाले उसूल को ही प्रतिबिंबित करता है. उस तरह नए इलाकों में क्रांतिकारी आंदोलन आगे बढ़ भी रहा है. हमारी पार्टी के इतिहास में यह सच्चाई साबित हो चुकी है.

हालांकि जनयुद्ध में सैनिक क्षेत्र में जारी संघर्ष ही प्रधान व निर्णायक है लेकिन दीगर क्षेत्रों खासकर राजनीतिक, सैद्धांतिक क्षेत्रों में जारी संघर्ष भी मुख्य है.

राजनीतिक क्षेत्र में इन 14 सालों में जन आंदोलनों के संचालन में हमने कुछ अनुभव हासिल किए। सैनिक मदद के साथ जन आंदोलनों को विकसित करने की कोशिश की गयी। लालगढ़, नारायणपट्ना आंदोलनों को इसी तर्ज पर विकसित किया गया। इन आंदोलनों में जन राज्यसत्ता के संगठनों का निर्माण करने की हमने कोशिश की।

पृथक तेलंगाना राज्य आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल होकर जनवादी तेलंगाना नारे के साथ जनता को गोलबंद कर चलाए गए संघर्ष से पृथक राज्य की मांग के आंदोलन में अपनाए जाने वाले दांव-पेंचों के मामले में कुछ अनुभव प्राप्त हुआ।

इस दौरान देश में प्रधान रूप से सामने आए विस्थापन विरोधी आंदोलनों, इन आंदोलनों से उत्पन्न कई कानूनी व गैर-कानूनी संघर्षों में हम सक्रिय रूप से शामिल हुए। उस तरह पेसा कानून के तहत ग्रामसभाओं के अधिकारों का उपयोग कर जन गोलबंदी, 5वीं, 6वीं अनुसूचियों के अमल के लिए आंदोलन करने सहित जल-जंगल-जमीन-इज्जत-अधिकार नारे के इर्द-गिर्द हमने जनता को गोलबंद किया।

हमारे अंदर जारी कमजोरियों के चलते इस समयावधि में हमने बड़े पैमाने पर नेतृत्व को खोया। दुश्मन के हमले को समझते हुए उपयुक्त कार्यपद्धति अपनाने में विफल होने के साथ ही उपयुक्त दांव-पेंच तय करने में भी समस्या रही है। हमें प्रधान रूप से शहरी व मैदानी इलाकों में नुकसान उठाना पड़ा। हम इस दौरान शहरी व मैदानी इलाकों में पर्याप्त दांव-पेंच विकसित नहीं कर पाए। नुकसानों के पीछे यद्यपि अन्य कारण भी हैं, लेकिन इस मामले के महत्व को भी पहचानना होगा।

केंद्रीय कर्तव्य को तय करने के बाद पार्टी काम उसके इर्द-गिर्द होना चाहिए। उसे मदद पहुंचाने के हिसाब से विभिन्न राज्यों में वहां के आंदोलनों के स्तर के मुताबिक वर्ग संघर्षों की भट्ठी में तपकर मजबूत हुए कैडरों को उन इलाकों जिन्हें मुक्तांचल बनाने का निर्णय लिया गया था, में एवं उक्त कर्तव्य पूर्ति के लिए मददगार विभागों में भेजने में ठोस खामियां जारी हैं।

हमारा देश असमान विकास वाला राष्ट्रीयताबहुल विशाल देश है।

हालांकि हमारी पार्टी लाइन समूचे देश के लिए एक ही है लेकिन हमारे देश में मौजूद इस बहुलता व विविधता को समझते हुए विभिन्न राज्यों में संघर्ष व संगठन के ठोस रूपों को यानी दांव-पेंचों को तय नहीं कर पा रहे हैं।

ठोस परिस्थिति पर आधारित होकर ठोस विश्लेषण करने की बात कॉमरेड लेनिन ने बार-बार कहा था। हमारे अंदर जारी मनोगतवाद की वजह से ठोस विश्लेषण पर नहीं पहुंच पा रहे हैं। उसके साथ-साथ स्वस्फूर्त कार्यपद्धति, उदारतावाद के चलते ठोस परिस्थितियों का अध्ययन करने में एवं किए गए अध्ययन के मुताबिक व्यवहार में बदलाव लाने में विफल हो रहे हैं। इससे आंदोलन में संभावित उतार-चढ़ावों एवं ज्वार-भाटाओं को समझकर अड्वांस, रिट्रीट में सही दांव-पेंचों को सही समय पर नहीं अपनाने की वजह से हम आंदोलन में पिछड़ रहे हैं।

जहां का वहां जनता को संघर्ष के मैदान में उतारने के लिए उपयुक्त नारों को तय करने व संघर्ष, संगठन एवं आंदोलन के रूपों का चयन करने एवं जनता को राजनीतिक तौर पर शिक्षित करने की उपयुक्त तैयारियां नहीं करने के कारण जनता में पर्याप्त राजनीतिक चेतना विकसित नहीं कर पा रहे हैं। संघर्ष और संगठन के उच्चतर रूपों को नहीं अपना सक रहे हैं, जन आंदोलनों को उच्च स्तर में विकसित नहीं हो पा रहे हैं। केंद्रीय एवं राज्य कमेटियों को चाहिए कि वे कार्यनीतिक समस्याओं पर अपनी समझदारी को बढ़ाएं एवं साथ ही निचले स्तर की सभी कमेटियों को भी इस मामले में अवश्य शिक्षित करें।

स. अभिन्न मानसिकता (Oneness)

एकरूपता की समस्या पर विलय के बाद की राजनीतिक सांगठनिक समीक्षा में इस तरह उल्लेखित किया गया था – “एकीकृत पार्टी के विलय की प्रक्रिया हालांकि सफलतापूर्वक पूरी हो गयी थी फिर भी पार्टी में एकरूपता की समस्या है। इसके कारणों को अप्रैल, 2006 की बैठक में पीबी ने चिह्नित किया। संक्षेप में वे हैं : एकीकृत पार्टी के गठन के पश्चात् विगत 18 महीनों में पूर्व की दोनों पार्टियों के सभी स्तरों के कैंडिडेटों के बीच संबंध सकारात्मक रूप से विकसित हुए हैं। कुल मिलाकर एकता की स्फूर्ति निचले स्तर से लेकर पूरी

पार्टी में फैल गयी. फिर भी एकरूपता को हासिल करने में कई ऐतिहासिक, भावनात्मक, आचरण संबंधी मामलों, व्यवहार आदि अन्यान्य कारणों के चलते अभी समस्याएं मौजूद हैं.”

एकता कांग्रेस—9वीं कांग्रेस के सफलतापूर्वक संपन्न होने के बाद भी पार्टी में एकरूपता की समस्या जारी रही. विगत की पार्टियों में पीयू—पीडब्ल्यू का विलय होकर पीडब्ल्यू का गठन हुआ था जबकि एमसीसी, एमएलएम पंजाब व सेकंड सीसी मिलकर एमसीसीआई बनी थी. एकता के पहले पीडब्ल्यू, एमसीसीआई के बीच उद्विक्तता व झड़पें व्याप्त थीं. पार्टियों ने विलय के क्रम में पुरानी उद्विक्तताओं व झड़पों से बाहर आने, आपसी झड़पों को बंद कर गलतियों की तहेदिल से आत्मालोचना की. एनआरबी सहित ईआरबी के 2यू, पश्चिम बंग राज्य की पार्टी में गंभीर अनेकता, गुटबाजी उत्पन्न हुई जिन्होंने पार्टी को असीम क्षति पहुंचायी.

ईआरबी को सभी कार्यों में सामूहिक नेतृत्व के रूप में विकसित करने में जरूरी था, एकीकृत पार्टी की बुनियादी दस्तावेजों सहित पॉलिसी पेपर्स, मा—ले—मा पर ईआरबी का अध्ययन व चर्चा. इसके जरिए, एकीकृत पार्टी की दस्तावेजों में क्या—क्या बदलाव आए हैं, ये बदलाव क्यों किए गए हैं और संश्लेषण के तहत इनमें नवीनता क्या जोड़ी गयी है, इन तमाम विषयों पर यानी नयी पार्टी लाइन पर एक साझी समझदारी हासिल करना अत्यंत आवश्यक था. लेकिन एकीकृत पार्टी लाइन व व्यवहार को लेकर एकरूपता हासिल करने ईआरबी के प्रयास में सीमितताओं की वजह से कुछ कैंडरों में एकता पार्टी द्वारा विकसित नए सोच के विपरीत पुराने सोच और व्यवहार जारी है. इसलिए ईआरबी में जितनी 'वैचारिक एकता' व 'कामकाज में एकता' हासिल करनी थी, असल में उतनी हासिल नहीं कर सके.

एनआरबी के दायरे के सभी राज्यों में एकरूपता की समस्या और भी तीव्र रूप में है. एनआरबी के रद्ध होने के बाद इस एकरूपता की समस्या और भी जटिल हो गयी. इन राज्यों विशेषकर पंजाब में एकीकृत पार्टी के पहले ही पूर्व की पीपुल्सवार पार्टी में भी गंभीर सैद्धांतिक, राजनीतिक अनेकता की समस्या मौजूद थी. एकीकृत पार्टी के गठन के पहले ही एनआरबी के दायरे के लगभग सभी राज्यों में विभिन्न क्रांतिकारी पार्टियां बनी थीं. ये पार्टियां एकता पार्टी में

विलय होने के कारण एकीकृत पार्टी में एकरूपता की समस्या और भी जटिल बन गयी। पंजाब में पार्टी में फूट, दिल्ली में, उत्तराखंड में व्याप्त तीव्र अनेकता व गुटबाजी पार्टी को बेहिसाब हानि पहुंचा रही हैं। इनके साथ ही कुछ व्यक्तियों के दक्षिणपंथी व संकीर्णतावादी रुझानों का शिकार होने की वजह से (उन्होंने पार्टी में विभाजन लाने की वजह से व गुटों में अलग होने की वजह से) पार्टी को गंभीर नुकसान हो रहा है।

भाकपा (माओवादी) और नक्सलबाड़ी पार्टी की एकता के बाद जहां नक्सलबाड़ी पार्टी के इकाइयां मौजूद थी, वहां दस्तावेजों पर आधारित होकर सैद्धांतिक, राजनीतिक व सांगठनिक एकता को पूरा किया गया। तथापि कार्यपद्धति और कुछ पॉलिसियों के मामले में अभी भी सूक्ष्म अंतर (छोटे-मोटे) मतभेद चल रहे हैं। इससे यहां कुछ मामलों में मतभेद पूर्व की पार्टियों के आधार पर उत्पन्न हो रहे हैं। इनका हल करने वहां का नेतृत्व ने निर्णय लिया।

सैद्धांतिक व राजनीतिक स्तर को बढ़ाते हुए, उसके अनुसार वैचारिक एकता के साथ काम करने में सीआरबी के इलाकों की कमेटियों में भी कुछ समस्याएं हैं जिनका हम सामना कर रहे हैं। पार्टी नेतृत्व का पार्टी श्रेणियों के साथ एकताबद्ध होने, समूची पार्टी का जनता के साथ एकताबद्ध होने की माओवादी कार्यशैली पर अमल करने में कई जगहों पर कमजोरी जारी है। खासकर पार्टी में कुछ जगहों पर नेतृत्वकारी कॉमरेडों में नौकरशाही के गलत रुझान सामने आने की वजह से नेतृत्व और निचले स्तर के कॉमरेडों के बीच की एकता को धक्का पहुंचा रही है और पार्टी जनवादी माहौल का हरण कर रही है। पार्टी की लड़ाकू क्षमता को भी धक्का पहुंचा रही है। एक ही राज्य में पार्टी का नेतृत्व करने वाले सीसी सदस्यों के बीच में एकता का अभाव है। आंदोलन पर आकलन, समन्वय, शक्तियों की तैनाती, केंद्रीकरण के मामलों में साझी समझदारी नहीं बना पा रहे हैं। इससे इन मतभेदों का प्रभाव निचले स्तर की कमेटियों पर नकारात्मक रूप से पड़ रहा है और नुकसान पहुंचा रहा है। विभिन्न राज्यों के आंदोलनों में मौजूद कमोबेश की स्थिति, संबंधित आंदोलनों के ऐतिहासिक कारणों एवं वहां के नेतृत्व की भावनाओं, व्यवहार, अनुभवों व बर्ताव में उत्पन्न फर्क की वजह से नेतृत्व के बीच जितनी एकता बननी चाहिए, उतनी नहीं बन पा रही है।

इस तरह एकीकृत पार्टी में विभिन्न स्तरों पर विभिन्न रूपों में एकरूपता की समस्या जारी है।

एकीकृत पार्टी के गठन के साथ ही हमारी पार्टी में उत्पन्न एकरूपता की समस्या पर क्या नीति अपनानी चाहिए थी, इस विषय पर हमारा रुख क्या है? विलय के बाद इन मतभेदों को हल करते हुए, कार्यशैली में एकरूपता हासिल करने का जो निर्णय नेतृत्व द्वारा लिया गया था, वह इसलिए अमल में नहीं आया क्योंकि बहुत जल्द ही केंद्रीय व राज्य स्तर के नेतृत्व को गंभीर नुकसान पहुंचा था और दमन तीव्र हो गया था। पार्टी को भी 'विरोधी तत्वों के बीच एकता' के उसूल लागू होता है। 'एक दो में विभाजित होता है' इस पद्धति से हर विषय का विश्लेषण करना चाहिए। इस नियम के अनुसार पार्टी कमेटियों का कामकाज संचालित करने में तीव्र कमजोरियां मौजूद हैं। इन कमजोरियों से संबंधित समस्या का हल करते समय एकीकृत पार्टी में एकता को महत्व देते हुए कभी-कभी एकता पर ही ज्यादा जोर दिया गया था। गलत विचारों व पद्धतियों की सही व आवश्यक तरीके से आलोचना नहीं की गयी। इस तरह कमजोरियों के पीछे की भौतिक स्थिति या कारण इस प्रकार हैं — पूर्व की पार्टियों के बीच खूनी झड़पों के बाद, वर्तमान में एकीकृत पार्टी के गठन के बाद, शुरुआती वर्षों में ही गलत विचारों व पद्धतियों की उतनी ज्यादा आलोचना नहीं की गयी। एक दूसरे को सही तरीके से समझने एवं पार्टी में पूरी तरह पारदर्शिता के साथ बातचीत करने का माहौल निर्मित होने तक उस तरह की आलोचना नहीं करनी चाहिए। शुरुआती वर्षों में उक्त पद्धति सही ही है। लेकिन बाद में, एकीकृत पार्टी का माहौल प्रधान बन जाने के बाद भी इस तरह की मानसिकता के बने रहने का मतलब है, एक हद तक उदारतावाद का शिकार होना।

क्रांतिकारी आंदोलन में वर्ग संघर्ष के क्रम में पार्टी में विभिन्न स्तरों में, विभिन्न किस्मों में मतभेद व अनेकता सिर उठाते हैं। यदि हम उनकी जड़ों को ठोस रूप से पहचान सकते हैं तो उन अंतरविरोधों को सही ढंग से हल कर सकते हैं। यदि उनसे उदारतावाद के साथ व्यवहार करने से और उनका अवलोकन मनोगतवाद के साथ करते हैं तो वे आखिर जटिल बन जाते हैं। इसलिए इन्हें सुधारना होगा।

हमारी एकीकृत पार्टी में एकरूपता की समस्या के उत्पन्न होने व कायम रहने के कारणों को हमने ऊपर विस्तार से देखा है। पार्टी में एकरूपता हासिल करने के लिए हमें ठोस रूप से यह अवलोकन करना चाहिए कि वह किन-किन समस्याओं द्वारा सामने आयी है और उसकी जड़ें क्या हैं। हमारी पार्टी की राजनीतिक, सैनिक व सांगठनिक लाइन पर आधारित होकर उसका हल निकालना चाहिए। उन पर सैद्धांतिक, राजनीतिक शिक्षा उपलब्ध करानी चाहिए। इस समस्या से पार्टी को हो रही बेहिसाब नुकसान के बारे में बताना चाहिए। इस समस्या में गहरे फंसकर न बदलने वाले कॉमरेडों पर अनुशासनात्मक कार्रवाइयां भी करना होगा। बहुसंख्य कॉमरेडों को जीतने के लिए सूत्रबद्ध तरीके से, धीरज के साथ प्रयास करना होगा। इसके साथ-साथ जहां का वहां कॉमरेडों को स्वयं अपने विचारों को सूधारना होगा। तभी सही मायने में पार्टी में एकरूपता हासिल कर सकते हैं।

द. पार्टी कार्यशैली

पार्टी में क्रांतिकारी मजदूर वर्गीय हितों के आधार पर सभी स्तरों के पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच राजनीतिक समानता जारी रहनी चाहिए। ऊपरी कमेटीयों के प्रस्तावों, आदेशों पर पार्टी श्रेणियों को रचनात्मक राय व्यक्त करनी चाहिए। नेतृत्व की गलतियों पर उंगली उठाना चाहिए। कमजोरियों की आलोचना करनी चाहिए। नेतृत्व को चाहिए कि वह निचले स्तर की पार्टी श्रेणियों को उनके व्यवहार के दौरान मदद व सहयोग पहुंचाते हुए उनकी गलतियों को सुधारने के साथ ही उनका मार्गदर्शन करें। पार्टी कतारों की राय व आलोचनाओं को संयम के साथ सुने। पार्टी अपने तमाम काम में सूत्रबद्ध तरीके से, लचीलापन से लिए जाने वाले दृष्टिकोण को ही नेतृत्व इनके प्रति भी दर्शाएं। अपनी गलतियों पर नजन दौड़ाएं। सही आत्मालोचना करें, गलतियों का सुधारें। तभी पार्टी के अंदर एवं पार्टी व जनता के बीच जनवादी रिश्ते मजबूत होंगे। इन जनवादी रिश्तों की बुनियाद पर आधारित होकर केंद्रीकृत नेतृत्व अमल होती है। केंद्रीकृत नेतृत्व के अमल के द्वारा पार्टी एवं क्रांतिकारी जनता एक ही व्यक्ति व शक्ति बनकर शोषक वर्गों के राज्ययंत्र को ध्वस्त कर क्रांति को विजयी बना सकती है।

नेतृत्व के अपनी कतारों व जनता के साथ एकताबद्ध होने की इस कार्यशैली के मामले में पार्टी में गंभीर खामियां जारी हैं।

ऊपरी कमेटियों के प्रस्तावों को निचली कमेटियों तक उनके सारतत्त्व व विश्लेषण के साथ जोड़कर नहीं ले जाया जा रहा है। इस कारण से प्रस्ताव नीचे में सृजनात्मक ढंग से अमल नहीं हो रहे हैं। अपनी जिम्मेदारी निभाने में स्वस्फूर्तता एवं सतही कामकाज के तरीके का शिकार होकर कॉमरेड्स कर्तव्य निर्वाह में विफल हो रहे हैं। कुछ इलाकों में ऊपरी कमेटियों के प्रस्तावों पर अमल करने की जिम्मेदारी को संबंधित कमेटी कॉमरेड्स स्वयं पर लेने की बजाए उसे निचले स्तर की कमेटियों के कॉमरेडों की जिम्मेदारी के रूप में देख रहे हैं। यह भी मानना है कि पार्टी दस्तावेज और पॉलिसी पेपर्स भी ऊपरी कमेटियों से संबंधित नहीं, बल्कि निचले स्तर के कॉमरेडों के लिए ही हैं। इस समझ का सारांश है, 'मुझे सब कुछ मालूम, फिर से उनका अध्ययन हो या अमल, मैं क्यों?' ऊपरी कमेटी के कॉमरेडों में यह प्रभुत्वकारी विचारधारा अभिव्यक्त हो रही है कि ये सब निचले कॉमरेडों के लिए ही है। कुछ कॉमरेड्स ऊपरी कमेटी के प्रस्तावों को नीचे बताते समय औपचारिक तरीके से बताते हैं। प्रस्तावों को विस्तार से विश्लेषण के साथ बताने की बजाए एक दो शब्दों में बताते हैं। इस पद्धति से असंतुष्ट निचले कॉमरेड्स जब सवाल करते हैं तो उन पर गुस्सा प्रकट करते हैं। कई कॉमरेड्स अपने अनुभव पर आधारित कार्यशैली को जारी रखते हैं। सैद्धांतिक अध्ययन के जरिए अपनी खराब कार्यशैली को बदलने के लिए ये तैयार नहीं होते हैं। कुछ इलाकों में वास्तविक हालत को ध्यान में रखे बिना ही प्रस्ताव की स्फूर्ति को स्वस्फूर्त ढंग से अमल किया जा रहा है। कुछ इलाकों में प्रस्तावों के अमल पर नीचे ध्यान न देने के साथ-साथ ऐसी कार्यशैली अपनायी जा रही है जो उन्हें उचित लगता है।

हम यह जानते हैं कि सर्वहारा पार्टी के लिए अनुशासन व गुप्त कार्यशैली प्राणसमान हैं। कॉमरेड लेनिन ने यह शिक्षा दी कि मजबूत राज्ययंत्र से लैस शोषक-शासक वर्गों से सत्ता को छीनने के वर्ग संघर्ष में जनता का नेतृत्व करने वाली सर्वहारा पार्टी के लिए गुप्त सांगठनिक ढांचा का होना और गोपनीयता पर अमल करना एक मुख्य शर्त के रूप में रहेगा। फिलहाल हमारी पार्टी, पीएलजीए एवं जनता की संगठित ताकत दुश्मन के राज्ययंत्र की ताकत

की तुलना में कमजोर है. ऐसी स्थिति में हमारी आत्मगत ताकत के बढ़ने व दुश्मन को हराने में गुप्त कार्य पद्धति, छापामार युद्ध नियमों व दीर्घकालिक स्वभाव युक्त जनयुद्ध का काफी रणनीतिक महत्व है. इन सैद्धांतिक विषयों को गहराई से समझे बिना अनायास गलतियां कर रहे हैं.

“अत्यंत बुनियादी कार्यपद्धति जिसे सभी कम्युनिस्टों को मजबूती से अपने दिमाग में रखना चाहिए, वह है, वास्तविक परिस्थितियों के मुताबिक हमारे कामकाज की नीतियों को सुनिश्चित करना. जब हम अपनी गलतियों के कारणों का अध्ययन करते हैं तब हम पाते हैं कि वे सारी गलतियां इसलिए उत्पन्न हुई हैं क्योंकि हम स्थान, समय व वास्तविक परिस्थिति से अलग-थलग पड़ चुके थे और कामकाज की नीतियों में मनोगतवादी बन गए थे.” (शान्सी-सुईयुआन मुक्तांचल में कैडरों के सम्मेलन में भाषण-माओ)

हम सामान्य को ठोस से जोड़ने में अक्सर विफल होते हैं. वस्तुगत तौर पर प्रत्येक वस्तु, घटना व विषय — चाहे वह पार्टी संबंधित मामला हो या संघर्ष से संबंधित — हर मामले को दो विरोधी तत्वों के बीच एकता के रूप में देखना चाहिए, उस वस्तु या मामला या घटना के साथ ‘एक दो में विभाजित होने’ की पद्धति को लागू कर, गहराई से विश्लेषण कर उसमें लिप्त दो विरोधी तत्वों का पता लगाना चाहिए, उक्त दो विरोधी तत्वों में से उस समय प्रधान तत्व कौनसा है, अप्रधान या गौण कौनसा है, स्पष्टता पर आना चाहिए. इस —ठोसपन— पर आधारित होकर अपनाए जाने वाले कर्तव्यों पर हमें केंद्रित करना चाहिए. यांत्रिक कार्य पद्धति हमें एक प्रधान समस्या है. इससे उबरना चाहिए. अपनाए जाने वाली कार्यशैली में मुख्य विषय यह है कि फौरी, प्रधान व केंद्रीय कर्तव्यों की पूर्ति के अनुरूप कार्यशैली को बदल रहे हैं या नहीं. यदि हम इसे सुधारते हैं तो आंदोलन के लिए बहुत ही उपयोगी होगा.

ए. नेतृत्व के नुकसानों पर

हमारी दो पार्टियों के विलय के साथ उदित नयी पार्टी भाकपा(माओवादी), उसकी विकसित राजनीतिक, सैनिक, सांगठनिक लाइन, देश के अपेक्षाकृत विशाल भूभाग में राजनीतिक रूप से जनता का गोलबंद होना, उसके नेतृत्व में गठित जन मुक्ति छापामार सेना, बढ़ा हुआ पार्टी प्रभाव, उसकी लड़ाकू

क्षमता, उसके द्वारा हासिल सैनिक जीतों ने शोषक—शासक वर्गों को आतंकित किया।

इस पृष्ठभूमि में भारत के शासक वर्ग खासकर यूपीए-1 के कार्यकाल से हमारी पार्टी को भारत देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए बहुत बड़ा खतरा घोषित करते आ रहे हैं। आंध्र प्रदेश के आंदोलन का दमन करने के अनुभव से लैस दुश्मन आंदोलन के सभी राज्यों में विशेष कमांडो बलों, केंद्र में कोबरा आदि नामों पर विशेष कमांडो बलों एवं सभी राज्यों में व केंद्र में विशेष गुप्तचर विभागों के गठन, सूचनाओं के आदान—प्रदान के जरिए तरह—तरह की पद्धतियों में हमारी पार्टी नेतृत्व को निशाना बनाना जारी रखा हुआ है। यह सब साम्राज्यवादियों विशेषकर अमेरिका साम्राज्यवादियों की देखरेख में संचालित एलआईसी रणनीति के तहत चल रहा है। हमारी पार्टी द्वारा आयोजित एकता कांग्रेस की पीओआर में इन विषयों को लिखा गया है।

केंद्रीय कमेटी द्वारा यदा—कदा उन नुकसानों की समीक्षा करते हुए परिपत्र व पत्र जारी करने के बावजूद नुकसानों का सिलसिला कतई कम नहीं हुआ। आंदोलन कठिन दौर में पहुंचने के लिए यह एक कारण के रूप में खड़ा है। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के गठन के समय से 2007 दिसंबर तक केंद्रीय व राज्य स्तर के 43 कॉमरेड्स गिरफ्तार या शहीद हुए हैं। 2008 से 2011 तक दसियों की संख्या में लगातार केंद्रीय व राज्यों का नेतृत्व गिरफ्तार होकर पार्टी को तीव्र हानि हुई। पिछले 14 सालों में कुल मिलाकर केंद्रीय कमेटी के 16 सदस्य गिरफ्तार हुए। छह कॉमरेड्स झूठी मुठभेड़ों में शहीद हुए। एससी/एसजडसी/एससी कॉमरेड्स बड़ी संख्या में सभी राज्यों में गिरफ्तार हुए। बीजे सैक में तो सम्मेलन में चुने गए आधे से ज्यादा सैक सदस्य गिरफ्तार हुए।

पार्टी के उच्च स्तर के नेतृत्व के साथ विभिन्न स्तरों में आत्मगत शक्तियों को भारी संख्या में खोने की वजह से कई राज्यों में कमेटियां, कमांड्स, विभिन्न विभाग काफी हद तक ध्वस्त हो गए या उल्लखनीय स्तर पर प्रभावित हुए हैं। उत्तर रीजनल ब्यूरो, दक्षिण—पश्चिम ब्यूरो करीब—करीब पूरी तरह ध्वस्त हो गए। नेतृत्वकारी शक्तियों को खोने के फलस्वरूप प्राथमिक स्तर पर जारी ये आंदोलन और कमजोर हो गए। कुछ इलाकों को लगभग पूरी तरह

छोड़ना पड़ा.

कॉमरेड लनिन ने बहुत स्पष्ट तौर पर कहा था कि क्रांतिकारी पार्टी के बिना क्रांति नहीं होती है. उन्होंने नेतृत्व के महत्व के बारे में और उसकी निरंतरता के महत्व के बारे में स्पष्ट रूप से बताया. उसी तरह उन्होंने हमेशा गुप्त पार्टी एवं दुश्मन के हमले से बचते हुए पार्टी के नेतृत्व में जनता द्वारा संचालित जुझारू संघर्षों के महत्व के बारे में भी बताया. इस पर अमल करने में हमसे कई गलतियां हुई. इन गलतियों का फायदा उठाकर दुश्मन ने हमारी नेतृत्वकारी ताकतों को चुन-चुनकर धक्का पहुंचाया. इसी सोच के साथ कि पार्टी विशेषकर नेतृत्व को नुकसान पहुंचाकर ही लक्ष्य पूर्ति हो सकती है, दुश्मन ने चौतरफा हमले को तेज किया.

हमारी पार्टी के जिन नेतृत्वकारी कैडरों को क्रांतिकारी आंदोलन ने खोया है, वे विभिन्न क्षेत्रों में विशेष अनुभव से लैस थे. वे काफी लंबे समय से क्रांतिकारी आंदोलन के सामने उत्पन्न ज्वार-भाटाओं में मजबूत होकर दृढ़तापूर्वक डटे हुए थे. फिर भी क्रांतिकारी आंदोलन पर दुश्मन द्वारा जारी हमलों की तीव्रता, उसके दांव-पेंचों को समझने में एवं मौजूदा स्रोतों के साथ ही उपयुक्त तरीके में उसके साथ व्यवहार करने में विफल होकर भारी कीमत चुकायी. इस प्रधान राजनीतिक कमजोरी के साथ व्यक्तिगत कमजोरियों के जुड़ने के कारण ढीलापन के साथ पारिवारिक रिश्तों को जारी रखना, आंदोलन जिन इलाकों में ध्वस्त हुआ उन इलाकों के परिचित व्यक्तियों के साथ संबंध जारी रखना, गुप्त कामकाज की जगह खुली कार्य पद्धतियों का पालन करना, शहरों को केंद्र बनाकर देहाती आंदोलन का मार्गदर्शन करना, आधुनिक तकनीकी का मनमर्जी ढंग से इस्तेमाल करना, क्रांतिकारी आंदोलन में खुले तौर पर कार्य करने वाले व्यक्तियों के साथ गोपनीय तरीकों की जगह ढीलापन के साथ संबंध जारी रखना, कानूनी – गैर कानूनी कार्यों के लिए एक ही गोपनीय मशीनरी का उपयोग करना, स्वस्फूर्त कार्यशैली, अनुशासनहीनता आदि कारणों से होनेवाले नुकसान ज्यादा ही हैं. गुप्त क्रांतिकारी पार्टी की कार्यशैली के महत्व व क्रांतिकारी आंदोलन के विभिन्न क्षेत्रों के लिए गठित की जाने वाली गुप्त मशीनरी की आवश्यकता को पहचानकर, उसके अनुरूप अपने कार्यचरण में व्याप्त खामियों को सुधारते हुए नेतृत्व प्रदान करने के हिसाब से

क्रांतिकारी आंदोलन का नेतृत्व करने वाली सभी स्तरों की कमेटियों एवं समूची पार्टी द्वारा कार्य कराने में हमारी केंद्रीय कमेटी विफल हुई है। इस प्रधान राजनीतिक कमजोरी के साथ व्यक्तिगत कमजोरियों के जुड़ने के कारण ढीलापन के साथ पारिवारिक रिश्तों को जारी रखना, आंदोलन जिन इलाकों में ध्वस्त हुआ उन इलाकों के परिचित व्यक्तियों के साथ संबंध जारी रखना, गुप्त कामकाज की जगह खुली कार्य पद्धतियों का पालन करना, शहरों को केंद्र बनाकर देहाती आंदोलन का मार्गदर्शन करना, आधुनिक तकनीकी का मनमर्जी ढंग से इस्तेमाल करना, क्रांतिकारी आंदोलन में खुले तौर पर कार्य करने वाले व्यक्तियों के साथ गोपनीय तरीकों की जगह ढीलापन के साथ संबंध जारी रखना, कानूनी — गैर कानूनी कार्यों के लिए एक ही गोपनीय मशीनरी का उपयोग करना, स्वस्फूर्त कार्यशैली, अनुशासनहीनता आदि कारणों से होनेवाले नुकसान ज्यादा ही हैं।

इन नुकसानों के मुख्य कारण

1. जनयुद्ध के विकास, तेज होते दुश्मन के हमले के मुताबिक केंद्रीय कमेटी स्वयं को, समूची पार्टी को मजबूत करने में, उसके लिए उपयुक्त मशीनरी का निर्माण कर, समुचित कार्य पद्धति को तय करके व सही समय पर निर्णय लेकर अमल करने में गंभीर गलतियां व कमजोरियां जारी है।
2. नेतृत्वकारी कमेटियों व सदस्यों की ओर से मनोगतवाद, उदारतावाद, स्वस्फूर्तता, व्यक्तिवाद के कारण स्वयं के बनाए गए टेक सर्कुलर्स व नियमों का पालन करने में, हालात में उत्पन्न बदलावों के मुताबिक उपयुक्त कार्यपद्धति बनाकर अमल करने में विफलता के फलस्वरूप बहुत गंभीर नुकसान हुए। व्यक्तिगत कमजोरियों ने भी ज्यादा नुकसान पहुंचाए।
3. कुछ कामरेडो ने व्यावसायिकता एवं क्रांतिकारी तैयारी के अभाव के नतीजे में एक तरफ जनयुद्ध का नेतृत्व करते हुए ही दूसरी ओर पारिवारिक रिश्ते नातों को महत्व देते आया। इस कारण से हमारी पार्टी के सभी स्तरों प्रधानतया केंद्रीय व राज्य स्तरों के कई कॉमरेडों को दुश्मन पकड़ सका या खत्म कर सका।

4. बनाए गए टेक नियमों के विपरीत, अविवेकपूर्ण तरीके से तकनीकी का उपयोग करने के नतीजे में कई कॉमरेड्स दुश्मन के हाथ लग गए. कई संदर्भों में एक की गिरफ्तारी ने और कड़ियों की गिरफ्तारी का रास्ता बनाया. इस गलती की वजह से हमने उल्लेखनीय संख्या में नेतृत्व को खोया.
5. अनुशासन पर अमल करने व कराने के मामले में पार्टी की नेतृत्वकारी कमेटियों का उदारतावाद के साथ रहना भी हमारे नुकसानों का एक मुख्य कारण है.
6. बदलती परिस्थितियों के अनुसार अपने आप को ढालने में विफल होकर यथेच्छापूर्वक काम करना और खुला कामकाज की तरफ बह जाने की वजह से भी बहुत नुकसान हुए.

फ. उत्पादन संबंध-अध्ययन

साम्राज्यवादी वैश्वीकरण के शुरू होने के बाद विश्व के देश, विशेषकर पिछड़े देशों के उत्पादन संबंधों में कई बदलाव हुए। उसी तरह हमारा देश में भी बदलाव हुए. इसके बारे में अध्ययन करने के लिए हमारी पार्टी ने कांग्रेस के समय पंजाब राज्य में उत्पादन संबंधों में आए बदलावों का अध्ययन किया था और उन बदलावों पर कांग्रेस एक आकलन पर पहुंची. उसके बाद इन 14 सालों की समयावधि में हमने आंध्रप्रदेश में उत्पादन संबंधों का अध्ययन किया. उसके बाद अन्य राज्यों में भी अध्ययन कार्य अपनाया गया. फरवरी 2020 में केंद्रीय कमेटी के पोलित ब्यूरो ने 'भारत देश में उत्पादन संबंधों में बदलाव' पर मसविदा दस्तावेज बनाकर तमाम केंद्रीय कमेटी सदस्यों के पास भेज दिया. इस मसविदा दस्तावेज को केंद्रीय कमेटी के सदस्य अध्ययन कर, छठवीं धारावाहिक बैठक में उसपर गहराई से चर्चा की. इस बैठक ने दस्तावेज में जो विषय बताए गए उसकी पक्ष में निर्धारण किया कि देश की सामाजिक व्यवस्था (अर्धऔपनिवेशिक और अर्धसामंती व्यवस्था) में उल्लेखनीय बदलाव होने के बावजूद, कोई मौलिक नहीं आया. किंतु इसके बारे में विश्लेषण किया कि साम्राज्यवादियों और भारत के शासक वर्गों के हितों के अनुसार अर्थव्यवस्था में हुए उल्लेखनीय मात्रात्मक बदलाव सामाजिक संबंधों पर मजबूत प्रभाव डाले

हैं, मुख्यतया अर्धसामंती व्यवस्था अपेक्षाकृत कमजोर हुई है, विकृत पूंजीवादी संबंधों में अपेक्षाकृत वृद्धि हुई है। इसके अलावा, उसने जोर देकर कहा कि वे बदलाव भारत देश की अर्धऔपनिवेशिक और अर्धसामंती सामाजिक व्यवस्था का असमान विकास का चरित्र के अनुसार ही हुए हैं। और आगे बढ़कर यह बताते हुए दस्तावेज को अंतिम रूप दे दिया कि ठोस रूप से पूंजीवादी देशों की तरह भारत देश में औद्योगिक विकास नहीं हुआ, वर्तमान में देश में हो रहे तमाम 'विकास' व 'वृद्धि' साम्राज्यवादियों के आयातों पर निर्भर हुए विनिमय चरित्र वाले हैं। इस दस्तावेज ने राजनीतिक कार्यक्रम और राजनीतिक कार्यनीतिक नारे बनायी। इस दस्तावेज पर आधारित होकर जहां-तहां ठोस परिस्थितियों पर निर्भर होकर सही कार्यनीति बनाकर देश के व्यापक मैदानी व शहरी इलाकों समेत रणनीतिक इलाकों में भी आंदोलन को मजबूत करना चाहिए।

ग. इंटरनेशनल कार्य पर प्रतिवेदन-कर्तव्य

एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस ने जो कर्तव्य तय किए उन्हें ध्यान में रखकर केंद्रीय कमेटी ने अंतर्राष्ट्रीय कार्य से संबंधित ठोस कर्तव्य बनाकर अमल करने की कोशिश की। तथापि विगत 14 सालों के दौरान देश के क्रांतिकारी आंदोलन ने जिन ज्वार-भाटाओं का सामना किया उनका असर पार्टी अपने अंतर्राष्ट्रीय कर्तव्यों को निभाने पर भी स्पष्ट रूप से दिख रहा है। विश्व समाजवादी क्रांति की दो धाराओं - अर्ध औपनिवेशिक व अर्ध सामंती देशों की जनवादी क्रांतियों एवं पूंजीवादी/साम्राज्यवादी देशों की सर्वहारा क्रांतियों को सफल बनाकर, दुनिया में समाजवाद-साम्यवाद स्थापित करने के अंतर्राष्ट्रीय कार्य से संबंधित चार मुख्य कर्तव्य तय किए गए थे। वे हैं: 1. विभिन्न देशों की माओवादी पार्टियों-शक्तियों के साथ संबंध जारी रखना चाहिए, व्यापक बनाना चाहिए। द्विपक्षीय व बहुपक्षीय बैठकें आयोजित करनी चाहिए। इनके बीच में मजबूत एकता बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। सर्वहारा के क्रांतिकारी शिविर की सकारात्मक शक्तियों को सही माओवादी लाइन की ओर लाने की कोशिश करनी चाहिए। एमएलएम को ऊंचा उठाना चाहिए, उसका प्रचार करना चाहिए। विभिन्न किस्म के संशोधनवादी रुझानों के खिलाफ संघर्ष करना चाहिए। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर, बुर्जुआ तथा संशोधनवादी सैद्धांतिक

रुझानों के खिलाफ संयुक्त वक्तव्य जारी करना चाहिए. क्रांतिकारी आंदोलनों के अनुभवों को आपस में साझा करते हुए उनके सकारात्मक अनुभवों से सीखना चाहिए. अंतर्राष्ट्रीय स्तर के राजनीतिक बहस-मुबाहिसों में शामिल होना चाहिए. सही माओवादी पार्टियों-शक्तियों के साथ समन्वय हासिल करते हुए एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मंच का निर्माण करने का प्रयास करना चाहिए; 2. साम्राज्यवादविरोधी अंतर्राष्ट्रीय जन आंदोलनों व जन संस्थाओं का गठन कर, उन्हें मजबूत करते हुए, इस तरह के आंदोलनों के साथ एकताबद्ध होते हुए, उन्हें विकसित करते हुए उनका समन्वय करना चाहिए; 3. भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के समर्थन में विभिन्न देशों में रह रहे भारतीय मूल के लोगों विशेषकर श्रमजीवियों, बुद्धिजीवियों को संगठित करना चाहिए; 4. भारत की क्रांति के लिए अंतर्राष्ट्रीय मदद हासिल करनी चाहिए. विभिन्न देशों के क्रांतिकारी आंदोलनों व साम्राज्यवादविरोधी आंदोलनों के प्रति भाईचारे के साथ खड़ा होना चाहिए.

उक्त कर्तव्य निभाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय कार्य को मार्गदर्शन देने हमने एक अंतर्राष्ट्रीय विभाग का गठन किया था. 8-10 देशों की माओवादी पार्टियों के साथ नजदीकी संबंध जारी रखे थे. भागीदार पार्टियों के साथ मिलकर सिकंपोसा के चार सीकंपोसा कन्वेन्शंस आयोजित किए. कंपोसा ने कुछ कार्यक्रम आयोजित किए. विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर क्रांतिकारी पार्टियों-संस्थाओं के साथ मिलकर संयुक्त वक्तव्य जारी किए. कुछ अंतर्राष्ट्रीय बैठकों में हमारे प्रतिनिधि शामिल हुए. हमारी पार्टी के नेतृत्व वाली कुछ जन संस्थाओं ने कुछ साम्राज्यवादविरोधी संस्थाओं के साथ मिलकर एकताबद्ध प्रयास किया. फिलिपीन्स क्रांति के समर्थन में हमारी पार्टी ने भाईचारा सप्ताह मनाया. पूर्वोत्तर की राष्ट्रीयताओं के संघर्षों के प्रति समर्थन प्रकट करने के अलावा आरपीएफ के साथ मजबूत रिश्ते बनाए. सीसी की दूसरी बैठक (दिसंबर 2007) में अंतर्राष्ट्रीय कार्य से संबंधित मार्गदर्शक नियम बनाए गए. असली माओवादी पार्टियों व शक्तियों के साथ एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन के गठन पर हमारा रुख व्यक्त करते हुए दस्तावेज को मार्च, 2017 में हमने जारी किया. मिलन सम्मेलन के लिए संदेश भेजा. भारत के क्रांतिकारी आंदोलन पर साम्राज्यवादियों विशेषकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों की मदद से प्रतिक्रांतिकारी

शासक वर्गों द्वारा अमल किए गए ऑपरेशन ग्रीनहंट के खिलाफ दुनिया के लगभग 30 माओवादी पार्टियों व मजदूर वर्ग की संस्थाओं ने निंदा आंदोलनों का निर्माण किया। भारत में जारी जनयुद्ध के समर्थन में एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था का भी गठन किया। इसके जरिए वे विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर रही हैं। यह आंदोलन हाल के समय के अंतर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग के आंदोलन में अत्यंत महत्व रखने वाले आंदोलनों में से एक बना रहेगा। इस संस्था ने भारत के क्रांतिकारी आंदोलन से संबंधित सूचनाओं, दस्तावेजों, बयानों आदि को सहेज कर रखने के लिए एक इंटरनेट ब्लॉग भी खोला है। इस आंदोलन में शामिल कुछ संस्थाओं पर उन देशों की सरकारें दमन लागू कर रही हैं। इस आंदोलन को रुकवाने साम्राज्यावादियों की पिट्टू नरेंद्र मोदी सरकार तीव्र प्रयास कर रही है। भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के समर्थन में फिलिपीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने भाईचारा माह का आयोजन किया था।

प्रचंड-भट्टाराय के गद्दार गुट के नेतृत्व में सीपीएन(एम) द्वारा संशोधनवादी लाइन अपनाने के चलते सिकंपोसा 2008 तक करीब-करीब नाकाम हो गयी। उसके बाद यद्यपि 2011 के प्रारंभ तक सिकंपोसा अस्तित्व में रही लेकिन हमारी केंद्रीय कमेटी को हुए नुकसानों एवं सीपीएन(एम) में मौजूद सकारात्मक शक्तियों के अलग होने की वजह से वह पूरी तरह रुक गयी। हमारी पार्टी ने कट्टर आधुनिक संशोधनवादी प्रचंड-भट्टाराय के गद्दार गुट द्वारा सामने लाई गई गलत लाइन के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग की क्रांतिकारी लाइन को ऊंचा उठाते हुए सैद्धांतिक, राजनीतिक दस्तावेज जारी करने के साथ ही विभिन्न रूपों में संघर्ष किया। 2009 तक अपने आंतरिक मतभेदों व कमजोरियों के चलते रिम नाकाम हो गया था। आरसीपी (यूएस) 'न्यू सिंथेसिस' के नाम पर अवसरवादी लाइन को सामने लायी जबकि रिम में बची हुई संस्थाएं अपने-अपने देशों में क्रांतिकारी आंदोलन के निर्माण के लिए प्रयास करते हुए ही अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी संस्था के निर्माण के लिए फिर से गोलबंद हो रही हैं। ये पार्टियां भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के प्रति भाईचारा आंदोलन में मुख्य भूमिका निभा रही हैं। जिस तरह दुश्मन ने देश भर में हमारी पार्टी नेतृत्व को नुकसान पहुंचाया, उसी तरह इस दौरान पूर्वोत्तर की राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों की संस्थाओं – आरपीएफ, एमएनएलएफ, उल्फा के नेतृत्व

को भी बहुत ज्यादा नुकसान पहुंचाया। इन संस्थाओं के साथ मिलकर जिस संयुक्त मोर्चे के गठन के बारे में हमारी पार्टी ने सोचा था, उस योजना को इससे धक्का लगा। हमारे इंटरनेशनल विभाग के कॉमरेडों की गिरफ्तारी एवं इस विभाग का पुनर्निर्माण करने की स्थिति के अभाव की वजह से 2009 की आखिरी से खासकर 2011 के आरंभ से हम योजनाबद्ध तरीके से एवं पहलकदमी के साथ अंतर्राष्ट्रीय कार्य नहीं कर पा रहे हैं। तथापि इसी समयावधि में अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हमारी पार्टी की ओर से एक प्रमुख भूमिका निभाने की आवश्यकता और भी बढ़ने के बावजूद भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के सामने उत्पन्न प्रतिकूलताओं के कारण वैसा नहीं कर सके।

विश्व समाजवादी क्रांति के अभिन्न अंग के रूप में जारी भारत की नवजनवादी क्रांति की विजय को हासिल करने हमारी पार्टी को सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीय कर्तव्यों को सफलतापूर्वक निभाने, इस क्षेत्र में हमें हासिल मूल्यवान अनुभवों की रोशनी में दृढसंकल्प के साथ कार्य करने की जरूरत है। महान शिक्षक कॉमरेड लेनिन ने जैसा कहा, सही अंतर्राष्ट्रीय लाइन अपने स्वयं के देश में क्रांति के कर्तव्यों का निर्वाह करने व इस तरह के कर्तव्यों को निभाने वाले विभिन्न देशों की पार्टियों का समर्थन करने पर निर्भर होती है। इसे ध्यान में रखकर अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्गीय क्रांति की लाइन को हमारे देश व दुनिया की ठोस हालत के साथ सृजनात्मक ढंग से लागू करते हुए, व्यवहार से सीखते हुए, गलतियों व खामियों को सुधारेंगे। दिन-ब-दिन दुनिया भर में क्रांति के ज्यादा से ज्यादा अनुकूल बनती परिस्थितियों में अंतर्राष्ट्रीय कार्य को सक्षम ढंग से जारी रखने के लिए रणनीतिक नजरिए से मजबूत अंतर्राष्ट्रीय विभाग का गठन करने एवं दुश्मन द्वारा लगातार जारी प्रतिक्रांतिकारी हमलों से बचते हुए आगे बढ़ने लायक उपयुक्त कार्यपद्धतियों को तय करने का तात्कालिक कर्तव्य हमारे सामने है। सिर्फ इस तरह ही उपरोक्त चार कर्तव्यों को सफलतापूर्वक अमल कर सकते हैं। इस हेतु सर्वहारा वर्गीय दृढ संकल्प के साथ आगे बढ़ेंगे।

ह. पार्टी शिक्षा

सीसी ने कांग्रेस के दौरान यह चिह्नित किया कि उसे अपनी सैद्धांतिक, राजनीतिक स्तर व सांगठनिक क्षमताओं को विकसित करना चाहिए. उसी तरह रणनीतिक नेतृत्व को अपने अध्ययन को बढ़ाकर जहां के वहां व्यवहार के साथ सिद्धांत को सृजनात्मक ढंग से लागू करने में कुशल बनने की बहुत ही आवश्यकता है. इस जरूरत को पूरा करने के लिए पीबी ने 2008 में ठोस योजना बनायी थी. आंदोलन के प्रधान इलाकों (पूर्वी व मध्य रीजन) को आधार बनाकर दो प्रांतीय राजनीतिक पाठशालाओं का गठन करने का निर्णय लिया. उस निर्णय के मुताबिक दोनों प्रांतों के लिए सीसी/पीबीएम के नेतृत्व में शिक्षकों को उपलब्ध कराया. लेकिन पूर्वी रीजन में हुए नुकसानों के कारण प्रांतीय पाठशाला जल्द ही ध्वस्त हो गयी. केवल मध्य रीजन में अंशकालीन शिक्षकों के साथ प्रारंभ पाठशाला इस एक दशक के समय में पूर्णकालीन शिक्षकों को हासिल कर प्रधानतया डीवीसी और उसके ऊपरी स्तर के नेतृत्वकारी शक्तियों को अध्यापन कर रही है.

चयनित विषयों के साथ-साथ पार्टी की बुनियादी व अन्य दस्तावेजों एवं पॉलिसी पेपर्स पर राजनीतिक कक्षाएं संचालित कर रही है. तथापि बीच में (2010-16) डीके स्पेशल जोन नेतृत्व के लिए राजनीतिक कक्षाएं आयोजित नहीं कर पाए. दरअसल यही अत्यंत महत्वपूर्ण समय था. यह वही समय था जब आंदोलन कठिन दौर में पहुंचकर कैडरों में गैर-सर्वहारा रुझान काफी बढ़ गए और कुछ उच्च स्तर के नेतृत्वकारी ताकतें जो कमजोर थी, क्रांतिकारी आंदोलन पर से विश्वास खोकर अधःपतित हुई थी. इनके आत्मसमर्पण, अनैतिक व्यवहार ने पार्टी व आंदोलन पर काफी नकारात्मक प्रभाव डाला. कैडरों को शिक्षित करने में हुई खामी को पहचानकर सीसी ने सुधारने की कोशिश जारी रखा. पूर्वी रीजियन में शिक्षा में हुई कमी को पहचान कर सीसी ने वहां के जरूरी पाठ्यक्रम को 2016 में ही बनाया. पार्टी की कैडर पॉलिसी के अनुसार कैडरों का श्रेणीकरण कर विभिन्न स्तरों के मुताबिक शिक्षा देने अप्रैल 2019 में सीसी ने सिलबस बनाकर एक सर्कुलर जारी किया.

दक्षिण, पश्चिम रीजनों के राज्यों के आंदोलन प्राथमिक तौर पर लाल प्रतिरोध इलाकों के स्तर से उबर नहीं पाने की वजह से वहां के ब्यूरो ने राज्यों

की नेतृत्वकारी शक्तियों की बैठक कर सिद्धांत की रोशनी में आंदोलन की समस्याओं, उनके कारणों व अनुभवों की में चर्चा की। इसे एलटीपी (लीडरशिप ट्रेनिंग प्रोग्राम) नाम दिया गया। उक्त बैठक के आकलन की रोशनी में राज्यों के आंदोलनों को विकसित करने का निर्णय लिया गया। उस अध्ययन के विषयों को संबंधित राज्यों में निचले स्तर तक ले जाकर आंदोलन की समस्याओं पर चर्चा की गयी। उस पर आधारित होकर तमाम स्तरों में पार्टी की सैद्धांतिक व राजनीतिक स्तर बढ़ाने के लिए स्कोप नोट्स पर और मिलिटरी मामलों पर कक्षाएं चलाए। उसके बाद भी अलग-अलग रूप से कई कक्षाएं हुईं। प्रधानतया केंद्र व राज्य कमेटियों के कामरेडों के गिरफ्तारियों के चलते एलटीपी कक्षाएं रुक गयीं। पुनर्निर्मित हो रहे ब्यूरो को चाहिए कि वह उन्हें फिर से शुरू करें व जारी रखे।

कुल मिलाकर, पार्टी में सैद्धांतिक अध्ययन, कक्षाएं, बोल्शेवीकरण, एल.टी.पी., फील्ड ट्रेनिंग जैसे कार्यक्रमों के जरिए पार्टी श्रेणियों के राजनीतिक स्तर को कुछ हद तक बढ़ाया गया। वर्ष 2018 व 2019 में चलाए गए अंतरराष्ट्रीय महत्व वाले 4 वर्षगांठों के अवसर पर पार्टी द्वारा जारी किए गए संदेशों और लेखों, पत्रिकाओं के विशेष अंकों के जरिए पार्टी में और जनता में विश्व और हमारा देश के क्रांतिकारी आंदोलनों के इतिहास से संबंधित समझदारी देकर उन्हें चेतनाबद्ध किया गया।

किंतु समूची पार्टी में नेतृत्वकारी शक्तियों के सैद्धांतिक राजनीतिक स्तर को बढ़ाने व गैर-सर्वहारा रुझानों को सुधारने की बहुत जरूरत है। इसके अभाव में, कुछ राज्यों, कुछ लोगों में पार्टी लाइन के प्रति गड़बड़ी उत्पन्न हो रही है। विभिन्न क्रांतिकारी गुप्तों से एकता पार्टी में शामिल होने की वजह से नेतृत्वकारी कैडरों में पार्टी की बुनियादी दस्तावेजों व व्यवहार पर स्पष्टता के अभाव के चलते पार्टी में अनेकता की समस्या मजबूती से सामने आ रही है। आज की ऐसी स्थिति में जहां दुश्मन हमारी पार्टी को समूल उन्मूलन की बड़ी रणनीति के साथ सफाए के हमलें अभूतपूर्व ढंग से तेज कर रहा है, इस परिप्रेक्ष्य में कारगर ढंग से बिना किसी ढुल-मुलपन के, दृढ़ता से उसका मुकाबला करने लायक नेतृत्वकारी शक्तियों को सैद्धांतिक, राजनीतिक तौर पर तैयार होना है, तो राजनीतिक शिक्षा की आवश्यकता काफी है।

इ. फौरी, प्रधान व केंद्रीय कर्तव्य—उन पर अमल

एकता कांग्रेस—9वीं कांग्रेस में पार्टी द्वारा अपनाए गए फौरी, प्रधान व केंद्रीय कर्तव्यों के अमल पर केंद्रीय कमेटी एवं अन्य कमेटियों ने केंद्रित किया। एकीकृत पार्टी के गठन के बाद आंदोलन में हासिल किए गए सकारात्मक विषयों को आगे ले जाने के लिए पार्टी ने प्रयास किया। तथापि दीर्घकाल से पार्टी का पीछा करते आ रहे नकारात्मक विषयों को ध्यान में रखकर उन्हें दूर करने के लिए पर्याप्त कोशिश नहीं हुई। उससे कांग्रेस के बाद के पांच साल तक आंदोलन प्रगति पर था जबकि बाद के समय में कठिन स्थिति में पहुंचकर आज अस्थायी पीछेहट की स्थिति में पहुंच गया है।

एकीकृत पार्टी के गठन के बाद 16 राज्यों में पार्टी का कामकाज जारी था और उसने अखिल भारतीय स्वभाव अख्तियार किया था। पार्टी अपेक्षाकृत मात्रात्मक और गुणात्मक तौर पर मजबूत हुई। केंद्रीय कमेटी, एसएसी/एसजडसी/एससी मजबूत हुई। पार्टी ने अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा पार्टियों के बीच अपनी पहचान बनायी। देश में शासक वर्गों की जगह बतौर एक वैकल्पिक राजनीतिक ताकत, जनता का विश्वास हासिल किया। पीएलजीए मजबूत होकर सैनिक क्षेत्र में बड़ी जीतें प्राप्त करने में मदद मिली। छापामार युद्ध में चलायमान युद्ध लक्षण वाले कुछ कार्यवाहियों को अंजाम देकर दुश्मन को बड़े पैमाने पर हमने खत्म किया। आधार इलाकों की प्रक्रिया में छापामार आधारों (गुरिल्ला बेसों) व जनता की राज्यसत्ता के संगठनों के निर्माण में आगे कदम बढ़ाया। डिविजन स्तर पर जनराज्यसत्ता के संगठनों को संचालित करने का अनुभव हासिल किया। इस रणनीतिक संयुक्त मोर्चे को विकसित करने के साथ-साथ कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चे में भी एक हद तक प्रगति हासिल की। पार्टी द्वारा सैनिक क्षेत्र व जन निर्माण के क्षेत्र में किए गए कार्य की वजह से कांग्रेस में तय कर्तव्यों की पूर्ति की दिशा में आगे कदम बढ़ाया। दंडकारण्य, बिहार—झारखंड को मुक्तांचल बनाने के केंद्रीय कर्तव्य के साथ आगे बढ़ें। हमारी पार्टी द्वारा मुक्तांचलों के निर्माण के लिए जारी प्रयास में जो जीतें हमने इस दौरान प्राप्त की, वे एक मील का पत्थर बनी रहेंगी। हम यह कह सकते हैं कि हमारे देश की ठोस परिस्थितियों में दीर्घकालिक जनयुद्ध की लाइन को ठोस रूप से लागू करने में हमने कुछ प्रगति हासिल की। सैनिक क्षेत्र एवं

रणनीतिक संयुक्त मोर्चा में हमारी जीतें उसके उदाहरण हैं। बेशक, हम यह कह सकते हैं कि भविष्य में और भी महान जीतों को प्राप्त करने में ये अनुभव उपयोगी होंगे।

उसी समय में विभिन्न राज्यों में क्रांतिकारी आंदोलन धक्का खाता आया। यह क्रम कुछ राज्यों में पहली समयावधि (2007–2011) से प्रारंभ हुआ था। नेतृत्व की गिरफ्तारियों के कारण एनआरबी, दक्षिण–पश्चिम आरबी नाकाम हो गये थे। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को जारी नहीं रख सकें। शहरों व मैदानों में पार्टी नष्ट हुई। दुश्मन ने 2009 में जो 'आल आउट वार' – ऑपरेशन ग्रीनहंट प्रारंभ किया था, उस फासीवादी दमन में हमारी आत्मगत ताकतों के नुकसान बढ़ गए। जन आंदोलन कमजोर होते आए। हमारे जन संगठन ध्वस्त होकर जनाधार का कमजोर होना प्रारंभ हुआ। पीएलजीए की संख्या कम होती आयी और उसकी गुणवत्ता में बदलाव नहीं ला सके। दुश्मन ने हमारी तैयारियों व आपूर्ति विभाग को ध्वस्त किया। हमारे गुप्तचर विभाग को और अन्य विभागों को तीव्र नुकसान पहुंचाया। बिहार–झारखंड में आंदोलन धक्के की स्थिति (अस्थायी रूप से पीछेहट की स्थिति) में पहुंच गया। डीके में आंदोलन जो पहले कठिन स्थिति में पहुंच गया था, आज भाटे की स्थिति में पहुंच गया।

हमारी पार्टी में और क्रांतिकारी आंदोलन में 2007 से 2011 तक पांच साल के समय तक सकारात्मक पहलू (positives) थे, आंदोलन में अनुकूलताएं हॉवीं थे, भारत के क्रांतिकारी आंदोलन आगे बढ़ने की स्थिति में थी। किंतु पार्टी विलय के समय से ही हमारी पार्टी में जारी गैरसर्वहारा रूझानों और अन्य कमजोरियों को सुधार नहीं पाने और कुछ गलतियों की वजह से 2007 से ही नुकसान जारी थे। वे नुकसान एक-एक कर बढ़ते हुए 2012 तक अनुकूलताएं कम हो गए, क्रांतिकारी आंदोलन में प्रतिकूलताएं प्रधान पहलू बन गए। फलस्वरूप 2012 तक अखिल भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन कठिन दौर में चला गया। इस कठिन से उबरने के लिए हमने पिछले 9 साल से जो राजनीतिक, सैनिक और सांगठनिक प्रयास किए हैं, उसमें कुछ सकारात्मक परिणाम होने के बावजूद, दुश्मन के हमल की तीव्रता और हमारी आत्मगत कमजोरियों की वजह से हमें कठिन दौर से उबर नहीं पाए। ऐसी स्थिति में प्रतिक्रांतिकारी 'समाधान' हमले के साथ परिस्थिति और प्रतिकूल बन गयी,

आज हमारा भारत के क्रांतिकारी आंदोलन अस्थायी पीछेहट स्थिति में चली गयी.

हालांकि देशव्यापी क्रांतिकारी आंदोलन कुल मिलाकर अस्थायी पीछेहट की स्थिति में पहुंचने के लिए वस्तुगत परिस्थितियों समेत हमारा आत्मगत प्रयास में कमी—कमजोरी व सीमितताएं भी कारण के रूप में रहे हैं, लेकिन सभी राज्यों में आंदोलन की स्थिति एक समान नहीं है. अलग—अलग राज्यों/स्पेशल एरियाओं/स्पेशल जोनों में मौजूद अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थितियों के साथ—साथ देश भर के विभिन्न राज्यों में व्याप्त आंदोलन के हालात का ठोस आकलन करने के जरिए ही अनुकूलताओं के आधार पर प्रतिकूलताओं को पार करते हुए आंदोलन को अग्रगति में ले जाने लायक कार्यनीति बना सकते हैं.

वस्तुगत स्थिति

2004 में जब से भाकपा (माओवादी) का गठन हुआ तब से केंद्र, राज्य सरकारों द्वारा एलआईसी रणनीति अपनाकर देश भर में क्रांतिकारी आंदोलन पर अविराम संचालित बहुआयामी हमले बढ़ रहे हैं. दुश्मन द्वारा 2010 के मध्य तक क्रांतिकारी आंदोलन के उन्मूलन के लिए तीन से साढ़े तीन लाख पुलिस, अर्ध—सैनिक व कमांडो बलों को तैनात किया गया था जबकि आज वह संख्या छः लाख से अधिक हो गयी. ग्रीन हंट के तीसरे चरण के बाद आज सरकार द्वारा संचालित 'समाधान' हमले के साथ ही दमन और तीव्र हो गया है. केंद्र व राज्य सरकारों के पुलिस, अर्धसैनिक, कमांडो बलों की तैनाती इतना बढ़ी कि आंदोलन के तमाम इलाकों में एक ही समय में ऑपरेशन/हमले करने की स्तर तक उनकी मौजूदगी बढ़ गयी है. गुरिल्ला बेसों, लालप्रतिरोध इलाकों और नए विस्तारित इलाकों में भी कारपेट सेक्युरिटी का विस्तार हुआ. क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों में हर साल हजारों, लाखों करोड़ रुपए खर्च कर केंद्र, राज्य सरकारें जो सुधार योजनाएं चला रही हैं, उनके फलस्वरूप जनता के शिविर में विभाजन शुरू हुआ और एक छोटा तबका शोषक—शासक वर्गों की सामाजिक बुनियाद में तब्दील हो रहा है.

आत्मगत कारण

प्रधान, केंद्रीय कर्तव्य और अन्य फौरी कर्तव्यों के बीच अंतर-संबंधों को समझने में कमी, व्यापक मैदानी और ग्रामीण इलाकों में वर्गसंघर्ष को जारी रखने में कमजोरी:

केंद्रीय कर्तव्य और प्रधान व फौरी कर्तव्य आपस में एक दूसरे पर आधारित हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, इन दोनों के बीच इस संबंध पर हमारी पार्टी के नेतृत्व और कैडर ने समग्रता से पकड़ हासिल नहीं कर पाए, नतीजतन व्यवहार में इन कर्तव्यों को लागू करने के लिए आंदोलन के शक्ति व कमी पर आधारित होकर सामग्रिक प्रयास नहीं कर पाए. डीके व बीजे में उन इलाकों के लिए निर्देशित उच्च कर्तव्यों को हासिल करने के लिए दृढसंकल्प के साथ कुछ प्रयास करने के बावजूद, उच्च कर्तव्यों को हासिल करने का जरूरी ताकत हासिल करने लायक तमाम उत्पीड़ित वर्गों और तमाम तबकों को वर्गसंघर्ष में गोलबंद करने लायक कानूनी व गैरकानूनी, खुले व गुप्त संघर्ष व सांगठनिक स्वरूपों और कार्यनीति को विकसित नहीं कर पाएं। बीजे में पार्टी, पीएलजीए, जनसंगठन व संयुक्तमोर्चा के निर्माणों को संगठित करने में कमी-कमजोरी जारी है. एओबी व तेलंगाना में वर्गसंघर्ष और गुरिल्ला युद्ध को एक हद तक जारी रखते हुए डीके के लिए कुछ किस्म के मदद पहुंचाने के बावजूद, उन इलाकों में पार्टी व पीएलजीए को मजबूत करने लायक हमारे प्रयास में सीमितताओं व कमजोरियों का सामना किए. देश के अन्य इलाकों में हमारे ताकत के मुताबिक भी वर्गसंघर्ष को व्यापक व तेज नहीं कर पाएं. नतीजतन उन इलाकों में राजनीतिक, सांगठनिक और सैनिक गतिविधियों में विकास नहीं हो पाया, आत्मगत शक्तियां संख्या में और गुणवत्ता में विकास हासिल नहीं कर पायीं. इससे उन इलाकों के आंदोलन विकास नहीं हो पाए; डीके, बीजे इलाकों को मदद देने के लिए कैडरों की व पादार्थिक मदद उचित मात्रा में नहीं पहुंचा पाएं. यह कमजोरी और विफलता देशभर के क्रांतिकारी आंदोलन अस्थायी तौर पर पीछेहट के दौर में जाने के मुख्य कारणों में से एक है.

इस 14 साल के समय में कांग्रेस निर्देश अनुसार व्यापक मैदानी व ग्रामीण इलाकों में वर्गसंघर्ष को जारी रखने में और मजबूत शहरी आंदोलन

का निर्माण में विफल हुए हैं। इस विफलता के लिए प्रतिक्रांतिकारी हमला एक मुख्य वस्तुगत कारण के रूप में रहा है, बावजूद सक्रिय आत्मगत प्रयास की तरफ से देखा जाए तो, इन विषयों में हमने विफल हुए हैं। फलस्वरूप, हमारा क्रांतिकारी आंदोलन वर्तमान में रणनीतिक इलाकों तक ही सीमित हो गया। मैदानी, जंगली इलाकों के आंदोलन और शहरी आंदोलन आपस में एक दूसरे का पूरक हैं, इससे तादात्म्य स्थापित करने में; लाल प्रतिरोध इलाकों, गुरिल्ला जोनों—गुरिल्ला बेसों के बीच आपसी संबंधों को पहचान कर उन्हें लागू करने में समझदारी में कमी और व्यवहार में विफलता इसका कारण है।

इसलिए अब केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा तीव्र रूप से जारी प्रतिक्रांतिकारी 'समाधान' हमले को हराकर भारत के क्रांतिकारी आंदोलनको आगे बढ़ाने के लिए सिर्फ डीके, बीजे, पूर्वी बिहार—पूर्वोत्तर झारखंड, एओबी व तेलंगाना इलाकों में ही वर्गसंघर्ष और गुरिल्ला युद्ध तेज करने से नहीं होगा, इन इलाकों के साथ देश के अन्य तमाम संघर्षरत इलाकों में साम्राज्यवाद—विरोधी और सामंत—विरोधी वर्गसंघर्षों को तेज करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन इलाकों में वर्गसंघर्ष का विकास भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने में बहुत बड़ा स्रोत और आधार होगा। इसके अलावा वे डीके, बीजे व पूर्वी बिहार—पूर्वोत्तर झारखंड के लिए मजबूत आधार के रूप में खड़े होंगे। इसलिए केंद्र कर्तव्य और अन्य कर्तव्यों के बीच आपसी संबंधों को सही तरीके से समझ कर शहरी, मैदानी व ग्रामीण इलाकों के अन्य क्षेत्रों में विकास हासिल करते हुए देश में अधिकाधिक नए वर्गसंघर्ष के केंद्रों को निर्माण करना चाहिए।

समाजिक शोध के आधार पर नया वर्गसंघर्ष का कार्यक्रम और कार्यनीति को नहीं बना पाए

जनवरी 2021 में केंद्रीय कमेटी ने सामाजिक शोध कार्यक्रम को पूरा किया। 'भारत देश के उत्पादन संबंधों में बदलाव—हमारा राजनीतिक कार्यक्रम' नामक दस्तावेज को जारी किया। लेकिन उस बहुत ही मुख्य सैद्धांतिक कर्तव्य को पूरा करने में हुई इस देरी ने कई दुष्परिणामों का कारण बनी। मुख्य रूप से वर्गसंघर्ष और वैश्वीकरण से उत्पादन संबंधों में और वर्ग संबंधों में हुए बदलावों को सही तरीके से आकलन करते हुए, कृषि, औद्योगिक और सेवा

क्षेत्रों में संगठित व असंगठित क्षेत्रों में हो रहे श्रम शोषण को पहचान कर, उसके आधार पर वर्गसंघर्ष का कार्यक्रम, उसे लागू करने के लिए कानूनी व गैर-कानूनी, खुले व गुप्त आंदोलन व सांगठनिक स्वरूपों/कार्यनीति को बनाने में देरी हुई. यह भारत के क्रांतिकारी आंदोलन कठिन दौर में जाने का कारणों में से मुख्य कारण है.

गैरसर्वहारा रुझानों को सुधारने में कमजोरी

हमारी केंद्रीय कमेटी समेत पार्टी कमेटियों में मनोगतवाद, स्वतःस्फूर्तता, उदारतावाद, संकीर्णवाद, व्यक्तिवाद और नौकरशाही आदि गैर-सर्वहारा रुझान विभिन्न रूपों में प्रतिबिंबित हो रहे हैं, इन्हें सुधारने के लिए समूची पार्टी में शुद्धीकरण अभियान चलाने का कर्तव्य एकता कांग्रेस ने पूरी पार्टी को निर्देशित किया. हमने इन कमजोरियों, गलत रुझानों सुधारने से ही दुश्मन के हमले को हरा सकेंगे, नेतृत्व को बचा सकेंगे, आंदोलन को उसकी अगली उच्च चरण में आगे बढ़ सकेंगे, कांग्रेस ने यह भी स्पष्ट किया. कांग्रेस के निर्देशनुसार 2008 व 2009 में पूरी पार्टी में शुद्धीकरण अभियान चलाया गया. लेकिन, नेतृत्वकारी कमेटियां उसे दृढसंकल्प के साथ नहीं चलाने के कारण यथेच्छापूर्वक उसे संचालित करने के कारण इन गैर-सर्वहारा रुझानों को सुधारने में हम विफल हुए. नतीजतन गंभीर नुकसान हुए. अस्थायी पीछेहट की स्थिति में जाने के कारणों में से यह एक है.

इस विफलता को पहचान कर केंद्रीय कमेटी की चौथी बैठक-2013 में समूची पार्टी में बोल्शेवीकरण अभियान चलाने आह्वान किया गया. इससे 2013 से लेकर 2018 अंत तक पार्टी में बोल्शेविक अभियान चलाया गया. इससे बेहतर परिणाम हासिल हुए.

उपरोक्त कारणों के साथ-साथ नेतृत्व को हुए नुकसान भी हमारे आंदोलन के अस्थायी पीछेहट की स्थिति का शिकार होने के कारण बन गए हैं. पार्टी ने जो कार्यभार तय किए, इन नुकसानों के चलते उन्हें पूरा करने में भी अड़चन पैदा हुई. उसी तरह नेतृत्व के स्तर पर विश्वासघात भी आंदोलन को नुकसान पहुंचाया. इन नुकसानों को यदि कम किये होते तो पार्टी दुश्मन के खिलाफ और भी मजबूती से लड़ने की स्थिति में होती. इसी समीक्षा में जिन

मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई, उन सभी ने आंदोलन पर नकारात्मक असर डाला और आंदोलन के अस्थायी पीछेहट की स्थिति में पहुंचने के कारण बन गए.

हमने यह तय किया है कि आज के अस्थायी पीछेहट की स्थिति जिसका हमारा आंदोलन सामना कर रहा है, में दंडकारण्य, बिहार—झारखंड छापामार जोनों को मुक्तांचल बनाने के फौरी, प्रधान व केंद्रीय कार्यभार में कुछ संशोधन करते हुए तत्काल मुक्तांचलों का निर्माण करने के कार्यभार के बदले उन दो इलाकों में मुक्तांचल निर्माण कार्य का लक्ष्य तय करके उस हेतु पार्टी को तीव्रता के साथ काम करना चाहिए. यह तय किया गया है कि उन स्पेशल एरियाओं/स्पेशल जोनों/राज्यों जहां अन्य प्रधान कार्यभार अपनाए गए थे, में वहां के आंदोलनों के हालात को ध्यान में रखते हुए आंदोलन के विकास के लिए कार्यनीति अपनायी जाए. कुल मिलाकर कहा जाए तो हमने डीके, बीजे के इलाकों में मुक्तांचलों के निर्माण के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने एवं अन्य स्पेशल एरियाओं/स्पेशल जोनों/राज्यों में आंदोलनों को विकसित करते हुए केंद्रीय कार्यभार के लक्ष्य तक पहुंचने का निर्णय लिया है.

कमेटियों का कामकाज

कमेटी कामकाज की समीक्षा का प्रधान हिस्सा केंद्रीय कमेटी के कामकाज की समीक्षा ही है. पार्टी कमेटियों के कामकाज की समीक्षा का मतलब सिर्फ कार्यपद्धतियों व कार्यशैली की समीक्षा नहीं बल्कि उससे भी प्रधान है, क्रांतिकारी आंदोलन का नेतृत्व करने में उनकी निभायी भूमिका की समीक्षा करना.

केंद्रीय कमेटी का कामकाज

हमारी एकीकृत पार्टी के नेतृत्व में हमने एकता कांग्रेस का सफल आयोजन किया था. 2004 में एकीकृत पार्टी के गठन के संदर्भ में सभी राज्यों को कन्हार करते हुए पांच रीजनल ब्यूरोओं की स्थापना की. कांग्रेस तक उनमें से एक ब्यूरो ने उसके इंचार्ज पीबीएम के गिरफ्तार हो जाने से कम समय में ही ठप होकर काम नहीं किया. उसके बाद वह पूरी तरह रद्द हो गया. कांग्रेस से लेकर और चार सालों तक चार ब्यूरोओं का कामकाज चला. केंद्रीय कमेटी

के सदस्यों की गिरफ्तारी व मुठभेड़ों के बाद एनआरबी व दक्षिण-पश्चिम आरबी रद्द हो गया। मात्र दो ब्यूरो ही इस दौरान कार्यरत थे।

दो सीसी बैठकों के बीच के समय में रीजनल ब्यूरोओं ने अपने दायरे के राज्यों से संबंधित राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक मामलों में निर्णय लिए। उनके साथ ही परिपत्रों के जरिए पार्टी को मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

कांग्रेस में हमने बड़ी संख्या के साथ केंद्रीय कमेटी को बना लिए थे। इन 14 सालों में सीसी ने अपनी 6 बैठकें की। पार्टी पर जारी तीव्र दमन की वजह से निर्धारित समय में सीसी बैठकें आयोजित न कर सकें। उतना ही नहीं, पूरी संख्या में बैठकें न होने के साथ-साथ आखिरकार ऐसी स्थिति निर्मित हो गयी कि अलग-अलग गुप्तों में बैठकें आयोजित करके एक ही समझदारी में पहुंच रहे हैं। कुछ महत्वपूर्ण मौकों पर जहां आंदोलन में समस्याएं उत्पन्न हुई थीं, पार्टी महासचिव द्वारा वहां के संबंधित सीसी सदस्यों के साथ मिलकर समस्याओं को हल करने के साथ-साथ विभिन्न कमेटियों व व्यक्तियों को तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की मजबूती के लिए जब का तब पत्र लिखकर मार्गदर्शन देना भी सीसी कामकाज में उपयोगी रहा। जनवादी केंद्रीयता के मातहत ही इन बैठकों के निर्णयों को अंतिम रूप देकर समूची पार्टी को भेजा गया।

एकता पार्टी का गठित होने के बाद देश में क्रांति के लिए अनुकूल बनी परिस्थिति को देखकर देशभर में साम्राज्यवादियों के दिशानिर्देशन में शोषक-शासक वर्ग हमारी पार्टी और क्रांतिकारी आंदोलन को पूरी तरह उन्मूलन करने के लक्ष्य से चलाए जा रहे हमले से परिस्थिति में बहुत ही बदलाव आया। बदली परिस्थिति को ध्यान में रखकर सीसी के दिशानिर्देशन के अनुसार अपने आप को ढालने में सीसी विफल हो जाने की वजह से, इन 14 सालों की समयावधि में सीसी को अधिक तीव्र नुकसान हुए हैं। शहीद व गिरफ्तार होने के कारण सीसी को 65 प्रतिशत नुकसान हुए। 8 कॉमरेड्स अस्वस्थता के चलते शहीद हुए जबकि 6 कॉमरेड्स दुश्मन की झूठी मुठभेड़ों में शहीद हुए। 16 कामरेड गिरफ्तार होकर लंबे समय से जेलों में बंद हैं। उनमें से 12 कामरेड की रिहाई हुई। वर्तमान में चार कामरेड जेल में हैं और तीन सीसीएम राजनीतिक रूप से पतित होकर दुश्मन के सामने घुटने टेक दिया।

इन नुकसानों की भरपाई के लिए कांग्रेस में चुने गए वैकल्पिक सदस्यों को फौरन सीसी में को-ऑप्ट किया गया. इसके अलावा नए तौर पर आंदोलन में नेतृत्व के रूप में विकसित हो रहे कुछ सक्षम कामरेडों को भी सीसी में को-ऑप्ट किया गया. सीसी को कुछ हद तक मजबूत किया गया.

सीसी में स्टैंडिंग कमेटी, पीबी एवं सीएमसी के साथ कुछ रीजनल ब्यूरो, सब-कमेटियों, और विभागों का भी हमने गठन किया था. 2010 तक पीबी बैठकें व सीएमसी की बैठकें संपन्न होती आयी. 2011 से इनकी बैठकें आयोजित नहीं कर सकें. इस दौरान प्रधानतया इआरबी व सीआरबी ही अपनी बैठकें आयोजित करते हुए सक्रिय रूप से काम करते आए. इन बैठकों में ही पीबी व सीएमसी सदस्यों ने उन कमेटियों के कार्यभार पूरा करने के प्रयास किए. स्टैंडिंग कमेटी तीन कॉमरेडों के साथ बनी थी. इस कमेटी की एक ही बैठक हो सकी. तीव्र होते दमन की वजह से उत्पन्न समन्वय की समस्या, किसी एक केंद्र से काम न करने की स्थिति में इस कमेटी को सीसी ने 2010 में रद्द किया था. आंदोलन की आवश्यकताओं के लिए यद्यपि स्टैंडिंग कमेटी की जरूरत है लेकिन उसे न चला पाने की स्थिति में रद्द करते हुए सीसी ने उस समय जो प्रस्ताव किया था, उसे सही निर्णय माना जाना चाहिए.

तीव्र दमन, नेतृत्व के नुकसानों एवं सीसी की दूसरी बैठक के बाद निर्धारित समयावधि में बैठकें नहीं हो सकी. 9 सालों में तीन बैठकें हुईं. सीसी 5वीं बैठक कई खतरों के बीच तीन दफे संपन्न हुई. दुश्मन तीव्र स्तर पर दमन के जरिए नेतृत्व की आवाजाही को नियंत्रित करने व सीसी समन्वय को धक्का पहुंचाने के लिए दुश्मन जो प्रयास कर रहा है, उससे सीसी की बैठकें आयोजित करने में कई अड़चनें पैदा हो रही हैं. सीसी ने कठिन परिस्थितियों में भी हमारा पार्टी नेतृत्व जहां का वहां कार्य कर रहा है. जनवादी केंद्रीयता की पद्धति के मुताबिक निर्णय लेकर अमल कर रहा है. इस तरह पार्टी का और आंदोलन का नेतृत्व प्रदान कर पा रहा है. नक्सीबाड़ी व श्रीकाकुलम आंदोलनों के धक्का खाने के बाद पार्टी नेतृत्व भी ध्वस्त होकर पार्टी कतारों के बिखर जाने की परिस्थितियों की अपेक्षा आज हमारी एकीकृत पार्टी की केंद्रीय कमेटी ने तीव्र दमन में भी एकता के साथ ऊपर से नेतृत्व दे रही है. यह हमारी पार्टी के अनुभव में एक विशेषता है.

सीसी ने सक्षम तरीके से कार्य करने के लिए उचित समन्वय मशीनरी को स्थापित नहीं कर पायी। किसी भी कमेटी के ठीक-ठाक काम करने के लिए सटीक, मजबूत टेक मशीनरी आवश्यक है। देशभर में सीसी की समन्वय के लिए यह आवश्यक सांगठनिक गतिविधि से संबंधित मामला है। उस समन्वय मशीनरी इतनी ताकतवर होनी चाहिए कि वह जितना भी दमन रहे, कुशलता के साथ काम करे। पार्टी के समन्वय को ध्वस्त करने के लिए दुश्मन इसी मशीनरी को अपने हमले का निशाना बनाता है। हर हमेशा उस हमले से बचते हुए काम करना होगा। इस समझ के साथ सीसी अपनी मशीनरी का निर्माण नहीं कर सकी। नतीजतन, तीव्र दमन की बीच अपने कार्यों को संचालित करने में सीसी ने कई रुकावटों का सामना किया। समन्वय के लिए टेक व कोरियर व्यवस्था के साथ-साथ हमारे जैसे बहु राष्ट्रीयता वाले देश में अनुवादकों, लेखन क्षमता वाले कॉमरेडों की आवश्यकता काफी है। जब ये पर्याप्त मात्रा में रहेंगे तभी सीसी में केंद्रीय स्तर के ब्यूरो व सब-कमेटी के निर्णय सभी इलाकों में उनकी अपनी भाषाओं में पहुंचते हैं। इससे सीसी का देशव्यापी समन्वय सही समय पर मार्गदर्शन के साथ होता है। इसके लिए सीसी के कुछ प्रयासों के बावजूद वह उतना सफल नहीं हो पायी।

तथापि दुश्मन तीव्र स्तर पर केंद्रीकरण करने की वजह से केंद्रीय कमेटी को गंभीर नुकसान पहुंचने से आंदोलन के सामने उत्पन्न चुनौतियों को हल करने में देरी हो रही है। राजनीतिक, सांगठनिक, सैनिक, संयुक्त मोर्चा, प्रचार व अध्ययन विषयों के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय मामलों में सीसी की ओर से जिम्मेदारी निभाने में काफी कमी है। यह आंदोलन पर नकारात्मक असर डाल रहा है। इस बात को ध्यान में रखकर और भी पहलकदमी के साथ काम करने के लिए सीसी को नई राहें तलाशकर आगे बढ़ने की जरूरत है।

सीसी, एसएसी/एसजडसी/राज्य कमेटियों में कार्यरत वेटरन नेतृत्वकारी कॉमरेडों में बढ़ती उम्र के साथ अस्वस्थता की समस्याएं व कुछ लोगों में शारीरिक व बौद्धिक तौर पर सीमितताएं उत्पन्न होने की सहज प्रक्रिया की वजह से हमारी पार्टी के सामने वेटरन्स की समस्या आयी। इसमें जेलों में बंद कॉमरेड्स, भूमिगत जीवन बिताते हुए कमेटियों में काम करने वाले एवं कुछेक कॉमरेड्स खुली गतिविधियां संचालित करने वाले हैं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद-

माओवाद की सैद्धांतिक मापदंड पर आधारित होकर इस समस्या को हल करने की जवाबदारी अपनाकर सीसी ने 'पार्टी वेटरन कॉमरेड्स' पर एक प्रस्ताव पारित किया। इसके मुताबिक कुछ मार्गदर्शक नियम बनाकर अमल कर रही है।

केंद्रीय कमेटी से संबंधित ब्यूरो, कमिशनों, सब-कमेटियों, विभागों

केंद्रीय कमेटी (सीसी) पार्टी में उच्चतम नेतृत्व कमेटी के रूप में क्रांति के लक्ष्य हासिल करने के लिए तमाम पार्टी, पीएलजीए, संयुक्त मोर्चा और जनता को सक्षम रूप से नेतृत्व प्रदान करने हेतु जिस तरह पोलिटिकल ब्यूरो (पीबी), सेंट्रल मिलिटरी कमिशन (सीएमसी) का गठन किया जाता है, उसी तरह आवश्यक विभिन्न केंद्र स्तर के ब्यूरो, सब-कमेटियों और विभागों को भी गठित करने पार्टी का संविधान मार्गदर्शन करता है। इसके अनुसार ही एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस में चुनी गयी केंद्रीय कमेटी ने लगभग ढाई साल पहले से ही कार्यरत पीबी और सीएमसी को पुनरगठन किया। सुकोमो-एसयूसीओएमओ (सब-कमेटी आन मास आर्गनाइजेशन), सीएमएससी (सेंट्रल महिला सब-कमेटी), सीपीबी (सेंट्रल प्रोपगंडा ब्यूरो), अंतरराष्ट्रीय विभाग, सीपीएस (सेंट्रल पोलिटिकल स्कूल) को पुनरगठन किया। नए तौर पर यूएससीओ (अर्बन सब-कमेटी) को गठित किया। प्रभारी के तौर पीबी सदस्य रहते हुए सुकोमो, सीपीबी, अंतरराष्ट्रीय विभाग और यूएससीओ का केंद्रीय कमेटी सदस्यों के साथ गठित किया गया। ये पीबी के प्रत्यक्ष निर्देशन में अपेक्षाकृत स्वतंत्र रूप से काम करते हुए ही, इन के निर्णयों पर सीसी/पीबी का अनुमोदन लेता रहा है।

एक पीबीएम प्रभारी के रूप में सीएमएससी को एक सीसी सदस्या, बाकी राज्य स्तर के महिला कामरेडो के साथ पुनर्गठित किया। एक पीबीएम प्रभारी के रूप में सीपीएस को कुछ एससी और एक आरसी स्तर के सदस्यों के साथ पुनर्गठित किया। ये भी पीबी का प्रत्यक्ष निर्देशन में काम करते हैं, बावजूद इनमें निचले स्तर (राज्य व रीजिनल स्तर) के कामरेड होने की वजह से ये प्रधानतया सीसी/पीबी के लिए अपने प्रस्तावों पर और निर्णयों पर अनुमोदन

लेकर लागू करता रहता है। इन दो किस्म के निर्माण भी रीजिनल ब्यूरो और राज्य कमेटियों के सहकारिता व समन्वय के साथ काम करते हैं। इन निर्माणों में सीसी के 7 कामरेड पूर्णकालीन और तीन कामरेड अंशकालीन तौर पर रह कर केंद्रीकृत कर काम किए।

इस पीओआर में पीबी और सीएमसी के काम-काज पर अलग से दिया गया है। बाकी ब्यूरो, सब-कमेटियों और विभागों ने 2010 तक लगभग नियमित रूप से बैठकें आयोजन कर सही निर्णय लेकर अमल करने का प्रयास किए। व्यवहार में ज्यादातर सकारात्मक परिणाम हासिल किए। इस समय काल में विभिन्न क्षेत्रों में हमारी पार्टी द्वारा हासिल सफलताओं में और आंदोलन के विकास में इनकी भूमिका थी।

एकता कांग्रेस के बाद एक तरफ हमारी पार्टी प्रधानतया तमाम क्षेत्रों में सकारात्मक परिणाम हासिल करते हुए पार्टी, पीएलजीए और संयुक्त मोर्चा को संगठित करते हुए क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाया, दूसरी तरफ इस अग्रगति को रोक कर ध्वस्त करने के लिए शासक वर्ग ने प्रतिक्रांतिकारी हमले तीव्र किए जिसमें क्रमशः 2011 तक नेतृत्व समेत पार्टी को गंभीर नुकसान किए। इसके तहत ही हमारी केंद्रीय स्तर के ब्यूरो, सबकमेटियों और विभाग लगभग ध्वस्त हो गए या ठप हो गए। इसने केंद्रीकृत नेतृत्व के तौर पर केंद्रीय कमेटी निर्वाह करने की नेतृत्वकारी भूमिका पर काफी प्रतिकूल असर डाला। जैसाकि इस दस्तावेज में पहले ही बताया गया कि इस समय काल में समूची पार्टी के लिए नुकसान जिन-जिन के कारणों से हुए वे इन पर भी लागू होते हैं। हालांकि विभिन्न क्षेत्रों में हमारी सांगठनिक शक्ति, समस्याओं की जटिलता, कमी-कमजोरी, गलतियों में जो अंतर होते हैं, इनकी वजह से व्यवहार में उनके द्वारा हासिल परिणामों में भी कुछ मुख्य अंतर दिखते हैं।

ये ब्यूरो, सब-कमेटियों और विभाग ध्वस्त होने से लेकर इनके कर्तव्यों को प्रत्यक्ष रूप से सीसी/पीबी, रीजिनल ब्यूरो और राज्य कमेटियां निर्वाह करने के लिए कुछ हद तक प्रयास कीं। हालांकि इस काम के लिए सीसी/पीबी ने केंद्रीकृत तौर पर कुछ हद तक निर्देश दिया है, बावजूद अपनी ठोस परिस्थितियों के अनुरूप जरूरी कार्याचरण योजनाएं बनाकर प्रधानतया रीजिनल ब्यूरो समेत राज्य कमेटियां ही काम किया। इस दौरान हासिल

सकारात्मक परिणाम सीमित है, फिर भी इन्हें बहुत ही महत्व हैं। क्योंकि, ये परिणाम, हमें तमाम क्षेत्रों में गंभीर नुकसान होकर कमजोर पड़ने की स्थिति में प्रतिक्रांतिकारी हमले को एकजुटता से मुकाबला करते हुए, प्रतिकूल परिस्थितियों में हासिल किए गए हैं। ये सकारात्मक परिणाम अस्थायी तौर पर पीछेहट की स्थिति से उबरने के लिए हमारे प्रयास को मदद करेगी।

नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने के लिए हमारे द्वारा संचालित किए जा रहे दीर्घकालीन जनयुद्ध में ज्वार-भाटों, मोड़ों-घुमाव अनिवार्य रूप से होते हैं। हमें शुरुआत में एक छोटे व कमजोर शक्ति के रूप में रहकर एक बड़े व मजबूत दुश्मन के खिलाफ लड़ने के क्रम में ही एक मजबूत व अजेय शक्ति के रूप में उभरते हुए, छोटे, जुदा हुए इलाकों से व्यापक इलाकों और देशभर में विस्तारित होते हुए अंतिम जीत हासिल करने लहरों की तरह आगे बढ़ना होगा। इस दृष्टि से देखा जाए, लगभग पिछले एक दशक से हमारी केंद्रीय कमेटी को उक्त ब्यूरो, सब-कमेटियों और विभाग के अभाव की स्थिति सामना करने के बावजूद, इस दौरान हासिल किए गए सकारात्मक व नकारात्मक अनुभवों से सीख लेकर, पिछले गलतियों से बचते हुए, योजनाबद्ध ढंग से काम करते हुए, क्रमशः केंद्रीय कमेटी के नेतृत्व में फिर से केंद्रीकृत निर्माण गठित कर, उन्हें संगठित करते हुए, केंद्रीकृत व विकेंद्रीकृत निर्माणों के बीच, गुप्त व खुला निर्माणों के बीच, गुप्त व खुला गतिविधियों के बीच समन्वय हासिल करने की दिशा में दृढ़संकल के साथ आगे बढ़ना आज के हमारे फौरी कर्तव्य है।

स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्य कमेटियां एवं अन्य कमेटियां

एकीकृत पार्टी के निर्माण के बाद जिन स्पेशल एरियाओं/स्पेशल जोनों/राज्यों में दोनों पार्टियों की इकाइयां थीं, वहां हमने उन्हें एकताबद्ध करके सभी कमेटियों का पुनर्निर्माण किया। उसी तरह जहां दोनों पार्टियों के नेतृत्व में दोनों के छापामार बल थे, वहां उन्हें मिलाकर पीएलजीए के सैनिक फार्मेशनों, पार्टी सैनिक कमिशनों व कमान व्यवस्थाओं का गठन किया। जन संगठनों, संयुक्त मोर्चा के निर्माणों में पार्टी निर्माणों का पुनर्निर्माण किया एवं

मजबूत करने का प्रयास किया। एकता कांग्रेस—9वीं कांग्रेस को सफलतापूर्वक संपन्न करने के क्रम में देश भर में विभिन्न राज्यों में अधिवेशनों का आयोजन कर स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्य कमेटियों को चुना गया। इन स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्य कमेटियों में क्रांतिकारी आंदोलन के अनुभव से लैस कॉमरेड्स आए। इन 14 सालों के समय में पहले के पांच सालों में ज्यादातर राज्यों में पार्टी कमेटियों, सेल्स एवं फ्रैंक्शनों का निर्माण अपेक्षाकृत मजबूत हुआ। केंद्र, राज्य सरकारों के नेतृत्व में हमारे क्रांतिकारी आंदोलन पर ग्रीन हंट ऑपरेशन के नाम पर जारी 'आल-आउट वार' से हमारे निर्माण क्रमशः काफी हद तक ध्वस्त हुए। राज्य स्तर से लेकर एसी व ग्राम स्तर तक पार्टी कमेटियों के सदस्यों की मुठभेड़ हत्याओं, कड़ियों को गिरफ्तार करके जेलों में रखा। दमन के इस दौर में कई लोगों के अधोपतित हो गए।

गिरफ्तारियों, मुठभेड़ों, अधःपतन से पार्टी कमेटियों को तीव्र नुकसान हुआ। संघर्ष के क्रम में आगे आने वाले नए कॉमरेडों के साथ फिर से कमेटियों की भरपाई कर सभी स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्यों में स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्य कमेटियों को फंक्शनिंग में लाया गया है। जोनल/डिविजनल/जिला, सब जोनल, एरिया कमेटियों में उपरोक्त कारणों के चलते काफी बदलाव होते आ रहे हैं। फिर नित्य दमन में इन 14 सालों की कालावधि में स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्य कमेटियों, जोन/डिविजन/जिला कमेटियों से लेकर एरिया कमेटियों तक प्लीनमों का आयोजन कर नए नेतृत्व को चुना जा रहा है। इससे कमेटियों में जनवादी केंद्रीयता की कार्यशैली काफी हद तक अमल हो रहा है। एकरूपता का अभाव, गुटबाजी के कारण कुछ कमेटियों का काम पार्टी कार्यपद्धतियों के अनुरूप नहीं चल रहा है। उसी तरह कुछेक कमेटियां निर्धारित समयावधि में बैठकें नहीं कर पाने की मजबूर स्थिति में हैं। कुछ कमेटियों की स्थिति ऐसी है कि उन कमेटियों के कुछेक सदस्य ही सक्रिय रहकर, अधिकांश सदस्य उनके पीछे चलते हैं या कमेटियों में पूरी संख्या नहीं रहती है। खासकर एरिया कमेटियां जोकि जनता के बीच पार्टी कार्य के मूल स्तंभ हैं, बहुत कमजोर हैं।

हमारी पार्टी कांग्रेस तक देशव्यापी पार्टी सदस्यता हजारों में थी। इन 14 सालों में दमन की वजह से पार्टी सदस्यता आधा से अधिक घट गयी। कांग्रेस

में अनुमोदित पार्टी सदस्यता में कुछ प्रतिशत लूज है। जिन्हें पार्टी सदस्यता दी जानी है, उनका चयन कर उन्हें बताकर उनका अनुमोदन नहीं लिया गया और दावेदारी सदस्यता से पार्टी सदस्यों में विकसित करने की प्रक्रिया सही ढंग से संचालित नहीं हुई। इन कारणों के चलते दमन में पार्टी सदस्यता घट गयी।

ज. गैर-सर्वहारा रुझान

“विलय के पहले की दोनों पूर्ववर्ती पार्टियों में मौजूद कुछ गैर-सर्वहारा रुझान नई पार्टी में भी जारी रही। विलय के पहले विभिन्न राज्यों में अपनाए गए भूल सुधार अभियान की वजह से कुछ सकारात्मक प्रभाव रहने के बावजूद हमारी एकीकृत पार्टी की सर्वोच्च कमेटी सहित पार्टी कमेटियों में मनोगतवाद, स्वस्फूर्तता, उदारतावाद, संकीर्णतावाद, व्यक्तिवाद, नौकरशाही विविध रूपों में प्रतिबिंबित हो रहे हैं।”

विलय के बाद की हमारी राजनीतिक, सांगठनिक समीक्षा में उल्लेख किया गया है, “हम जब इन कमजोरियों, गलत रुझानों को सुधारते हैं, तभी दुश्मन के हमले को हरा सकते हैं, नेतृत्व को बचा सकते हैं, आंदोलन को बाद के उच्च स्तर में आगे बढ़ा सकते हैं। इन रुझानों को दूर करने के लिए समूची पार्टी में एक भूल सुधार आंदोलन को अपनाना है। इस तरह के रुझान विभिन्न रूपों में बार-बार सिर उठाते हैं। इसलिए भूल सुधार अभियान की प्रक्रिया को निरंतर संचालित करने की बुनियाद पर अपनाना चाहिए।” उसके बाद पूरी पार्टी में भूल सुधार आंदोलन अपनाया गया था। इस भूल सुधार आंदोलन को सफल बनाने के मकसद से सीसी ने एक सर्कुलर व पीबी ने एक लेख जारी किया था। उक्त सर्कुलर व लेख ने यह बताया कि किन क्षेत्रों पर केंद्रीकरण किया जाए एवं किन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए भूल सुधार अभियान चलाया जाए। हालांकि हमने भूल सुधार अभियान संचालित किया था लेकिन हमारी कमेटियों में मौजूद गैर-सर्वहारा वर्गीय रुझानों का प्रभाव कम नहीं हुआ। फिर से समझदारी व व्यवहार की वही खामियां जारी रहीं। इन गलतियों पर राज्य प्लिनमों व रीजनल ब्यूरोओं की विस्तृत बैठकों में भी चर्चा हुई। सीआरबी, ईआरबी के दायरे में बोल्शेवीकरण अभियान संचालित किया गया।

जन संगठनों में भी दो राज्यों में भूल सुधार अभियान लिया गया। सीआरबी ने यह समीक्षा की कि यह अभियान एक हद तक सफल हुआ। कुल मिलाकर देखा जाए, तो गैर-सर्वहारा रुझानों को चिह्नित कर भूल सुधार अभियान के जरिए उन्हें दूर करने की प्रक्रिया को अपनाने के बावजूद अभी तक आशानुरूप सफलता हासिल नहीं कर सके। इसलिए अभी भी हमारी पार्टी कमेटियों में ऊपर से लेकर नीचे तक विभिन्न रुझान व्यक्त हो रहे हैं और वे आंदोलन के सामने अड़चन बने हुए हैं।

मनोगतवाद:

दुश्मन के हमले की तीव्रता एवं उसके लक्ष्य का आकलन करने एवं उसके मुताबिक कार्यपद्धतियों व कार्यशैली में बदलाव नहीं लाने के फलस्वरूप दुश्मन के हमले में हमारी पार्टी कमेटियों को भारी नुकसान पहुंचा। इस विषय को हालांकि हमने समीक्षाओं में चिह्नित किया, उसे भूल सुधार का हिस्सा बनाया, इसके बावजूद मनोगतवादी रुझान के कारण वास्तविक स्थिति को गहराई से न समझकर गंभीर नुकसान लंबे समय से जारी हैं। हमें यह गहराई से चिह्नित करना होगा कि यह मनोगतवाद सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक व जनदिशा जैसे क्षेत्रों में मजबूत प्रभाव डालता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि व्यक्तिगत कमजोरियां भी मनोगतवाद के साथ जुड़ गयीं। इस मनोगतवाद की वजह से हमारी पार्टी में, कुछ राज्यों में एकरूपता की समस्या, वह भी गुपिज्म के रूप में दिख रहा है और पार्टी में अनेकता के लिए रास्ता बना रहा है। दुश्मन के हमले में आए बदलावों को समझने में, गुप्त पार्टी नियमों का पालन करने में एवं छापामार युद्ध के सामान्य व्यावहारिक उद्देश्यों का पालन करने में जहां गैर-जिम्मेदाराना तरीके से रहें, वहां मुठभेड़ों में गंभीर नुकसान उठाए। इन मुठभेड़ों में हमने बड़े पैमाने पर पार्टी कैडरों, छापामार बलों, नेतृत्व व हथियार, गोली-बारूद खोया। इस तरह पार्टी, पीएलजीए को हुए नुकसानों के कारण हमारे आंदोलन के सामने अनेक प्रतिकूलताएं उत्पन्न हुईं।

तीव्र दमन की परिस्थितियों में सीसी सहित केंद्रीय विभागों का कामकाज विगत जैसा नहीं चलने, मात्र दो आरबियों का ही कामकाज चलने के कारण देशव्यापी पार्टी के अनुभवों का जब का तब आदान-प्रदान करने में रोड़े उत्पन्न हो रहे हैं। इस वजह से कमेटी सदस्यों में मनोगतवाद सिर उठा रहा

है। आंदोलनों में असमानताएं व्याप्त होने की वजह से जहां जीतें हासिल हुईं, वहां के कमेटी सदस्यों में आधिपत्य की भावना एवं आत्मसंतुष्टि पनप रहा है जबकि बाकी जगहों पर आत्महीनता की भावना का शिकार होकर कमेटियों में अपने विचारों को स्वेच्छापूर्वक व्यक्त न कर पाने की स्थिति भी बनी हुई है। यह जनवादी केंद्रीयता व सामूहिक कार्य पद्धति के लिए अड़चन बना हुआ है।

स्वस्फूर्तता:

केंद्रीय कमेटी व विभिन्न पार्टी कमेटियों के कामकाज में, रोजवारी प्लानिंग में, कार्य पद्धतियों एवं कार्यशैली में केंद्रीय कार्यभार को महत्व न देकर एक कार्य छोड़कर दूसरे में जाना, देशव्यापी आंदोलन को समन्वित कर सभी राज्यों में फौरी व प्रधान कर्तव्यों पर केंद्रित करते हुए काम करने में स्वस्फूर्तता पनपने के कारण आंदोलन को नुकसान पहुंच रहा है। दुश्मन के हमले के चलते विगत की तरह सीसी अपने कामकाज को समन्वित ढंग से नहीं कर पा रही है। इस वजह से यह समस्या और जटिल बन गयी है। कमेटियों के लिए आवश्यक सही मशीनरी का अभाव भी स्वस्फूर्त कार्यशैली के लिए राह बना रहा है।

उदारतावाद:

कमेटी में हमारी राजनीतिक, सांगठनिक लाइन पर यदि एकता हासिल करना है तो पार्टी में सैद्धांतिक, राजनीतिक व सांगठनिक क्षेत्रों में संघर्ष—एकता की जरूरत होती है। परंतु हमारी पार्टी कमेटियों में इस उसूल पर आधारित होकर किए जाने वाले संघर्ष को कमेटी सदस्य उतना महत्व नहीं दे रहे हैं। उसी तरह, पार्टी कमेटी सदस्यों में व्यवहारिक तौर पर नजर आने वाले कुछ मामलों में मौजूद गलतियां सैद्धांतिक व राजनीतिक क्षेत्रों में किस तरह परिलक्षित हो रही हैं, इन्हें सामने रखकर संघर्ष करने में उदारतावाद जारी है। इससे भी कमेटियों में कृत्रिम एकता दिख रही है। इससे लंबे समय में पार्टी कमेटी व्यवस्था को जंग लग जाती है। स्वस्थ आंतरिक संघर्ष के लिए मंच के रूप में कमेटियों को तैयार करना चाहिए। तभी कमेटियों में मौजूद गंदगी को साफ कर उन्हें नयी नवेली बना सकते हैं। इसे मुख्य कार्यभार मानना चाहिए।

अध्ययन में कमी की वजह से सही निर्णय लेने में, लिए गए निर्णयों को

अमल करने में, सक्रिय ढंग से व्यवहार में ले जाने में, आलोचना-आत्मालोचना में, शहरी कार्य में, जन कार्य में एवं सैनिक क्षेत्र में संगठितीकरण करने में भी एवं हमारे विचारों व कार्य पद्धतियों में बदलाव न ला पाने में भी यानी परिस्थितियों व आवश्यकताओं के अनुरूप कमेटियों, सदस्यों को रूपांतरित करने में उदारतावाद अड़चन बन रहा है। मुखबिरों, भीतरघातियों को चिह्नित कर दंडित करने में भी यही रुझान व्यक्त हो रहा है।

नौकरशाही:

अपनी राय दूसरों पर थोपने, दूसरों की राय न सुनने, कैंडरों का ख्याल न रखने, आलोचना करने वालों को बाजू में रखने, अपने मातहतों के कार्य संपादन में हुई गलतियों को बताते समय जिम्मेदार नेता की हैसियत से आलोचना करने की बजाए हर हमेशा आलोचना रखने, पार्टी नियमों व अनुशासन पद्धतियों से कैंडरों को लैस कर उनमें पनपने वाले गलत रुझानों व पद्धतियों को सुधारने की बजाए आदेशों के जरिए हल करने आदि तरीकों में यह रुझान व्यक्त हो रहा है।

संकीर्णतावाद:

जनता के साथ एकताबद्ध होने में एवं जन दिशा-वर्ग दिशा का पालन करने में यह रुझान व्यक्त हो रहा है। उन लोगों से एकताबद्ध न होना जो हमारा विरोध करते हैं, समूची जनता की बजाए उन्हीं पर निर्भर होना जो हमसे सहमत हैं, विरोध करने वालों के प्रति नकारात्मक रुख अपनाने के चलते पार्टी में यह रुझान समष्टि एकता को भंग कर जनता के साथ हमारे संबंधों को कमजोर कर रहा है। इस तरह वह नेताओं को कतारों से व पार्टी को जनता से दूर कर रहा है।

व्यक्तिवाद:

हमेशा स्वयं को केंद्र में रखकर सोचना, अपनी राय को कमेटी पर थोपना, जब ऐसा संभव नहीं होता है तो चिढ़-चिढ़ा जाना, अपनी पीट तप-तपाना, अपने से सहमति न जताने वालों के प्रति नकारात्मक रुख के साथ व्यवहार करना, किसी कमेटी या फार्म के मुताबिक न चलना, दूसरों पर अनुशासन थोपना लेकिन स्वयं को अनुशासन से परे समझना आदि रूपों में

यह रुझान व्यक्त होता है.

उपरोक्त रुझान देश भर की पार्टी एवं विभिन्न राज्यों में खुले तौर पर कार्यरत जन संगठनों में मौजूद पार्टी में भी जारी हैं. जन संगठनों में पार्टी कमेटी व्यवस्था के मजबूत न होने के कारण ये रुझान और भी मजबूती से जारी हैं. इनमें विशेषकर व्यक्तिवाद, व्यक्तिगत प्रतिष्ठा के लिए दौड़-धूप करना, संकीर्णतावाद, नौकरशाही, उदारतावाद आदि रुझान जारी हैं.

इन विषयों का अवलोकन करने से यह साफ होता है कि इन 14 सालों में भूल सुधार और बोल्शेवीकरण में हालांकि हमारी पार्टी ने कुछ प्रयास किया इसके बावजूद अभी भी गैर-सर्वहारा वर्गीय रुझान जारी हैं. यद्यपि आलोचना-आत्मालोचना को जीवंत ढंग से संचालित करने व भूल सुधार को निरंतर जारी रखने के जरिए ही गलत रुझानों को कम किया जा सकता है. उस हेतु हमें एक बार और हमारे अनुभवों पर आधारित होकर भूल सुधार और बोल्शेवीकरण अभियानों को अपनाकर पार्टी को जनदिशा में आगे बढ़ाने लायक रूपांतरित करेंगे.

इन 14 सालों की समयावधि में पार्टी को प्राप्त अनुकूलताओं और प्रतिकूलताओं पर नजर दौड़ाते हैं.

अनुकूलताएं:

1. एकता कांग्रेस के निर्देश अनुसार तमाम पार्टी की सैद्धांतिक व राजनीतिक स्तर को बढ़ाने के लक्ष्य से मौलिक दस्तावेजों पर; पालिसी पेपरों पर; मुख्य दस्तावेज — 'सर्वहारा के अंतराष्ट्रीय संगठन गठित करने पर हमारी पार्टी का दृष्टिकोण', 'चीन एक नयी सामाजिक-साम्राज्यवादी शक्ति है! वह विश्व पूंजीवाद-साम्राज्यवादी व्यवस्था का अभिन्न अंग है!', 'भारत देश में जाति का सवाल-हमारा दृष्टिकोण' पर; केंद्र व राज्य कमेटियों द्वारा जारी किए गए सर्कुलर व लेटर पर शिक्षा संचालित की गयी. राजनीतिक शिक्षा दिलाने के लिए रीजिनल राजनीतिक पाठशालाओं को गठित किए गए. सिलाबसों को तैयार कर उपलब्ध करायी गयी. पार्टी में गैर-सर्वहारा रुझानों को सुधारने के लिए संचालित शुद्धीकरण अभियान के तहत केंद्र व

राज्य कमेटियों द्वारा जारी किए गए सर्कुलर व अन्य साहित्य पर अध्ययन, आत्मालोचनाएं—आलोचनाएं चलाए गए. सीसी का आह्वान को लेकर बोल्शेवीकरण अभियान के तहत सीआरबी व ईआरबी इलाकों के राज्यों में एक क्रम पद्धति में पार्टी कैंडिडों को सर्वहारा राजनीति से ढालने (proletarianisation) के कार्यक्रम हुए. इसके तहत कुछ इलाकों में लीडरशिप ट्रेनिंग कार्यक्रम, फील्ड ट्रेनिंग कार्यक्रम हुए. चार क्रांतिकारी वर्षगांठ मनाने के सीसी आह्वान के तहत हमारे आंदोलन पर, मार्क्सवाद—लेनिनवाद—माओवाद पर एवं अंतर्राष्ट्रीय क्रांतियों के विषयों पर जनता एवं पार्टी को शिक्षा दी गयी. हमारी पार्टी ने जमीन को केंद्र बनाकर जारी विस्थापन विरोधी आंदोलनों को सही क्रांतिकारी दिशा उपलब्ध करायी. पुलिस और माओवादियों के बीच जनता पिसने के वर्ग समर्पणवादी, संशोधनवादी दलीलों को, गांधीवाद व सुधारवाद को राजनीतिक रूप से पर्दाफाश करती आयी है. नेपाल में प्रचंड—भट्टाराय के विश्वासघात गुट के नेतृत्व में सीपीएन (एम) द्वारा सामने लायी गयी आधुनिक संशोधनवादी लाइन के खिलाफ दृढ़ता से संघर्ष किया; बाब अवाकियन के नेतृत्व में आरसीपी (यूएस) ने 'नया संश्लेषण' के नाम पर सामने लायी गयी आधुनिक संशोधनवादी सिद्धांत 'अवाकियनिज्म' को सैद्धांतिक रूप से पर्दाफाश किया. हमारी पार्टी से भाग कर दुश्मन के सामन घुटने टेकने वाले विश्वासघातियों के अवसरवादी दलीलों का कारगर जवाब दिया.

2. एकता पार्टी ने भारत की नवजनवादी क्रांति का सक्षम रूप से नेतृत्व प्रदान के लिए तीन जादुई हथियारों को मजबूत करने हेतु प्रयास करते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त की. पार्टी ने अपेक्षाकृत गुणवत्ता में व मात्रा में मजबूत हुई. केंद्र व राज्य कमेटियां मजबूत हुई. सीसी द्वारा बनाए गए विस्तार परिप्रेक्ष्य के तहत ओड़िशा के कुछ इलाकों में, पश्चिमी घाटियों के ट्राइजंक्शन में और एमएमसी इलाके में आंदोलन का विस्तार हुआ. वहां राज्य स्तर के कमेटियां निर्माण होकर काम कर रही हैं. समूची पार्टी ने डीके व बीजे को मुक्तांचल

के रूप में विकसित करने के केंद्रीय कर्तव्य को हासिल करने कुछ हद तक दृढ़तापूर्वक प्रयास किया।

3. सीआरबी और इआरबी के विस्तारित बैठकों का आयोजित करने और विभिन्न स्पेशल एरिया/स्पेशल जाने/राज्य प्लीनमें, जोन/डिविजन/जिला व एरिया प्लीनमें आयोजित करने द्वारा आंदोलनों की समीक्षा कर आंदोलन की स्थिति का आकलन कर, बदली परिस्थितियों के मुताबिक नए कर्तव्य लिए गए. इन प्लीनमों में ऊपर से नीचे तक पार्टी कमेटियों को कंसालिडेशन करने में कुछ तरक्की हासिल की गयी.
4. सैनिक कमिश्नों और कमांडों को मजबूत करते हुए मुक्तांचलों स्थापना की दिशा में रणनीतिक इलाकों में छापामार युद्ध तेज करने का प्रयास किए. हमारी पार्टी व क्रांतिकारी आंदोलन को पूरी तरह उन्मूलन करने के लिए एलआईसी रणनीति-कार्यनीति के तहत दुश्मन द्वारा चलाए गए प्रतिक्रांतिकारी रणनीतिक 'ऑपरेशन ग्रीनहंट' और 'समाधान व प्रहार' हमलों का मुकाबला करते हुए स्थानीय संसाधनों पर आधारित होकर बदलती परिस्थितियों के मुताबिक नयी कार्यनीति बनाते हुए छापामार युद्ध चलाने में अनुभव प्राप्त किए. जहां दलाल शोषक-शासक वर्गों की राजसत्ता को ध्वस्त किए, वहां चार उत्पीड़ित वर्गों को प्रतिनिधित्व करने वाली राजसत्ता के इकाइयों के रूप में क्रांतिकारी जन कमेटियों (आर.पी.सी.) और छापामार आधारों की स्थापना की. उन्हें संचालित करने में कुछ अनुभव हासिल किए. एक वैकल्पिक नवजनवादी क्रांतिकारी सरकार के एजेंडे को देश राजनीतिक पटल पर लाए. रीजनल ब्यूरो, स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्य कमेटियों के प्रयास की वजह से कुछ शहरों में काम में कुछ तरक्की हासिल की. इस तरह केंद्रीय कर्तव्य हासिल की दिशा में कुछ अग्रगति प्राप्त की. हमारा देश की ठोस परिस्थितियों में दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन को अन्वय कर सकारात्मक परिणाम हासिल करने में कुछ अनुभव हासिल किए. भविष्य में हमारे लक्ष्य हासिल करने के लिए ये अनुभव उपयोगी होगी.

5. जनक्षेत्र में, कृषि क्रांति के कार्यक्रम के तहत दैनंदिन समस्याओं के साथ 'जल-जंगल-जमीन-इज्जत-अधिकार' के नारे के साथ बड़े पैमाने पर किसानों को गोलबंद किए. जमीन व विस्थापन समस्याओं पर आंदोलन चलाए. क्रांतिकारी भूमि सुधार लागू किए. कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चों का गठन कर लालगढ़, नारायणपटना जैसे व्यापक जनांदोलनों को विकसित करने में कुछ अनुभव हासिल किए. पृथक तेलंगाना राज्य के आंदोलन में सक्रिय रूप से हिस्सा लेकर नेतृत्व प्रदान करने में पहलकदमी करते हुए, राज्यहिंसा, हिंदुत्व फासीवाद के खिलाफ, विभिन्न समस्याओं पर कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चों को गठित कर काम करते हुए उस तरह के आंदोलनों में अपनायी जाने वाली कार्यनीति पर कुछ अनुभव हासिल किए.
6. हमारी केंद्रीय कमेटी ने अंतर्राष्ट्रीय विभाग की स्थापना की थी. अंतरराष्ट्रीय काम से संबंधित मार्गदर्शन बनाए. कुछ देशों की माओवादी पार्टियों के साथ नजदीकी संबंध जारी रखी. सिकंपोसा को सीपीएन (एम) का विश्वासघात तक उसे सक्रिय रूप से काम करवाने का प्रयास किया. विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर क्रांतिकारी पार्टियों-संस्थाओं के साथ मिलकर संयुक्त प्रेस वक्तव्य जारी किए. कुछ अंतर्राष्ट्रीय बैठकों में हमारे प्रतिनिधि शामिल हुए. फिलिपीनी क्रांति के समर्थन में हमारी पार्टी ने भाईचारा सप्ताह मनाया. इंटरनेशनल कार्य से संबंधित मार्गदर्शन बनाया गया. अंतर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना के बारे में हमारा रुख स्पष्ट करते हुए मार्च, 2017 में दस्तावेज बनायी गयी. हमारा देश की क्रांति पर ग्रीनहंट अभियान के नाम पर शासक वर्गों द्वारा जारी हमले की निंदा करने अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा संस्थाओं से आह्वान किया. कई माओवादी पार्टियों व संस्थाओं ने विरोध प्रदर्शनों का निर्माण किया. इन्होंने लगभग डेढ़ दशक से जनयुद्ध की मदद में खड़े हैं और भाईचारा आंदोलनों का निर्माण कर रहे हैं.

प्रतिकूल विषयः

1. वर्तमान युद्ध परिस्थिति के मुताबिक तथा तय कार्यभारों के अनुरूप एवं बढ़ते दुश्मन के हमले को कारगर ढंग से मुकाबला करने के लिए पार्टी को सुदृढ़ नहीं कर सके. सैद्धांतिक अध्ययन में, ठोस समस्याओं पर अध्ययन में, बदलते हालात के अनुसार राजनीतिक व सैनिक कार्यनीति को विकसित करने में व परिस्थिति में अनुरूप कार्य पद्धतियों में आवश्यक बदलाव करने में पिछड़ रहे हैं.
2. पार्टी कमेटियों में जनयुद्ध का ओरिएंटेशन पर्याप्त नहीं है. कुछेक नेतृत्वकारी कॉमरेड्स युद्ध गतिविधियों से दूर रह रहे हैं. उन्हीं क्षेत्रों तक सीमित हो रहे हैं जिनका वे जिम्मेदार हैं. इसके फलस्वरूप विभागवाद का शिकार हो रहे हैं. विभिन्न स्तरों के जन संगठनों में मौजूद पार्टी निर्माणों को पर्याप्त मात्रा में जनयुद्धोन्मुख (जनयुद्ध के ओरिएंटेशन से लैस) नहीं कर पाए हैं. इसमें केंद्र व राज्य कमेटियों की ओर से राजनीतिक प्रयास कम है.
3. सीसी से एसी तक सभी कमेटियां हालांकि आलोचना-आत्मालोचना की पद्धति का अनुसरण करती हैं, लेकिन उसे जीवंत तरीके से संचालित नहीं कर पा रही हैं. नतीजतन, पार्टी में गैर-सर्वहारा रुझानों से सही रूप से बाहर निकल नहीं पा रहे हैं. आंदोलन की सफलताओं और कमी-कमजोरियों का अध्ययन करने में व ठोस विश्लेषण करने में कमियों की वजह से परिस्थिति के उचित कार्यनीति नहीं अपना पा रहे हैं, जिससे व्यवहार में हमारे आंदोलन अस्थायी रूप से पीछेहट का शिकार हुआ. कमेटियों में वैचारिक एकता हासिल करने में, लिए गए निर्णयों का दृढ़संकल्प के साथ अमल करने में, पार्टी कमेटियों को उस तरह ढालने में उन्नति हासिल नहीं कर पा रहे हैं. विशेषकर, डीसी व एसीयों का पहलकदमी व स्वतंत्रता उचित मात्रा में नहीं बढ़ाने की वजह से वे ऊपरी कमेटियों पर आधारित होकर अपना स्तर में सक्षम रूप से व पहलकदमी के साथ काम नहीं कर पा रहे हैं. पार्टी में सर्वहारा अनुशासन तथा कम्युनिस्ट सांस्कृतिक मूल्य ढलान पर हैं. व्यक्तिवाद रुझानों की वजह से कमेटियों में

अनेकता, खींचतान भी सामने आ रहे हैं। कमेटी बैठकों के आयोजन को बिजिनेस पद्धति में जैसाकि मार्क्सवाद के महान शिक्षकों ने बताया, करने के बजाए उपयुक्त तैयारियों के बगैर यथेच्छ तरीके से अधिक समय चलाने की वजह से दुश्मन के हमले का शिकार होकर नुकसान होने के खतरे बढ़ रहे हैं।

4. दुश्मन के बहुआयामी हमले के बढ़ने के क्रम में पार्टी की प्राथमिक इकाइयों की संख्या बहुत कम हो गयी। पार्टी सदस्यों की चेतना, क्षमता कम है। राज्य दमन के साथ-साथ ऊपर से पर्याप्त राजनीतिक व सांगठनिक कार्य न करना ही इस स्थिति के उत्पन्न होने का प्रधान कारण है।
5. दुश्मन का हमला तीव्र होने के क्रम में विभिन्न स्तरों के कामरेड काफी मात्रा में जो सैद्धांतिक व राजनीतिक तौर पर कमजोर हैं, कठिन परिस्थितियों व बलिदानों के लिए तैयार न होकर, आंदोलन की आवश्यकताओं के मुताबिक स्वयं को रूपांतरित करने में विफल होकर, ढुलमुलपन का शिकार होते हुए, दुश्मन के सामने घुटने टेक दिए या पार्टी से चले गए। अवसरवादी तरीकों में पार्टी की राजनीतिक लाइन पर हमला करते हुए दुश्मन के शिविर में शामिल हो गए हैं।
6. पार्टी कैडरों व श्रेणियों के सैद्धांतिक व राजनीतिक स्तर को बढ़ाने के लिए जनता की राजनीतिक चेतना को बढ़ाने के लिए विभिन्न पत्रिकाओं को सही समय पर तैयार कर ला नहीं पा रहे हैं।
7. मैदानी इलाकों में और शहरों में उचित कार्यनीति अपनाकर जनांदोलनों को विकसित करने में बहुत पिछड़े गए।
8. कमेटियों द्वारा गुप्त कार्यपद्धति को उपयुक्त महत्व न देने के कारण पार्टी के राज काफी हद तक खुल रहे हैं। गुप्त रूप से रखने वाले प्रस्तावों को कोड का पालन कर लिखने में, गुप्त रिकॉर्डों को सुरक्षित रखने में व्याप्त लापरवाही की वजह से एवं उन्हें हार्ड डिस्क, पेन ड्राइव जैसे इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं में गुप्त तरीके से रखने में लापरवाही की वजह से, वे दुश्मन के हाथों में जा रहे हैं, पार्टी व आंदोलन के

लिए बहुत नुकसान हो रहा है.

“क्रांतिकारी संघर्ष में कुछेक समय अनुकूल परिस्थितियों की अपेक्षा कठिनाइयां ही ज्यादा मात्रा में रहेंगी. इसलिए अंतरविरोधों में वे ही प्रधानांश बनेंगे. जबकि प्रतिकूल परिस्थितियां गौण होंगे. लेकिन क्रांतिकारी अपने प्रयत्नों के जरिए कठिनाइयों को एक-एक करके पार कर अनुकूल परिस्थितियों को हासिल कर सकते हैं. इस तरह प्रतिकूल परिस्थितियां हटकर अनुकूल स्थिति आती है.” (माओ, अंतरविरोध, तेलुगु, पृष्ठ 437.)

आत्मगत प्रयास को बढ़ाने के लिए हमें कौनसी पद्धति अपनानी चाहिए? ‘नवोदित विषय जो भी हो अपने विकास के क्रम में कठिनाइयों व धक्कों का सामना करता है.’

रुकावटें व गलतियां विकास के क्रम में सहज हैं. हम हमारी गलतियों की आलोचना का स्वागत करते हैं. इन आलोचनाओं से सीखने की आशा रखते हैं. तद्वारा हमारे व्यवहार को हम सुधार सकते हैं. अच्छे क्रांतिकारियों के रूप में अपने आपको तब्दील कर सकते हैं. हमारा लक्ष्य है, प्रधानतया जनता की सेवा करना. जनयोद्धा के तौर पर हमें स्वयं को मजबूत करने में एक क्षण के लिए भी हिचकिचाते नहीं हैं. उस हेतु कुछ भी करने के लिए तैयार रहते हैं. इन कम्युनिस्ट मूल्यों को हमें मार्क्सवाद—लेनिनवाद—माओवाद के सिद्धांत से सीखना चाहिए.

व्यवहार में इस पद्धति की पड़ताल करने हमें व्यवहार में उतरना होगा. युद्ध में हमें ज्यादा सक्रिय व गतिशील रहना चाहिए. हमारी पहलकदमी को 100 फीसद बढ़ानी चाहिए. इनके बिना हम दुश्मन का डटकर मुकाबला नहीं कर सकते हैं. सृजनात्मक पद्धति में, सही तरीके से एवं तय समय में निर्धारित लक्ष्य को हासिल करने के लिए दृढ़संकल्प के साथ काम करना चाहिए. गैर—सर्वहारा रुझानों के साथ संघर्ष करते हुए वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति, दुश्मन की परिस्थिति एवं हमारी आत्मगत ताकत का सही आकलन लगाकर उनके मुताबिक हमारे सामने के पार्टी कार्यभारों को पूरा करने कथनी, करनी व कार्य में एकरूपता हासिल करते हुए काम करना चाहिए. तभी हम क्रांतिकारी आंदोलन को अस्थायी पीछेहट की स्थिति से अग्रगति में ले जा सकते हैं.

3.सैनिक क्षेत्र

जनवरी, 2007 में संपन्न हमारी पार्टी की एकता-9वीं कांग्रेस द्वारा बनाए गए फौरी, प्रधान व केंद्रीय कर्तव्यों को पूरा करने में यहां सैनिक क्षेत्र में जो कार्य हमने किया, उसकी समीक्षा करते हैं. जैसाकि पहले ही बताया गया, इस 14 साल क्रांतिकारी आंदोलन को दो चरणों में (2007 से 2011 तक पहला चरण और 2012 की शुरुआत से 2020 तक दूसरा चरण) विभाजित कर समीक्षा करते हैं.

कार्यनीतिक जवाबी आक्रामक अभियान (टीसीओसी)

कांग्रेस के बाद कांग्रेस निर्देशित कर्तव्यों को हासिल करने के तहत सीसी/सीएमसी/विभिन्न रीजिनल ब्यूरो, एसएसी/एसजडसी/एससी, एसएएमसी/एसएमसी, विभिन्न स्तरों के कमेटियों व कमांडों द्वारा पिछले 14 सालों में कई टीसीओसीयां चलाए गए.

2007 में सीएमसी ने देशव्यापी टीसीओसी अपनाने का आह्वान दिया था. इस आह्वान के मुताबिक देश के विभिन्न छापामार जोनों, लाल प्रतिरोध इलाकों में टीसीओसी एवं प्रतिरोध कार्रवाइयां जारी रहीं. इनमें देशभर में 207 पुलिस जवानों का हमारी पीएलजीए ने उन्मूलन किया. दुश्मन से 200 से ज्यादा हथियार जब्त किए. बड़े पैमाने पर गोली-बारूद जब्त की. यह टीसीओसी डीके, बीजे, एओबी, एपी, पश्चिम बंगाल, उयू ओडिशा प्रांतों में संचालित हुआ.

इस अभियान में डीके में रानीबोदिली शार्ट सरप्राइज एटाक, उरपलमेट्टा अपार्च्युनिटी एंबुश, कुदूर एंबुश; बीजे में बोकारो जिले के खासमहल रेड्ड, रोहतास जिले के राजपूर-बघैला जुड़वे हमले, जमुई, लोहरडग्गा, लातेहार जिलों में हुए एंबुश; एओबी में मल्लमपेटा एम्बुश; एमवी-79 हमला, अकाल हमले, उयू में रीगा, अवतार नगर हमले; एपी में पूर्व मुख्यमंत्री जनार्धन रेड्डी पर एम्बुश, पश्चिम बंगाल में और ओडिशा में हुई कुछ छापामार कार्रवाइयों ने देशव्यापी एवं अच्छा प्रभाव डाला.

केंद्रीय कार्यभार के तहत ही केंद्र सरकार द्वारा प्रारंभ देशव्यापी हमले का

प्रतिरोध करते हुए हराने के लक्ष्य से 2008 के प्रारंभ से देशभर में कई प्रतिरोधी कार्रवाइयां, नयागढ़, झाझा जैसे कुंजीभूत छापामार ऑपरेशंस के साथ अप्रैल से जुलाई तक लाल प्रतिरोध इलाकों, छापामार जोनों में टीसीओसी जारी रही। इस साल भर में संचालित देशव्यापी प्रतिरोधी कार्रवाइयों एवं टीसीओसियों में 246 पुलिस बलों का उन्मूलन करके 237 को घायल किया गया। दुश्मन बलों से 450 हथियार एवं 42 हजार से ज्यादा कारतूस हमने जब्त किए।

गुरिल्ला बटालियन स्तर पर (200–300) बलों को गोलबंद कर छापामार युद्ध कार्रवाइयों को संचालित करने में हम उस साल (2008) और भी प्रगति हासिल की। नयागढ़ ऑपरेशन, झाझा रेइड, गुनिकिराल्ला, मुरलीगुडा एंबुशों में 2–3 कंपनियों के बलों को गोलबंद कर युद्ध कार्रवाइयों को अंजाम दिया गया। कमांडो बलों के उन्मूलन में अच्छा अनुभव प्राप्त किया। ओड़िशा में गोसामा, एओबी में बलिमेला, तेल्लाराई, डीके में मोदुगपाल, चेरीबेड़ा, कोरेपल्ली, मर्दापाल, बंजरघाटी, बीजे में दुलवाडीह–पिपराडीह एरिया एम्बुश, पूंडीधिरी, रानीगंज बाजार, पारसनाथ, राहे, पश्चिम बंगाल में दहीजोडी, बुरुडी बांध, झारग्राम, उत्तर छत्तीसगढ़ में समरीपट एंबुशों व प्रतिरोधी कार्रवाइयों में अर्धसैनिक बलों व विभिन्न राज्यों के कमांडो बलों को धक्का पहुंचाया।

सीएमसी, रीजनल ब्यूरोओं, स्पेशल एरियाओं/स्पेशल जोनों/राज्य कमेटियों के निर्णयों के अनुरूप 2009, 2010 सालों में टीसीओसियां एवं प्रतिरोधी कार्रवाइयां संचालित हुईं। इनमें डीके में मरकानार, मिनपा-1, आसिरगुड़ा, मांधगिरी, बारसुर, टवेटोला, कोकावाड़ा, मदनवेड़ा, सिंगानमडुगु, लहेरी, मुकरम, चिंगवरम, पेदाकोड़ेपाल, कोंगेरा आदि कार्रवाइयों में 361 पुलिस बलों का उन्मूलन व 184 को घायल कर 231 हथियार जब्त किए गए। बीजे में बोकारों, महुलियाटांड, हेसला, कोइलकेरा, कोदवाडीह बिड़वा, सोनो बाजार, विष्णुपुर, कजरा–लखीसराय, टोल प्लाजा, ममाइल, सारंडा, मनोहरपुर आदि कार्रवाइयों में 145 का उन्मूलन व 160 को घायल कर 126 हथियार जब्त किए गए। पश्चिम बंगाल में सिलदा रेड, रामगढ़ आदि कार्रवाइयों में 65 पुलिस बलों का उन्मूलन व 11 को घायल करके पुलिस एवं अर्ध-सैनिक बलों से 82 हथियारों को जब्त किया गया। सीपीएम के गुंडों से 47 हथियार एवं हर्मद वाहिनी व अन्यान्य प्रतिक्रांतिकारियों से 145 देशी हथियारों सहित 2 इन्सास

रायफल जब्त किए गए. एओबी में नालको (दामनजोड़ी) रेड, पालुर, पोतकल, ढाईगुड़ा, मंत्रियाबा आदि कार्रवाइयों में 45 पुलिस बलों का उन्मूलन व 53 को घायल किया गया और 13 बंदूकें जब्त की गयी. ओडिशा में 6 पुलिस जवानों का उन्मूलन किया गया. 3यू में मोहब्बतपुर, श्यामपुर भट्टा आदि कार्रवाइयों में 10 पुलिस का उन्मूलन कर, 4 को घायल किया गया. उत्तर तेलंगाना में वन विभाग वालों पर हमला कर एक हथियार जब्त किया गया. गोंदिया डििविजन में एक पुलिस जवान का उन्मूलन किया गया. कर्नाटक में दो एंटीनक्सल पुलिस को घायल किया गया. कुल मिलाकर 623 पुलिस, अर्ध-सैनिक व कमांडो बलों का उन्मूलन, 405 को घायल किया गया एवं 502 हथियार जब्त किए गए.

2011 में पीएलजीए द्वारा संचालित विविध टीसीओसी व प्रतिरोधी कार्रवाइयों में डीके में सनबाइल, गट्टम, मेट्लाचेरुवु; बीजे में धरधरिया, छिपादोहर, गुमला, पलामू, काठीकुंड, लातेहार, सतनदिया, मरंगबुरु, जेलंगा; एओबी में वनकाडिल्ली, पश्चिम बंगाल में दैनमारी, ओडिशा में कालिंगबाड़ी, सोनेपुर घाटी, कर्नाटक में कलमंजा आदि कार्रवाइयों में 194 पुलिस व अर्धसैनिक बल मारे गए, 243 घायल हुए, जबकि 63 हथियार व 1736 कारतूस जब्त हुए.

एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित फौरी, प्रधान व केंद्रीय कार्यभार को हासिल करने इन 5 सालों के दौरान विभिन्न गुरिल्ला जोनों व लाल प्रतिरोध इलाकों में जारी छापामार युद्ध के अनुभवों के बारे में विशेष रूप से बताना आवश्यक है.

एकता कांग्रेस निर्देशित केंद्रीय कार्यभार को हासिल करने के तहत डीके में इन 5 सालों में छापामार युद्ध को तीव्रता के साथ जारी रखते हुए उसे उच्च स्तर में विकसित किया गया. इस क्रम में पीएलजीए ने दुश्मन की हरेक उस कार्यनीति को विफल करती आयी जिसे वह अपनाते आया. सलवा जुडुम अभियान को हमने 2009 तक ही हराया था. मोटार साइकिलों पर तेजी से हमलों के लिए आने की दुश्मन कार्यनीति को ध्वस्त किया. अंदरूनी इलाकों में पैदल घुसकर गश्त, उन्मूलन कार्रवाइयों को अंजाम देने वाली दुश्मन कार्यनीति का उरपलमेट्टा एनसर्किलमेंट हमले से शुरु करके इस तरह के और कुछ एनसर्किलमेंट एंबुशों के जरिए मुकाबला करते हुए दुश्मन के

अंदरूनी एरिया ऑपरेशंस को बहुत समय तक रोककर रखा गया था। कॉरपेट सेक्युरिटी कार्यनीति द्वारा उसके आस-पास के इलाकों को अपने नियंत्रण (होल्ड) में करने के लिए किए जाने वाले दुश्मन के प्रयत्नों को काफी समय तक विफल किया गया। सिलसिलेवार कई बड़े एंबुशों को अंजाम देकर युद्ध क्षेत्र का विस्तार कर छापामार आधारों पर दुश्मन द्वारा प्रारंभ हमलों को कुछ समय तक रोक लिया गया। मुकरम एनसर्किलमेंट एंबुश के जरिए दुश्मन के एक कंपनी बलों का उन्मूलन कर हमने उच्च स्तर का अनुभव हासिल किया। यह हमला छापामार आधार इलाकों के बचाव में कुंजीवत बना रहा। इन पांच सालों के दौरान पार्टी नेतृत्व में पीएलजीए द्वारा संचालित टीसीओसी व प्रतिरोधी कार्यक्रमों के चलते जब का तब दुश्मन के हमले का प्रतिरोध करते हुए, पीछे धकेलते हुए जन आंदोलन, जनता, छापामार आधार इलाकों, पार्टी नेतृत्व एवं बलों को बचाकर दंडकारण्य आंदोलन को विकसित किया।

बीजे में इन पांच सालों के समय में दुश्मन के चौतरफा हमले को मुकाबला करते हुए उच्च स्तर में छापामार युद्ध को तेज करने का प्रयास किए। प्रतिक्रांतिकारी सेंद्रा अभियान को हरा दिए। दुश्मन के हमले को मुकाबला करना प्लाटून संख्या के साथ असंभव होने के बाद कंपनी व बटालियन फारमेशनों में पीएलजीए के बल एंजग होते रहे हैं। कई रेड, एम्बुश (पैदल आने वाले, मोटर साइकल पर आने वाले दुश्मन पर एम्बुश, गाड़ियों पर डिमोलिशन एम्बुश, नाइट एम्बुश) को अंजाम दिए गए। इनके अलावा ट्रेन एक्शन, कोर्ट पर एक्शन, जेल ब्रेक, हेलिकॉप्टरों पर भी 1, 2 बार सफलतापूर्वक हमले किए गए। इंप्रूवाइज्ड विस्फोटक को प्रयोग करना शुरू कर एक नया और महत्वपूर्ण अनुभव हासिल किए गए। इसके जरिए दुश्मन के माईनप्रूफ गाड़ियों को भी ध्वस्त करने में कामयाब हुए। इससे दुश्मन का मनोबल को अस्थायी रूप से ही सही गिरा दिए। टीपीसी, एसपीएम, जेपीसी जैसे प्रतिक्रांतिकारी खुफिया गिरोहों पर गुरिल्ला कार्रवाइयां चलाकर उसके मुख्य सरगनाओं और कुछ मुख्य जन उत्पीड़क राजनेताओं को उन्मूलन किए। कुल मिला कर, पार्टी के मुख्य नेतृत्व को और बहुत हद तक पीएलजीए बलों को बचाते हुए, दुश्मन के हमलों को एक हद तक रोक पाए। क्रांतिकारी आंदोलन को पूरी तरह उन्मूलन करने के दुश्मन के लक्ष्य नाकाम करते आए।

एओबी में अत्यंत क्रूर आंध्रप्रदेश ग्रेहाउंड्स बलों पर बलिमेला जलाशय में कूच के दौरान सरप्राइज हमला कर बड़े चोट पहुंचाया गया. ओड़िशा में कुख्यात एसओजी बलों को तेल्लराइ के पास माइनप्रूफ गाड़ी (एमपीवी) पर हमला कर उन्मूलन किया गया. नारायणपटना इलाके में जारी जमीन आंदोलन में पुलिस व अर्धसैनिक बलों की मदद से घमंड दिखाने वाली सामंती शक्तियों के खिलाफ हमारे पीएलजीए बल ने उत्पीड़ित जनता का साथ देकर जमीन की जब्ती और वितरण तथा फसल कटाई में मुख्य भूमिका अदा की.

पश्चिम बंगाल में लालगढ़ जनउभार का पीएलजीए बलों ने साथ देकर सामाजिक फासीवादी सीपीएम नेताओं, उस पार्टी के नेतृत्वाली हर्मदवाहिनी आदि गुंडा बलों को बड़ी संख्या में उन्मूलन किया गया. सिलदा रेड आदि छापामार कार्रवाइयों में अर्धसैनिक बलों का सफाया किया गया.

3यू स्पेशल एरिया में रीगा, अवतार नगर जैसे छापामार युद्ध कार्रवाइयों को और बड़े जमींदारों की उन्मूलन कार्रवाइयों को अंजाम देकर वर्गसंघर्ष को विकसित करने के प्रयास किए गए.

महाराष्ट्र (बालाघाट-गोंदिया), ओड़िशा, तेलंगाना, उत्तर छत्तीसगढ़, कर्नाटक इलाकों में एक तरफ विभिन्न मुठभेड़ों में स्पेशल पुलिस व अर्धसैनिक बलों के हमलों का प्रतिरोध करते हुए ही छोटे-छोटे कार्रवाइयों द्वारा छापामार युद्ध चलाते हुए दुश्मन के बलों को विकेंद्रीकृत किए गए.

सैनिक क्षेत्र में इन पांच सालों में सकारात्मक पहलू

1. कांग्रेस निर्देशित कार्यभारों को हासिल करने के तहत सीसी/सीएमसी के निर्णय के मुताबिक हमने 2007 में सेंट्रल व ईस्ट्रन रीजनल कमानों का गठन किया.
2. मध्य रीजन में 2007 से 2010 तक हमने तीन रीजनल कंपनियों, पूर्वी रीजन में दो रीजनल कंपनियों, एक स्पेशल प्लाटून, डीके में एक गुरिल्ला बटालियन व दो कंपनियों एवं बीजे में दो नयी कंपनियों का गठन किया. डीके, बीजे के साथ अन्य छापामार जोनों में कुछेक नए एलजीएस, एलओएस, प्लाटूनों का गठन किया.

2011 की शुरुआत तक डीके में प्रधान बलों के रूप में एक गुरिल्ला

बटालियन, द्वितीय बलों के रूप में कुछ कंपनियां, कुछ प्लाटून व कुछ एलजीएस थे, बीजे में प्रधान बलों के रूप में कुछ कंपनियां, द्वितीय बलों के रूप में कुछ प्लाटून एवं कुछ एलजीएस थे जबकि बाकी राज्यों में एलजीएस, कुछ प्लाटून कंबाट युनिटों के तौर पर थीं।

3. युद्ध कार्रवाइयों में पीएलजीए बलों को संचालित करने के लिए डीके में विगत में सब जोनल कमांड, कुछ डिविजनल कमांड, एरिया कमांड व मिलिशिया कमांड थे। इन पांच सालों में कुछ नए डिविजनल कमांडों के साथ एरिया कमांड्स, एरिया मिलिशिया कमांड्स, पंचायत मिलिशिया कमांड्स गठित किए गए। बीजे में भी रीजनल, जोनल, सब जोनल, एरिया कमांड्स गठित किए गए।

बाकी राज्यों में कुछ डिविजनल कमांडों का पुनर्निर्माण किया गया, कुछ जगहों पर नए डिविजनल कमांड, एरिया कमांड गठित किए गए।

इन पांच सालों के दौरान डीके, बीजे में पीएलजीए के सहायक विभागों (तकनीकी विभाग, सैन्य प्रशिक्षण विभाग, गुप्तचर विभाग, आपूर्ति, चिकित्सा वगैरह) का गठन किया गया। एओबी में कुछ अनुबंध विभाग का गठन किया गया।

4. लालगढ़ (पश्चिम बंगाल), नारायणपटना (एओबी) में आगे आए जन संघर्षों को राज्यसत्ता के खिलाफ; पुलिस, अर्ध-सैनिक बलों के खिलाफ संघर्ष करने लायक उच्च स्तर में विकसित किया गया। भूमि समस्या और राज्यहिंसा की समस्याओं को केंद्र में रखकर छापामार युद्ध को जारी रखकर इन दो इलाकों में शोषक वर्गों की सत्ता को ध्वस्त कर स्थानीय स्तर पर क्रांतिकारी जन राज्यसत्ता की स्थापना की गयी। इस पूरी प्रक्रिया में पीएलजीए किसान संघर्षों के समर्थन में डटे रहकर सरकारी सशस्त्र बलों व प्रतिक्रांतिकारी सशस्त्र ताकतों के साथ जूझा।
5. डीके में पीएलजीए के मेइन फोर्स को केंद्र बनाकर बटालियन स्तर पर बलों को गोलबंद करते हुए किए जाने वाले बड़े हमलों में पुलिस,

अर्ध-सैनिक बलों के प्लाटून स्तर के बलों को खत्म करना साधारण रूप बन गया था. मुकरम एंबुश में अर्ध-सैनिक बलों की एक कंपनी का सफाया कर उच्च हमने स्तर का अनुभव हासिल किया.

6. बीजे में बड़ी कार्रवाइयों में दुश्मन के प्लाटून स्तर के बलों को नुकसान पहुंचाना शुरू हो गया था. बीजे में नेतृत्व को नुकसान पहुंचाने की दृष्टि से हजारों की संख्या में पुलिस, अर्ध-सैनिक बल हमारे कैंपों पर हमला करने के बावजूद हमारी पीएलजीए ने दुश्मन के साथ घंटों लड़कर उसके हमलों को परास्त कर नेतृत्व को बचा लिया गया. बड़ी संख्या में आए पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों के साथ सफलतापूर्वक लड़ने के जरिए हमने सकारात्मक अनुभव हासिल किया.
7. इस कालावधि में डीके, बीजे में उच्च स्तर का छापामार युद्ध संचालित था और चलायमान युद्ध के लक्षण युक्त कुछेक चलायमान युद्ध कार्रवाइयां संचालित की गयी.
8. एओबी, पश्चिम बंगाल (बीजेओ), 3यू, महाराष्ट्र (बालाघाट-गोंदिया), ओडिशा, तेलंगाना, उत्तर छत्तीसगढ़, पश्चिमी घाटी के गुरिल्ला जोनों/धक्का खाए हुए गुरिल्ला जोनों, लाल प्रतिरोध इलाकों में अलग-अलग स्तरों में छापामार युद्ध जारी है.
9. डीके, बीजे में इस दौरान हमारी पीएलजीए बलों ने कंबाट स्किल्स व टेक्निकल स्किल्स में विकास हासिल किया. युद्ध कार्रवाइयों में तेज मूवमेंट्स, फायर अंड मूवमेंट में पेअर्स, ग्रुप्स में आगे बढ़ने व पीछे हटने के विन्यास अपनाने, दुश्मन की तरफ तेजी से आगे बढ़ने, पलैंकों में जाकर हमलें करने, दुश्मन के नजदीक जाकर सीक्यूबी हमलें करने, दुश्मन का घेराव कर हमलें करने के रूप में कंबाट स्किल्स में विकास हासिल किया. डीके में विभिन्न किस्म के बूबी ट्रैपों, परंपरागत ट्रैपों का व्यापक पैमाने पर इस्तेमाल किया गया.
10. पश्चिम बंगाल में सिद्धू-कानू मिलिशिया, एओबी में नारायणपटना संघर्ष के समय घेनुआ वाहिनी मिलिशिया, ओडिशा में नियमगिरी

सुरक्षा सेना के नाम पर, एओबी में पितूरी सेना के नाम पर मिलिशिया का निर्माण करते हुए उसे विस्तृत बनाया गया।

11. इस दौरान छापामार युद्ध को तीव्रता से संचालित करते हुए दुश्मन के अधिकार को ध्वस्त करने के फलस्वरूप डीके, बीजे, एओबी, लालगढ़ (पश्चिम बंगाल), गोंदिया-बालाघाट में अलग-अलग स्तरों पर जन राज्यसत्ता के अंगों का निर्माण कर विस्तृत व संगठित किया गया।

इन पांच सालों की समयावधि में सैनिक क्षेत्र में नकारात्मक पहलू

1. डीके, बीजे, पश्चिम बंगाल, एओबी, ओडिशा में मिलिशिया रहने के बावजूद आज के युद्ध स्तर के मुताबिक मिलिशिया में राजनीतिक प्रयास करते हुए उसका निरंतर विस्तार करने, उसे प्रशिक्षण देने, हथियार उपलब्ध कराने, युद्ध कार्रवाइयों में विस्तृत रूप से शामिल कराने में खामियां व कमजोरियां रहीं.
2. उच्च स्तर के फार्मेशनों की स्थापना एवं विस्तार के कारण सेकंडरी फोर्स में सन्तुलता खो जाने से नेतृत्व समेत यूनितें कमजोर हुईं और नतीजतन वह पहलकदमी के साथ व स्वतंत्र रूप से दुश्मन से भिड़ने में कमजोरियां उत्पन्न हुईं. योजनाबद्ध तरीके से सेकंडरी फोर्स में नेतृत्व को विकसित करना, नए सदस्यों को भर्ती करने पर ध्यान नहीं दिया.
3. सभी प्रकार की कंबाट युनिटों में निर्धारित संख्या नहीं है. उसमें संगठितीकरण पर ध्यान नहीं देने के कारण राजनीतिक, सैनिक व सांगठनिक तौर पर कुछ कमजोरियां, अनुशासनहीनता थी.
4. मेइन फोर्स सहित पीएलजीए के एक-तिहाई बलों में हिम्मत व साहस के साथ लड़ने में कमजोरियां, कंबाट स्किल्स, टेक्निकल स्किल्स का समयोचित ढंग से इस्तेमाल करने में खामियां व कमजोरियां, विविध किस्म के हथियारों को सही तरीके से तैनात कर इस्तेमाल करने में खामियां. इनके फलस्वरूप हमने युद्ध कार्रवाइयों में कुछ कॉमरेडों को

खोया.

5. कॉरपेट सेक्युरिटी व्यवस्था को ध्वस्त न कर पाना, आर्टिलरी हासिल न कर पाना.

अक्टूबर, 2011 में संपन्न डीके प्लान ने यह समीक्षा की कि उस स्पेशल जोन आंदोलन कठिन परिस्थिति में पहुंच गया है. एनटी, एओबी आंदोलनों की पीछेहट की स्थिति, डीके आंदोलन की कठिन परिस्थिति को ध्यान में रखकर अगस्त, 2012 में आयोजित सीआरबी बैठक ने मध्य रीजन प्रांत में कठिन स्थिति में छापामार युद्ध को संचालित करने की कार्यनीति के बारे में विवरणात्मक प्रस्ताव किया था. जनाधार के घटने, दुश्मन के मुखबिर बढ़ने, पीएलजीए की सूचनाएं दुश्मन बलों तक पहुंचने, जन मिलिशिया के प्रतिरोध घटने, गोली-बारूद के अभाव, भर्ती के कम होने की परिस्थितियां व्याप्त होने की अवस्था में डीके में छोटी, मध्यम किस्म की कार्रवाइयों, विकेंद्रीकृत कार्रवाइयों को व्यापक बनाते हुए जब भी अवसर मिलता है, बड़े व केंद्रीकृत हमले करने का सीआरबी प्रस्ताव ने मार्गदर्शन दिया. एओबी में छोटी व मध्यम किस्म की कार्रवाइयों को संचालित करने, एनटी में छोटे किस्म की कार्रवाइयों को अंजाम देने व डीके सहित पूरे मध्य रीजन में दुश्मन को हमारे बलों की सूचनाएं प्राप्त न हो, ऐसे गुप्त आवा-जाही का पालन करते हुए, तेज आवा-जाही के जरिए छापामार युद्ध को संचालित करने एवं स्थानीय संसाधनों को संग्रहित करते हुए, बढ़ाते हुए; मिलिशिया कार्रवाइयों को व्यापक बनाते हुए छापामार युद्ध को संचालित करने का मार्गदर्शन दिया. इसके साथ ही डीके में उच्च स्तर के फार्मेशन न बनाने, कंबाट युनिटों के विस्तार को रोकने, उनके संगठितीकरण को महत्व देने को कहा.

सन् 2012 तक देशव्यापी आंदोलन के कठिन स्थिति में पहुंचने की समीक्षा अप्रैल, 2013 में संपन्न केंद्रीय कमेटी की चौथी बैठक ने की. इस बैठक ने बीजे स्पेशल एरिया, पश्चिम बंगाल राज्य के आंदोलन अस्थायी रूप से पीछेहट का शिकार होने का भी समीक्षा की. इस कठिन स्थिति को पार करने के लिए आगामी दो सालों में अपनाए जाने वाले कार्यक्रम व कार्यनीति को तय किया था. इस प्रस्ताव की रोशनी में सीआरबी एवं ईआरबी ने अपने-अपने रीजनों के लिए और भी ठोस मार्गदर्शन उपलब्ध कराए. 2018 तक दुश्मन के

हमले की तीव्रता और हमारा आत्मगत प्रयास में कमियों की वजह से देशभर के आंदोलन अस्थायी रूप से पीछेहट का शिकार हुआ. इस स्थिति से उबरने के लिए केंद्रीय कमेटी द्वारा दिए गए मार्गदर्शन के आधार पर विगत दो सालों से गुरिल्ला युद्ध जारी है. इस तरह सीआरबी, ईआरबी, सीसी ने जो मार्गदर्शन दिया उस पर आधारित होकर विगत 9 सालों से (2012-20) हमारी पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए छापामार युद्ध को संचालित कर रही है.

कठिन स्थिति और अस्थायी पीछेहट की स्थिति को पार करने के लिए विगत 9 सालों (2012-20) से जारी छापामार युद्ध:

विगत नौ सालों से भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के उन्मूलन के लिए केंद्र, राज्य सरकारें ऑपरेशन ग्रीनहंट, मिशन-2016, मिशन-2017 एवं समाधान आदि नाम पर प्रतिक्रांतिकारी युद्ध को तीव्र रूप से संचालित करती रही, जबकि हमारी पार्टी के नेतृत्व में वीर पीएलजीए व जनता ने साहसिक प्रतिरोध की. कई कार्यनीतिक जवाबी हमले के अभियानों, छापामार युद्ध कार्रवाइयों व प्रतिरोधी कार्यवाहियों को संचालित किया. हमारी पीएलजीए व जनता द्वारा संचालित जनयुद्ध की वजह से दुश्मन के लक्ष्य पूरा नहीं हो पाए. दुश्मन ने जब का तब क्रांतिकारी आंदोलन के खात्मे के जो तारीखें घोषित की वो सब पीएलजीए व जनता के जनयुद्ध के फलस्वरूप निकलती गयी.

मध्य रीजन

हालांकि दंडकारण्य आंदोलन 2011 तक कठिन परिस्थिति में पहुंच गया था लेकिन वहां हम इन 9 सालों में छापामार युद्ध को विस्तृत तौर पर व तीव्रता के साथ जारी रखे हुए हैं. हर साल कुछ बड़े व केंद्रीकृत एंबुश किए जा रहे हैं जबकि सैकड़ों छोटे व मध्यम किस्म की छापामार युद्ध कार्रवाइयां संचालित हैं. छापामार युद्ध में जनता व मिलिशिया की भागीदारी हमें कई मूल्यवान अनुभवों से लैस कर रहा है. स्थानीय स्रोतों पर आधारित होकर प्राथमिक स्तर की आर्टिलरी तैयार कर युद्ध कार्रवाइयों को संचालित करना, स्नाइपर टीमों को तैयार कर छापामार युद्ध कार्रवाइयों में उनका सक्षम ढंग से उपयोग करना, विभिन्न किस्म के इंप्रूवाइज्ड एक्सप्लोजिव डिवाइजों के जरिए माइन

युद्धतंत्र को तीव्र-विस्तृत करना, विभिन्न प्रकार के हजारों परंपरागत ट्रापों द्वारा (स्पाइक होल्स) ट्राप युद्ध को संचालित करना आदि के जरिए छापामार युद्ध को जारी रखे हुए हैं। मई, 2013 में हमने जीरमघाटी के पास कांग्रेस के काफिले पर एंबुश कर सलवा जुडुम के नेता, क्रांतिकारी आंदोलन के विरोधी व जनहंता महेंद्रा कर्मा सहित कुछ अन्य कांग्रेस नेताओं व कुछेक पुलिस जवानों का उन्मूलन कर कुछ हथियार जब्त किए। बुरकापाल एंबुश की सफलता इस बीच के हमारे अनुभवों में उन्नत है जिसे पीएलजीए की बटालियन को केंद्र बनाकर दक्षिण सब जोनल ब्यूरो इलाके के सेकंडरी बल व तेलंगाना बलों ने मिलकर ज्वाइंट ऑपरेशन के जरिए अप्रैल, 2017 में बुरकापाल एम्बुश को अंजाम दिया था, जिससे एक उच्च स्तर का अनुभव हासिल हुआ। उसी तरह मार्च 2020 में केंद्र व राज्य सरकारें ऑपरेशन 'प्रहार' के तहत भारतीय सेना से कुछ इकाइयों को, ग्रेहाउंड्स, कोबरा, एसटीएफ, डीआरजी कमांडो बलों को मिलकर चलाए गए हमले का 21 मार्च को अंजाम दिए गए मिनपा केंद्रीकृत एम्बुश के जरिए कारगर जवाब दिया गया जिससे नया और उच्च स्तर का अनुभव हासिल हुआ। पिछले 9 सालों से छापामार युद्ध चलाते हुए, दुश्मन के हमले को प्रतिरोध करते हुए कुछ छापामार आधारों को बरकरार रख पाए हैं। किंतु छापामार युद्ध चलाने में कमी-कमजोरियों की वजह से कारपेट सेक्युरिटी का विस्तार व संगठितीकरण को पर्याप्त मात्रा में रोक नहीं पाएं। इससे कुछ छापामार आधार धक्का खाया और बाकी कुछ पहले की तरह रणनीतिक कर्तव्यों पूरा नहीं कर पा रहे हैं।

एओबी में, इस समय में (2013-2020) चलाए गए टीसीओसीयों व प्रतिरोध कार्यक्रमों में दुश्मन के सशस्त्र बलों के (बीएसएफ, सीआरपीएफ, एसओजी, ग्रेहाउंड्स, डीवीएफ) 21 जन, तीन होमगार्डों का उन्मूलन किया गया और 73 को घायल किया गया, इस दौरान जन्नीगुड़ा, राल्लगड्डा, पनगारेवुला, सुंकि जैसे बड़े व मध्य किस्म के गुरिल्ला कार्रवाइयों, और कुछ छोटे किस्म के कार्रवाइयों को अंजाम दिया गया। सितम्बर 2018 में लिविटिपुट्टु गांव के पास टीडीपी के नेता किडारि सर्वेश्वरराव (विधायक) और सीवेरि सोमा (पूर्व विधायक) का उन्मूलन कर उनके सुरक्षा गार्डों के पास से दो हथियार जब्त किया गया। एओबी के आंध्र इलाके को माओवादी मुक्त इलाका बनाने के

दुश्मन की दुष्ट योजना को जनयुद्ध व जन संघर्षों को संचालित कर हमने उसे पूरा नहीं करने दिया। छापामार युद्ध का संचालन करते हुए हमने इस इलाके में पांच ग्राम (पाकेट) स्तर के जन राज्यसत्ता के अंगों का निर्माण किया गया।

तेलंगाना में विगत 4-5 सालों से छोटे किस्म की छापामार कार्रवाइयों को संचालित कर रहे हैं। इस दौरान (2015-2020) चार बार टीसीओसीयों और कुछ प्रतिरोध कार्रवाइयों को चलाकर 6 पुलिस का उन्मूलन कर, 7 को घायल किया गया। डीके बलों के साथ मिलकर चलाए गए संयुक्त टीसीओसीयों में 32 पुलिस का उन्मूलन किया गया। नेतृत्व के उन्मूलन के लिए दुश्मन ने जो भीषण हमले किए, हमने उनका डटकर मुकाबला किया। विगत 5 सालों से तेलंगाना की खम्मम जिला में मिलिशिया बल स्वतंत्र रूप से दुश्मन पर हैरान-परेशान करने वाली कार्रवाइयां निर्वाह करते हुए पीएलजीए के प्रधान व द्वितीय बलों से मिलकर छापामार युद्ध कार्रवाइयों में भी शामिल हो रहे हैं।

ओडिशा में डेकुनपानी, आमामोरा, कोंजलो आदि छोटे एंबुश किए गए। विगत 9 सालों से वहां हमने जो छापामार युद्ध कार्रवाइयों को संचालित किया, वो दुश्मन को विकेंद्रित करने में मददगार रहीं।

हमने 2016 के प्रारंभ में महाराष्ट्र-मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़(एमएमसी) के सरहद्दी इलाके में विस्तार किया और राज्य स्तर में एक नयी कमेटी का गठन किया। तब से लेकर उस इलाके में पुलिस, अर्ध-सैनिक व कमांडो बलों के हमलें हम पर तीव्र हो गए हैं। इन हमलों का हम डटकर मुकाबला कर रहे हैं। भावे 1, 2 एम्बुश, कुछ सिंगल एक्शन जैसे छोटी छापामार युद्ध कार्रवाइयों को संचालित किया गया। डीके को धक्का पहुंचाने के तहत बालाघाट-राजनांदगांव-गोंदिया जिलों से हमें घेरने के लिए दुश्मन जो प्रयास कर रहा है, उन्हें रोकने में इस इलाके का विस्तार मददगार रहा।

पूर्वी रीजन

केंद्रीय कमेटी की चौथी बैठक के प्रस्तावों के अमल के लिए जनवरी, 2014 में ईआरबी की बैठक हुई। चूंकि बीजे का क्षेत्रफल ज्यादा है और समन्वय में तथा आंदोलन का मार्गदर्शन करने में समस्याएं उत्पन्न हो रही थी, इसलिए उसे दो स्पेशल एरियाओं के रूप में पुनर्विभाजित करने के सीसी प्रस्ताव को

ईआरबी ने इस बैठक में कार्यरूप दिया. उसके मुताबिक बीजे स्पेशल एरिया को बीजे स्पेशल एरिया और पूर्वी बिहार—पूर्वोत्तर झारखंड स्पेशल एरिया, 2यू स्पेशल एरिया के रूप में विभाजित कर पुनर्निर्माण किया गया.

बीजे स्पेशल एरिया में 2012–2020 के बीच के समय में दुश्मन का चौतरफा हमले का मुकाबला करते हुए गुरिल्ला युद्ध चलाया गया. अर्धसैनिक बलों पर, राज्य—प्रायोजित सशस्त्र खुफिया गिरोहों टीपीसी, जेपीसी, जेजेएमपी, पीएलएफआई आदि पर साहसिक हमलों का अंजाम दिया गया. मध्य जोन में अवस्थित के पास एमपीवी पर एम्बुश, रोशनगंज एम्बुश, टांडवा एम्बुश, जाजापुर रेड, डुमरिया एम्बुश, काला पहाड़ एम्बुश, डुमरीनाला एम्बुश, कोयल—शंख जोन में अमवटीकर—कटिया, चैनपुर, लातेहार में जवाबी हमला का अभियान, बूढ़ा पहाड़ काउंटर हमला—1, बूढ़ा पहाड़ काउंटर हमला—2, दक्षिण जोन में चाईबासा जेल ब्रेक—2, ऑपरेशन मानसून के खिलाफ जवाबी हमले का अभियान, उत्तर जोन में गिरिडी कैदी एस्काट गाड़ी पर हमला, पाकुड़ एम्बुश, ऑपरेशन हिल विजय के खिलाफ जवाबी हमले का अभियान आदि हमलों सहित स्पेशल एरिया भर में चलाए गए कई छापामार कार्रवाइयों में 91 पुलिस का उन्मूलन कर, 174 पुलिस घायल किया गया. 53 हथियार जब्त किया गया. छोटकी कोड़िया हमले में टीपीसी के 16 गुंडे सहित इस समय में विभिन्न किस्म के सशस्त्र खुफिया गिरोहों के लगभग 150 गुंडों, एसपीओ, पुलिस मुखबिरों का उन्मूलन किया गया. इसके बावजूद इस दौरान पीएलजीए बहुत कमजोर हुई. कमिशनों और कमांडों ने भी धक्का खाया. दुश्मन के चौतरफा हमले का मुकाबला करने के लिए विभिन्न स्तरों के पार्टी और पीएलजीए कामरेडों के साथ अस्थायी प्लाटून, कंपनी व बटालियन फारमेशनों का गठित कर छापामार कार्रवाइयों को अंजाम दे रहे हैं. 2019–20 में भी राय सिंदरी पहाड़ों में सिलसिलेवार विस्फोट के साथ किए गए एम्बुश, दुमका एम्बुश, तिरिडीह एम्बुश, डोकापीढ़ी एम्बुश, नुकियाटांड एम्बुश, केराइकेला एम्बुश आदि कुछ छापामार युद्ध कार्रवाइयों को अंजाम दिया गया.

पू.बि.—पू.उ.झा. स्पेशल एरिया गठित होने के बाद से दुश्मन के भीषण हमले के बीच उस इलाके में हमारी शक्तियां डटकर लड़ते हुए दुश्मन के मुखबिर व एसपीओ नेटवर्क पर लगातार कारवाइयों को अंजाम दिया गया.

कुछ गुरिल्ला कार्रवाइयों को संचालित किया गया. आंदोलन और पार्टी के नेतृत्व को बचाया गया.

बिहार—झारखंड, पूर्वी बिहार—पूर्वोत्तर झारखंड स्पेशल एरियाओं में आंदोलन अस्थायी पीछेहट की स्थिति से उबरने की प्रक्रिया शुरू हो गया. आत्मरक्षा दल और जन—मिलिशिया दस्ते भी गठित होकर काम कर रहे हैं.

केंद्र, राज्य सरकारों द्वारा पश्चिम बंगाल में संचालित प्रतिक्रांतिकारी हमले की तीव्रता के कारण, उस राज्य के इंचार्ज केंद्रीय कमेटी/पोलित ब्यूरो सदस्य कॉमरेड किशन जी के शहीद होने से पार्टी व पीएलजीए नेतृत्व एवं बलों को बेहद नुकसान हुआ और वहां हमारा आंदोलन पीछेहट में चला गया. इससे वहां छापामार युद्ध कार्रवाइयां लगभग रुक गयीं. 2यू में विगत 9 सालों में बहुत कम छापामार कार्रवाइयां हुईं. वहां पार्टी में गुप व अनेकता समस्या पहले से अधिक जटिल होने की वजह से आंदोलन की स्थिति और कठिन हो गयी. उत्तर छत्तीसगढ़ में कभी—कभी सीबीबी—साम्राज्यवादियों की संपत्ति ध्वस्त करने, प्रतिक्रांतिकारियों के उन्मूलन व पुलिस पर छोटी कार्रवाइयों के रूप में छापामार युद्ध जारी है. असोम में हमारा आंदोलन जो प्राथमिक स्तर पर था, वहां हमारी गतिविधियां जारी हैं, बावजूद बहुत कमजोर हैं.

दक्षिण पश्चिम रीजन:

एकता कांग्रेस के बाद — दिंडिगल, आंडिपट्टी इलाको परिप्रेक्ष्य इलाके (परस्पेक्टिव एरिया—पी.ए.) के रूप में चुनकर विस्तारित होने के बाद, एक दस्ता गिरफ्तार हो जाना, दूसरा दस्ते पर पुलिस का हमला होकर दस्ते के कमांडर शहीद हो जाने से राज्य कमेटी पी.ए. से वापस आ गयी.

2010 से पश्चिमी घाटियों के कर्नाटक—तमिलनाडु—केरल राज्यों के सीमावर्ती इलाके में नए मोर्चे का निर्माण करने तैयारी कार्य शुरू किया गया था. वहां के आंदोलन जो लंबे समय से प्राथमिक स्तर पर ही रहा, को विकसित करने के लिए, पार्टी को जनयुद्ध के ओरिएंटेशन से लैस करने नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम (एलटीपी) आयोजित किया गया. उसी तरह सैद्धांतिक, सांगठनिक व सैनिक तौर पर तैयारी कार्य संचालित करने के लिए एक आर्गनाइजिंग कमेटी का फरवरी, 2010 में गठन किया गया. बाद में उस इलाके के आंदोलन

का विशेष तौर पर नेतृत्व देने के लिए जून, 2011 में वेस्टर्न घाट्स स्पेशल जोनल कमेटी का गठन किया गया। उस कमेटी के नेतृत्व में कई प्रतिकूलताओं व दुश्मन के हमलों का मुकाबला करते हुए हमारे दस्तों ने उस इलाके 1 मई, 2013 को प्रवेश किया। इससे क्रांतिकारी कतारों व जनता में एक अच्छा उत्साहपूर्ण माहौल निर्मित हो गया। केरल व तमिलनाडु में राजनीतिक तौर पर विस्तृत चर्चा का मुद्दा बन गया।

नवंबर, 2014 से जनवरी, 2015 तक ग्रामीण व शहरी इलाकों में राजनीतिक व सैनिक अभियान (पीएमसी) समन्वय के साथ संचालित किया गया। वन विभाग, ग्रानाइट माफिया, बहुराष्ट्रीय कंपनी मेग्डोनाल्ड हॉटल्स, रेस्तराँ, सीबीबी की संपत्तियों पर हमलों के साथ ही दुनिया की जनता का अव्वल नंबर का दुश्मन अमेरिका के अध्यक्ष जो भारत के दौरे पर आए थे, के विरोध में प्रदर्शन किए गए थे। इन प्रदर्शनों ने जनता पर अच्छा प्रभाव डाला। जबकि शासक वर्गों को परेशानी में डाल दिया। फिर भी सशस्त्र दुश्मन पर हमले करने में हमने हमले नहीं की।

छापामार दस्तों को सैनिक प्रशिक्षण देकर, सांगठनिक तौर पर संख्या बढ़ाकर उनकी संघर्ष क्षमता को बढ़ानी होगी। ग्रामीण इलाकों में जनता को जन संगठनों व मिलिशिया में संगठित कर वर्ग संघर्ष को तेज करना चाहिए।

कुल मिलाकर देखा जाए तो पश्चिमी घाटियों के स्पेशल जोन के आंदोलन, (वर्ग संघर्ष) बहुत ही प्राथमिक अवस्था में है। आत्मगत शक्तियां सीमित मात्रा में हैं। आंदोलन को आगे ले जाने में एसजडसी के निर्णय में कुछ कमियां थीं। आंदोलन को विकसित करने के तहत दुश्मन की पहलकदमी को व मुखबिरो को नियंत्रण करने की कार्रवाइयां लेने में हमारी कमजोरियों के कारण क्रांतिकारी आंदोलन और कमजोर हुई। शहरी आंदोलन धक्का खाकर कमजोर स्थिति में है। लाल प्रतिरोध इलाके के रूप में विकसित होने के क्रम में नेतृत्व की गिरफ्तारियां व शहादतों से प्राथमिक स्तर के उस आंदोलन में लीप (छलांग) लाने में अस्थायी तौर पर अवरोध उत्पन्न हुए। फिर भी मालेमा पर दृढ़तापूर्वक खड़े होकर इन अस्थायी मोड़ों, उतार-चढ़ावों से सबक लेकर दुश्मन की साजिशों व चुनौतियों का मुकाबला करते हुए पूरी पार्टी को शिक्षित कर देश में दिन ब दिन बढ़ती क्रांतिकारी परिस्थिति का उपयोग करते हुए,

आत्मगत शक्तियों का बचाव करते हुए और विकसित करते हुए आगे बढ़ने की संभावनाएं बहुत हैं. पश्चिम घाटियों में छापामार जोन का निर्माण करने की दिशा में पश्चिमी घाटियों के आंदोलन को विकसित करने के कार्यभार हमारे सामने है.

विगत 9 सालों में हमें कठिन स्थिति और अस्थायी पीछेहट की स्थिति से उबरने के लिए हमारे द्वारा संचालित छापामार युद्ध के सकारात्मक पहलू:

1. 2012-2020 के बीच के समय में ऐसी परिस्थितियों में जहां केंद्र व राज्य सरकारें क्रांतिकारी आंदोलन की सभी सिविल व मिलिटरी आपूर्तियों को रोक रहा है, 'दुश्मन ही हमारे हथियारों की आपूर्ति का प्रधान स्रोत है' इस नियम का पालन करते हुए पुलिस, अर्ध-सैनिक व कमांडो बलों पर हमलें करके 974 अर्धसैनिक, स्पेशल पुलिस व कमांडो पुलिस बलों का उन्मूलन कर, 1,983 पुलिस का घायल किया गया. दुश्मन के पास से 597 हथियारों व 27,758 कारतूस अन्य सामग्री जब्त किया गया जिन पर निर्भर होकर छापामार युद्ध को संचालित किया गया.
2. स्थानीय स्रोतों पर आधारित होकर इंप्रूवाइज्ड एक्सप्लोजिव डिवाइजों (आई ई डी) तैयार कर, उनके आधार पर माइन युद्धतंत्र को विस्तृत-तीव्र करना, रंग-बिरंगे परंपरागत ट्रापों द्वारा ट्राप युद्धतंत्र को विस्तृत-तीव्र करना, प्राथमिक स्तर की इंप्रूवाइज्ड आर्टिलरी को विकसित करना.
3. कंबाट स्किल्स व टेक्निकल स्किल्स को विकसित करना. स्नाइपर टीमों को विकसित करके सीमित संख्या में कारतूसों के साथ छापामार युद्ध कार्रवाइयों को जारी रखना, मईन युद्ध में रिमोट तकनीक को विकसित कर रहे हैं.
4. हजारों की संख्या में एवं कई बैचों में पुलिस, अर्ध-सैनिक व कमांडो बल छापामार आधारों में जब घुसते हैं उनमें से एक हिस्से को अलग करके उन्मूलना करना.

5. टीसीओसी के समयों में एवं महत्वपूर्ण युद्ध कार्रवाइयों के दौरान दो-तीन राज्यों/स्पेशल जोनों के बलों या रीजनल व स्पेशल जोनल बलों को जब गोलबंद करते हैं, तब उन्हें समन्वय के साथ चलाने के लिए अस्थायी तौर पर ज्वाइंट कमांड्स गठित कर रहे हैं. एओबी में कार्रवाइयां निर्वाह करते समय उस स्पेशल जोन के बलों व रीजनल बलों को समन्वित ढंग से संचालित करने के लिए स्थायी आधार पर ज्वाइंट कमांड्स गठित किए गए. कठिन परिस्थिति को पार करने के लिए पार्टी, सेना व संयुक्त मोर्चा सभी क्षेत्रों को समन्वय के साथ चलाने के लिए दंडकारण्य में दक्षिण व उत्तर रीजनों में सीसी सदस्यों के नेतृत्व में एवं पश्चिम रीजन में एसजडसीएम के नेतृत्व में रीजनल कमेटी, डिविजनल कमेटी सदस्यों को मिलाकर युनिफाइड कमांडों का गठन किया गया था एवं 2013 से 2015 तक ढाई साल उन्हें संचालित किया गया.
6. दंडकारण्य में जन मिलिशिया के तहत कुछ प्लाटूनों, कंपनियों का निर्माण कर संचालित करना.
7. ओडिशा में विस्तार, पश्चिम घाटियों में लाल प्रतिरोध इलाका व छापामार जोन के निर्माण कार्य अपनाना, महाराष्ट्र-मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ (एमएमसी) इलाके में विस्तार के जरिए दुश्मन के बलों को विकेंद्रित करने बाध्य करना, नए इलाकों में गुरिल्ला युद्ध का विस्तारित करने का प्रयास करना.
8. छापामार युद्ध व जन संघर्षों को विस्तृत व तीव्रता के साथ संचालित करते हुए जन राज्यसत्ता के संगठनों को दुश्मन के हमलों से बचाना, ग्राम व एरिया स्तर पर कुछ का पुनर्निर्माण करने, कुछेक नए का निर्माण करने के जरिए छापामार आधारों को बचाए रखना. छापामार आधारों के साथ कुछ रणनीतिक इलाकों व अंदरूनी इलाकों को छापामार युद्ध की राणनीतिक जरूरतों के लिए इस्तेमाल करना.

इस कालावधि में नकारात्मक पहलू:

1. भाग जाना, आत्मसमर्पण

हमने मध्य रीजन व पूर्वी रीजन में कमो-बेश इस समस्या का सामना किया। दुश्मन की अधिक ताकत का ज्यादा आकलन करने के मनोगतवादी दृष्टिकोण एवं हमारे क्रांतिकारी आंदोलन के दीर्घकालिक स्वभाव एवं उसके साथ ही उतार-चढ़ावों, आगे बढ़ने-पीछे हटने, हार-जीत के क्रम से उसके जारी रहने के तौर को गहराई से न समझने वाले तथा क्रांतिकारी आंदोलन की कठिन स्थिति को लांघने के विश्वास के अभाव व अनुशासनहीनता की वजह से एवं अराजकता से जब अनुशासनात्मक कार्रवाई का शिकार होने वाले कुछ लोग राजनीतिक व नैतिक रूप से पतित लोग दुश्मन के मनोवैज्ञानिक युद्ध के प्रभाव का शिकार होकर भाग रहे हैं। इनमें से ज्यादातर लोग दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण कर रहे हैं। दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण करने वालों में से कुछ गद्दार, प्रतिक्रांतिकारी बनकर पुलिस, कमांडो बलों में शामिल होकर क्रांतिकारी आंदोलन को तीव्र नुकसान पहुंचा रहे हैं।

बोल्शेवीकरण अभियान अपनाने एवं राजनीतिक व सैनिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के जरिए इस समस्या को कुछ हद तक पार किया गया। उनके द्वारा कठिन समय में, अस्थायी रूप से पीछेहट के समय में अपनाए जाने वाले छापामार युद्ध के दांव-पेंचों पर स्पष्टता दिलाने के जरिए, दुश्मन की अपेक्षाकृत अधिक ताकत को बदल सकने के विश्वास से लैस करने एवं हमारी लाइन पर स्पष्टता देकर इस समस्या का कुछ हद तक हल किया गया। आगे भी इसी तरह पीएलजीए में राजनीतिक व सैनिक कार्य को निरंतर जारी रखकर इस समस्या का हल निकालना होगा।

इस समय में मध्य व पूर्वी रीजनों में कमो-बेश अंतर के साथ भीतरघातियों की समस्या सामने आयी। सही समय पर इस समस्या को जहां सही तरीके से हल किया गया, वहां नुकसानों से बच सके। सही समय पर भीतरघातियों को जहां चिह्नित नहीं कर पाए, वहां हमें कुछ नुकसान हुए हैं। खासकर बीजे, डीके में यह समस्या गंभीर रूप से सामने आयी। इस समस्या के प्रति अभी भी हमें सतर्क रहना होगा।

2. गुप्त कामकाज व छापामार युद्ध नियमों का सही तरीके से पालन न करने के फलस्वरूप युद्ध कार्रवाइयों को सफल बनाने के अवसरों को खोना व नष्ट होना.

रोजमर्रा की जिंदगी में, मास वर्क व मिलिटरी वर्क में, युद्ध कार्रवाइयों में, अभियानों में गुप्त कार्यपद्धति व छापामार युद्ध नियमों का सही ढंग से पालन नहीं करने के फलस्वरूप इस दौरान हमने युद्ध कार्रवाइयों को सफल बनाने के अवसरों को उल्लेखनीय संख्या में ही खोया. हमारे बल सफर में एवं एंबुश जगहों पर गोपनीयता व केमोफ्लेज का पालन न करने की वजह से, लगाए गए माइन्स व क्लेमोर्स का सही केमोफ्लेज न करने के चलते व दृढसंकल्प, पहलकदमी, हिम्मत व साहस के साथ संघर्ष करने में मौजूद कमजोरियों की वजह से युद्ध कार्रवाइयों को सफलतापूर्वक अंजाम देने के अवसर खोए.

गुप्त कार्यपद्धति, छापामार युद्ध नियमों का सही पालन न करने के फलस्वरूप मास वर्क, मिलिटरी वर्क करने वाली युनिटों की आवा-जाही के बारे में दुश्मन को जानकारी मिलने के कारण कई जगहों पर हमलों का शिकार हो रहे हैं. खुलेआम सफर करने, हमला-आत्मरक्षा व एड्वांस-रिट्रीट के लिए प्रतिकूल जगहों पर डेरा डालने, हमेशा युद्ध के लिए तैयार रहने के लिए आवश्यक ड्रिल्स प्रैक्टिस न करने, संतरी, पेट्रोलिंग, स्काउटिंग, ऑब्जर्वेशन व्यवस्थाओं में खामी, चेतनापूर्वक प्रयास के जरिए कष्टप्रद छापामार जीवनशैली को अपनाने की बजाए यथेच्छापूर्वक कार्यपद्धति पर अमल करने से हमें इस बीच में दुश्मन के हमलों में तीव्र नुकसान झेलना पड़ा.

दुश्मन के हमले में आए बदलाव को समझने में, छापामार युद्ध के साधारण नियमों, हमारी पार्टी कमेटियों के प्रस्तावों, सर्कुलरों को ठोस परिस्थितियों के साथ जोड़कर सृजनात्मक ढंग से लागू करने में मनोगतवाद, उदारतावाद व व्यक्तिवाद पार्टी कमेटियों व कमांडो में तीव्र स्तर पर जारी रहने के चलते एवं जहां पार्टी कमेटियों व कमांडो ने गैर जवाबदाराना तरीके से व्यवहार किया है, वहां गंभीर नुकसान उठाएँ.

डीके में कसनूर-हल्बि तुम्मिरगुंडा, आयपेटा, तिम्मेम, एओबी में रामगुंडा, डोकरी घाटी, तेलंगाना में बोट्टेम, पूजारी कांकेर, बीजे में बकोरिया, घाघरा,

करंडीह, मगध में कोवर्ट ऑपरेशन, जप्ला, बुड़ा पहाड़, बड़गांव आदि घटनाओं में हमने बड़े पैमाने पर पार्टी, छापामार बलों, नेतृत्व एवं हथियार—कारतूस खोए। ये नुकसान युद्ध में और भी प्रतिकूलताएं बढ़ने के कारण बन गए।

3. हथियार तैयारी व आपूर्ति विभागों, चैनलों, डंपों को खोना.

बदली दुश्मन की योजना व उस पर आधारित होकर संचालित करने वाले हमले के स्वभाव को गहराई से व सही तरीके से न समझने के कारण, बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप पुरानी कार्यपद्धतियों को पूरी तरह न बदलने के चलते 2007 के प्रारंभ में ही हथियार निर्माण विभाग (राउरकेला व भोपाल इकाइयां) दुश्मन के हमले में ध्वस्त हो गया था जबकि फरवरी, 2012 में उस विभाग के सचिव के गिरफ्तार होने से बाहरी विभाग पूरी तरह ध्वस्त हो गया। हथियार व कारतूस आपूर्ति विभाग 2009 तक लगभग पूरी तरह खत्म हो गया था। पुनर्निर्मित इकाइयां भी उपरोक्त खामियों की वजह से 2011 में ही ध्वस्त हो गये थे। इन दो इकाइयों के ध्वस्त होने से युद्ध में हम तीव्र प्रतिकूलताओं की ओर धकेले गए।

विभिन्न राज्यों के सप्लाई मार्गों को अविवेकपूर्ण इस्तेमाल करने की वजह से कुछ मार्ग ध्वस्त हो गए।

केंद्रीय विभागों के धक्का खाने के बावजूद विभिन्न राज्यों ने कई मार्गों में जो युद्ध सामग्री हासिल की थी, उसे गुप्त रूप से एवं सही तरीके से डंप नहीं करने के फलस्वरूप हथियारों, कारतूस व विस्फोटक पदार्थों को इस दौरान दुश्मन ने जब्त किया, कुछ और सामग्री बेकार हो गयी। उपरोक्त सभी खामियों के कारण छापामार जोनों में भी युद्ध में पहलकदमी खोने की स्थिति उत्पन्न हुई।

जनयुद्ध में मिलिशिया की भागीदारी

क्रांतिकारी आंदोलन के तमाम इलाकों में इन 14 सालों में जन मिलिशिया की भागीदारी बढ़ी है। जन मिलिशिया पीएलजीए के प्रधान व द्वितीय बलों का आंख व कान के रूप में काम कर रहे हैं। दुश्मन के बलों पर की जाने वाली प्रतिरोध कार्रवाइयों में व टीसीओसीयों में व्यापक रूप से गोलबंद हो रहे हैं। लेकिन वह अपने कार्यभारों के अनुरूप काम करने में कुछ उतार, चढ़ाव हैं।

मिलिशिया कामरेड जहां सक्रिय रूप से काम करते हैं, वहां दुश्मन पर हैरान-परेशान करने वाली कार्रवाइयों को अंजाम दे रहे हैं। साप्ताहिक बाजारों में पुलिस पर कुछ हमले करके हथियार छीनने, बूबीट्रापों, परंपरागत ट्रापों व स्पाइक होल्स लगाकर दुश्मन के बलों को नुकसान कर रहे हैं। दुश्मन के हमलों से गांवों, जनता व जन निर्माणों को, पीएलजीए के प्रधान व द्वितीय बलों को बचाने संतरी, पेट्रोलिंग कार्य कर रहे हैं। क्रांतिकारी जन कमेटियों द्वारा चलाए जाने वाले उत्पादन कार्यों में मिलिशिया शामिल हो रहे हैं। मिलिशिया पीएलजीए के प्रधान व द्वितीय बलों में भर्ती का स्रोत है।

जनयुद्ध में महिलाओं की भागीदारी

पीएलजीए के प्रधान, द्वितीय व बुनियादी बलों में महिलाओं की संख्या काफी मात्रा में है। दुश्मन के बलों पर अंजाम दी गयी गुरिल्ला युद्ध कार्रवाइयों में महिला कॉमरेडों की भागीदारी है। दुश्मन पर साहसिक ढंग से आक्रमण करती हुई कुछ महिला कॉमरेड्स युद्ध कार्रवाइयों के दौरान घायल हुईं और शहीद हुईं। दुश्मन के बलों के साथ हुई कई मुठभेड़ों में दुश्मन के सामने न झुककर उसके कारतूसों व बमों से न डरते हुए वीरोचित ढंग से लड़कर प्राण न्योछावर की। बीजे में कामरेड उर्मिला, डीके में कॉमरेड रनिता, एओबी, पश्चिम बंग, ओड़िशा, तेलंगाना, एमएमसी, पश्चिमी घाटियों में कई वीरांगनाओं ने महान बलिदानों के साथ जनयुद्ध में नया अध्याय रचा। इन वीरांगनाओं के बलिदान देश के क्रांतिकारी महिला आंदोलन के लिए निरंतर प्रेरणा श्रोत है।

क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों में गांवों में वर्गसंघर्षों में और जनांदोलनों में दुश्मन के हमलों का प्रतिरोध करने में महिलाओं की भूमिका बहुत ही प्रेरणादायक है। विशेषकर जब दुश्मन के बल हमले करने आते हैं, उन्होंने दुश्मन की सूचना देते हुए पार्टी व पीएलजीए को आंख के पुतली की तरह रक्षा कर रही हैं। दुश्मन के बल स्थानीय निर्माणों के नेतृत्व को गिरफ्तार कर ले जाने पर उन्हें छुड़ाकर लाने में, पार्टी व पीएलजीए कॉमरेड व स्थानीय निर्माणों के कामरेडों के शहीद होने के मामलों में उनकी लाशों को पुलिस थानों से और पुलिस कैपों से लाकर क्रांतिकारी परंपराओं के साथ अंतिम संस्कार कर रही हैं और अमर शहीदों के बहादुराना को ऊंचा उठा रही हैं।

क्रांतिकारी छापामार युद्ध को धक्का देने के लिए दुश्मन क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों की घेराबंदी कर आपूर्ति के मार्गों को पूरी तरह बंद कर रहा है ताकि किसी भी किस्म की युद्ध सामग्री न मिले। दुश्मन के ऐसे दांव-पेंचों को धत्ता बताते हुए पीएलजीए ने इन 14 सालों में विविध छापामार जोनों व लाल प्रतिरोध इलाकों में 127 बड़े किस्म के, 233 मध्यम किस्म के, 3,512 छोटे किस्म के छापामार कार्रवाइयों, कुल 3,872 गुरिल्ला कार्रवाइयों को अंजाम दिया गया। इसमें 2,346 पुलिस का उन्मूलन किया गया और 3,133 पुलिस का घायल किया गया। 1,957 शोषक राजनीतिक नेताओं व जनविरोधियों को सजा दी गयी। दुश्मन के हथियारों के साथ हथियारबंद होंगे, इस युद्धनीति के अनुरूप हमारी पीएलजीए बलों ने दुश्मन पर जो हमलें किए, उनमें 1,748 आधुनिक हथियारों, 1,04,816 कारतूसों, गाला-बारूद, कई टनों के विस्फोटक पदार्थों व आर्टिलरी सामग्री को बड़े पैमाने पर पीएलजीए ने जब्त किया। दुश्मन पर किए गए पीएलजीए के हमलों, रेड्ड, एंबुशों व हमारे बलों पर दुश्मन की मुठभेड़ों में इन 14 सालों के दौरान हमारे कुल 266 कॉमरेड्स शहीद हो गए। उसी तरह छापामार आधारों में आने वाले दुश्मन को धक्का देने के लिए जनता विभिन्न तरीकें इस्तेमाल कर रही है। उनके तहत लगभग हजारों स्पाइक होल्स खोदकर उनमें छड़, बांस के कीले आदि लगाकर रखे गए थे। इससे न सिर्फ दुश्मन को बड़े पैमाने पर नुकसान पहुंचाया गया बल्कि पीएलजीए, जन मिलिशिया एवं क्रांतिकारी जनता ने मिलकर दुश्मन के हमारे इलाकों में मनमाफिक घुसने से डरने की स्थिति बनायी।

इस कालावधि में हमारी पार्टी, पीएलजीए एवं जन निर्माणों से संबंधित नेतृत्व, कमांडरों व योद्धाओं के साथ जन सामान्य को मिलाकर हिसाब लगाने से जनयुद्ध के तहत करीब 3,330 कॉमरेड शहीद हुए हैं। इनमें से अधिकांश कॉमरेड शोषक सरकार के किराए के पुलिस बलों व उनके गुप्त हत्यारे गिरोहों तथा हमारी पीएलजीए बलों के बीच हुए सशस्त्र झड़पों में ही शहीद हुए थे। आधुनिक हथियारों सहित सैकड़ों बंदूकों को दुश्मन बलों ने हमारे बलों से जब्त किया। डंपों में सुरक्षित रखी गयी हथियारों, गोली बारूद, अन्य सैनिक सामग्री व अन्यान्य सामानों को दुश्मन बलों ने जब्त कर ध्वस्त किया। इससे छापामार युद्ध को जारी रखने में, और तीव्र-विस्तृत करने में हमने गंभीर

समस्याओं का सामना किया. 2011-13 के बीच से आंदोलन के कठिन स्थिति का सामना करने में यह भी कुंजीभूत मामले के रूप में सामने आया.

मिलिटरी कमिशन , कमांड व सहायक विभाग

सेंट्रल मिलिटरी कमिशन , स्पेशल एटिया/स्पेशल जोन/राज्यों के मिलिटरी कमिशन

सीएमसी: एकता कांग्रेस के बाद आयोजित पहली सीसी बैठक में 10 जन के साथ सेंट्रल मिलिटरी कमिशन गठित हुआ. नवंबर, 2007 में आयोजित सीसी बैठक में वैकल्पिक सदस्य को केंद्रीय कमेटी में लेकर सीएमसी सदस्य की जिम्मेदारी दी गयी. इससे सीएमसी सदस्यों की संख्या 11 तक पहुंच गयी. सितंबर 2007 में गिरफ्तार हुए का. सुनिर्मल जून 2019 में एक साहसिक गुरिल्ला कार्रवाई में जेल से बाहर आए. अगस्त, 2009 में कॉमरेड सुमित, 2009 की आखिरी में कॉमरेड आशुतोष गिरफ्तार हो गए. 2012 में एक सदस्य डिमोट हो गए. मार्च, 2018 में कॉमरेड अरविंद शहीद हो गए. विश्वासघाती जिनुगु नरसिंहा रेड्डी और सुधाकर ने दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण कर दिए. 2009 में गिरफ्तार कॉमरेड जनार्दन जी हाल ही में रिहा हो गए. इन बदलावों के बाद फिलहाल 5 कॉमरेडों के साथ सीएमसी चल रहा है.

2007 से 2011 तक सीएमसी की चार बैठकें हुई. प्रतिक्रांतिकारी हमले की तीव्रता की वजह से भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के 2012 से कठिन स्थिति में पहुंचने के चलते सीएमसी अपनी समन्वय मशीनरी का निर्माण नहीं कर सका. ऐसी स्थिति में सीएमसी अपनी बैठकें आयोजित नहीं कर सका. जहां का वहां सीएमसी सदस्य सीसी और आरबी बैठकों में वर्क डिविजन कर मिलिटरी क्षेत्र को मार्गदर्शन दे रहे हैं.

बदलती सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों की शोध के आधार पर जनयुद्ध की कार्यनीति को विकसित करना, अस्थायी पीछेहट की स्थिति को पार करने के जनयुद्ध की कार्यनीति को विकसित करना, रणनीतिक इलाकों के स्वभाव में होने वाले बदलावों का अध्ययन करते हुए उनके अनुरूप जनयुद्ध की कार्यनीति को सृजनात्मक रूप से विकसित करने पर वर्तमान में सीएमसी को केंद्रीकरण करने की जरूरत है.

स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्य के मिलिटरी कमिशन:

एकता कांग्रेस के बाद डीके, बीजे, एओबी, पश्चिम बंगाल में राज्य स्तर के मिलिटरी कमिशन गठित हो गए. 2011 के बाद पश्चिम बंगाल राज्य मिलिटरी कमिशन रद्द हो गया. फिलहाल बाकी तीन इलाकों में मिलिटरी कमिशन कार्यरत हैं. ये अब तक लगभग नियमित रूप से अपनी बैठकें आयोजित कर रहे हैं. जनयुद्ध के लिए मार्गदर्शन उपलब्ध करा रहे हैं. टीसीओसी, गुरिल्ला युद्ध कार्रवाइयों की योजनाएं बना रहे हैं, उनका कमांडिंग कर रहे हैं, पीएलजीए बलों को राजनीतिक-सैनिक प्रशिक्षण उपलब्ध करा रहे हैं.

एलआईसी का अध्ययन करने, अपने-अपने स्पेशल एरियाओं/स्पेशल जोनों/राज्यों में दुश्मन जिन प्रतिष्ठापामार युद्ध दांव-पेंचों को अमल कर रहा है, उनका अध्ययन करना, उन राजनीतिक, सैनिक व सांगठनिक समस्याओं जिनका जनयुद्ध सामना कर रहा है, को पार करने के प्रयास करने, टीसीओसी एवं कुंजीवत गुरिल्ला युद्ध कार्रवाइयों का प्रत्यक्ष नेतृत्व देने पर और हथियार, कारतूस, विस्फोटक पदार्थ हासिल करना और डम्प का संरक्षित करने पर इन कमिशनों को ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है.

रीजनल ब्यूरो स्तर के कमांड: केंद्रीय कमेटी की पहली बैठक के प्रस्ताव के मुताबिक 2007 के मध्य तक पूर्वी व मध्य रीजनल कमांड गठित हुए थे.

ईआरसी: ईआरसी कमांड ने 2009 तक नियमित रूप से काम करते हुए पूर्वी रीजन में जनयुद्ध का मार्गदर्शन किया. इस कमांड के इंचार्ज कॉमरेड सितंबर 2007 में गिरफ्तार हुए थे जबकि जून 2009 में उन्हें हमारे पीएलजीए के बल छोड़ा जाए. दो सीएमसी सदस्यों जो इस कमांड के सदस्य थे, का 2009 में गिरफ्तार होने, पश्चिम बंगाल एसएमसी के 2013 से काम न कर पाने की स्थिति बन जाने के चलते उसके प्रतिनिधि का ईआरसी में न रहने, प्रतिक्रांतिकारी हमले की तीव्रता की वजह से बीआरसी व जेआरसी के बीच समन्वय में उत्पन्न समस्या के कारण 2012 से यह कमांड नियमित रूप से काम नहीं कर रहा है.

इस कमांड के मातहत एक रीजनल कंपनी अभी भी कार्यरत है.

सीआरसी: 2007 से अब तक नियमित बैठकें करते हुए कार्य करता आ रहा है। मध्य रीजन में दुश्मन के दांव-पेंचों का अध्ययन करते हुए जवाबी दांव-पेंच बनाना, मध्य रीजन में दुश्मन बलों पर प्रतिरोधी कार्रवाइयों, अभियानों, विशेष कार्रवाइयों (स्पेशल ऑपरेशंस) की योजना बनाना व उन पर अमल के लिए रीजनल ब्यूरो बलों, स्पेशल जोनों के बलों को समन्वित व कमांडिंग करना, पीएलजीए बलों को राजनीतिक-मिलिटरी प्रशिक्षण उपलब्ध कराना एवं युद्ध आपूर्तियों का संग्रहण आदि कार्यों को संचालित कर रहा है।

इस कमांड के मातहत विगत में हालांकि तीन रीजनल कंपनियां थी, लेकिन फिलहाल एक रीजनल कंपनी, एक रीजनल प्लाटून हैं।

सीएमसी सहित सीआरसी व ईआरसी ने संयुक्त रूप से नयागढ़ ऑपरेशन को नेतृत्व प्रदान किया।

स्पेशल एरियाओं/स्पेशल जोनों/राज्यों में विभिन्न स्तरों के कमांड: डीके, बीजे में सब जोनल ब्यूरो (सिर्फ डीके में है)/रीजनल, जोनल/डिविजनल, सब जोनल (सिर्फ बीजे में है), एरिया कमांडों का गठन किया गया। डीके में सभी स्तरों के कमांड अपेक्षाकृत बेहतर ढंग से काम कर रहे हैं जबकि बीजे में ये कमांड नियमित रूप से काम नहीं कर रहे हैं। कमजोर हैं। डीके में सभी स्तरों के कमांडों में बेहतर, मध्यस्त व कमजोर तरीके से काम करने वाले हैं। डीके, बीजे में इन कमांडों के सदस्यों में हमेशा जोड़-तोड़ होने के कारण निरंतरता (कॉन्टिन्यूटी) के अभाव की समस्या है।

वर्तमान में तेलंगाना में दो जिलों को मिलाकर एक कमांड (ईस्ट कमांड), दो डिविजनल कमांड, एमएमसी में स्पेशल जोनल कमांड, दो डिविजनल कमांड, ओडिशा में दो एरिया कमांड और दो डिविजनल कमांड कार्यरत हैं। एओबी में दो एरिया कमांड काम कर रहे हैं।

केंद्रीय विभाग:

आपूर्ति विभाग: 2007 से 2011 तक इस विभाग ने काम किया। कारतूस व विस्फोटक पदार्थों को प्रधानतया पूर्वी तथा मध्य रीजनों को आपूर्ति करने के साथ कुछ दफे दक्षिण-पश्चिम रीजन के लिए भी आपूर्ति की। कुछेक बार कुछ बंदूकों की भी आपूर्ति की। दुश्मन के हमले के स्वभाव में आए बदलाव

के मुताबिक मशीनरी के निर्माण में, कार्यपद्धति में बदलाव न लाने के कारण अगस्त, 2009 में इस विभाग के जिम्मेवार सीसीएम सहित कुछ कॉमरेड गिरफ्तार हुए थे। इन्हीं कारणों से बाकी मशीनरी के 2010 में गिरफ्तार होने से ध्वस्त हो गयी। 2009 की गिरफ्तारियों के बाद पुनर्निर्माण की गयी एक युनिट द्वारा डीके को आपूर्ति की जा रही थी कि गिरफ्तार होकर उक्त युनिट भी 2011 में ही ध्वस्त हो गयी थी।

हथियार तैयारी विभाग: हालांकि यह विभाग मध्य व पूर्वी रीजनों के लिए आवश्यक कुछ बंदूकें बनायी थी लेकिन प्रधानतया यह बंदूकों के बॉडी तैयार करने, पाइपों का टर्निंग करने व कलपुर्जे तैयार करने पर ध्यान केंद्रित किया था। राइफल बेरेल में ग्रूव्स को लगाने के प्रयास में लगभग यह सफल हुआ था। आर्टिलरी के विकास से संबंधित कार्य अपनाकर प्राथमिक स्तर के मोर्टार, रॉकेट लांचरों को विकसित किया। आरपीजी विकसित करने के प्रयास प्रारंभ किए। दुश्मन के हमले की तीव्रता को ठीक से न समझकर, पुरानी कार्यपद्धतियों में बदलाव न करने के कारण जनवरी, 2007 में राउरकेला, भोपाल इकाइयों के कॉमरेड गिरफ्तार हो गए थे। इन गिरफ्तारियों के बाद इस युनिट के जिम्मेवार कॉमरेड को भीतर बुलाने का निर्णय चूंकि सीएमसी ने नहीं लिया था, इस गलती की वजह से 2012 तक दुश्मन उनके साथ बाहर बची युनिटों के कॉमरेडों को भी गिरफ्तार किया। इससे बाहर मौजूद यह विभाग पूरी तरह ध्वस्त हो गया। वर्तमान में मध्य रीजन में एक युनिट, पूर्वी रीजन में एक युनिट स्थानीय युनिटों के साथ मिलकर कार्य कर रही हैं।

राजनीतिक खुफिया विभाग: 2003 में हमारी केंद्रीय कमेटी के नेतृत्व पीपुल्स सेक्युरिटी सर्विस (पीएसएस) को गठित किया गया। राजनीतिक खुफिया विभाग का महत्व के बारे में समूची हमारी पार्टी को समझाने में यह विभाग महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस यूनिट का प्रभारी कामरेड पटेल सुधाकर मई 2009 में दुश्मन पकड़कर हत्या करने और दूसरी कामरेड गिरफ्तार हो जाने से इस यूनिट ध्वस्त हो गया।

मिलिटरी इंटेलिजेंस: 2007 में इस विभाग का केंद्रीय स्तर पर गठन किया गया। इस युनिट ने सेंट्रल व ईस्टर्न रीजनों में रीजन स्तर के एमआई विभागों के गठन में मुख्य भूमिका निभाई। इस युनिट के जिम्मेवार कॉमरेड

शाखमूरि अप्पाराव 2010 में दुश्मन के चंगुल में फंसकर शहीद हो गए जिससे यह युनिट ध्वस्त हो गयी.

सेंट्रल इंस्ट्रक्टर टीम: एकीकृत पार्टी के गठन के फौरन बाद 2005 के प्रारंभ में ही इस युनिट का गठन किया गया था. 2007 की आखिरी तक इस युनिट की बैठकें आयोजित करते हुए सीएमसी ने उन्हें विभिन्न राज्यों में भेजकर पीएलजीए बलों को मिलिटरी प्रशिक्षण दिलाया. तीव्र होते हमले के फलस्वरूप 2007 की आखिरी से इस युनिट की सेंट्रल स्तर पर बैठक आयोजित नहीं कर सके. सेंट्रल व ईस्टर्न रीजनवार टीमों के रूप में ही यह विभाग सीएमसी सदस्यों के मार्गदर्शन में काम कर रहा है. फिलहाल ईस्टर्न रीजन में तीन एवं सेंट्रल रीजन में पांच सदस्य इन युनिटों में हैं. सेंट्रल व ईस्टर्न ब्यूरोओं के साथ समन्वय करते हुए सीएमसी ने सेंट्रलाइज्ड सिलबस तैयार किया. इन इंस्ट्रक्टर टीमों के जरिए पीएलजीए बलों को मिलिटरी प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जा रहा है. ये दोनों टीमों क्षमता व कुशलता के हिसाब से कमजोर हैं. इन्हें संख्या और क्षमताओं के मामलों में मजबूत करने की आवश्यकता है.

कम्युनिकेशंस टीम: 2007 तक इस टीम ने काम किया. इस युनिट ने कुछ इस तरह डेवलपिंग एवं असेंब्लिंग कार्यों पर केंद्रित किया कि हम स्वयं ही कम्युनिकेशन सेट्स तैयार कर सकें. फील्ड में कम्युनिकेशंस पर कुछ प्रशिक्षण कक्षाओं को आयोजित किया गया. दुश्मन के हमले का मुकाबला करने की बलिदानी मानसिकता की कमी से इस युनिट के जिम्मेवार कॉमरेड (डीसी स्तर के कामरेड) ने 2009 में आत्मसमर्पण किया. बचे हुए एक अन्य सैक स्तर के कॉमरेड ने बीजे में काम करते हुए 2016 में शहादत को पाया.

वर्तमान में ऐसी स्थिति बनी है कि हमें केंद्रीय स्तर पर कोई सहायक विभाग नहीं है. आंदोलन को फिर से विकसित करने के क्रम में रीजनवार केंद्रीय विभागों का पुनर्निर्माण करने की आवश्यकता है.

रीजनल , स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्यों के विभाग:

सेंट्रल व ईस्टर्न रीजनों में रीजन स्तर पर, स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्य स्तर पर कुछ विभाग हैं. एकता कांग्रेस के बाद 2008 में सेंट्रल

व ईस्टर्न रीजनों में रीजन स्तर के मिलिटरी इंटेलिजेंस विभाग गठित किए गए। दोनों रीजनों में भी ये विभाग 2010-11 तक ठीक ही काम करते रहे। परंतु दुश्मन के हमले के स्वभाव के अनुरूप कार्यपद्धति में बदलाव न करने के फलस्वरूप इसमें कार्यरत राज्य व जिला स्तर के नेतृत्वकारी कॉमरेडों के गिरफ्तार होने, शहीद होने, गैर-सर्वहारा रुझानों के कारण अनुशासनात्मक कार्रवाई का शिकार होने एवं आंदोलन की जरूरतों के मुताबिक इस क्षेत्र के कॉमरेडों का अन्य क्षेत्रों में तबादला करने से यह विभाग 2012 तक कमजोर होकर बाद में उसके काम न करने की स्थिति बन गयी। सेंट्रल रीजन की रीजनल कम्युनिकेशन टीम ने विगत 13 सालों से काम करते हुए कम्युनिकेशन क्षेत्र में अपेक्षाकृत विकास हासिल किया। इस यूनिट का प्रभारी और महिला दोनों ने मार्च 2020 में दुश्मन के सामने घुटने टेक देने से यूनिट को धक्का लगा। डीके, बीजे, एओबी में हथियार तैयारी विभाग (टेक्निकल विभाग) में कुछ युनिट हैं। डीके, बीजे में सेंट्रल युनिटें संबंधित राज्य स्तर की युनिटों के साथ मिलकर काम कर रही हैं। इन 14 सालों में इन युनिटों ने युद्ध क्षेत्र के लिए आवश्यक कुछ हथियार उपलब्ध कराए। कुछ बंदूकों की मरम्मत की। इस बीच में कुछ इंप्रूवाइज्ड हथियारों, प्राथमिक स्तर की आर्टिलरी को विकसित किया। डीके में स्पेशल जोनल मोमिस (मोबाइल मिलिटरी स्कूल) कार्यरत है और नियमित रूप से पीएलजीए बलों को मिलिटरी प्रशिक्षण दे रहा है।

ये सभी युनिटें संख्या के तौर पर कमजोर हैं। हमारे जनयुद्ध के स्तर व जरूरतों के मुताबिक उनके विकसित होने की जरूरत है।

बटालियनों का निर्माण-हमारे अनुभव:

भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में बटालियनों का निर्माण एक उन्नत अनुभव है। इसलिए इस अनुभव के बारे में विशेष रूप से कहने की आवश्यकता है।

कांग्रेस निर्देशित केंद्रीय कार्यभार की पूर्ति के तहत डीके, बीजे में 2010 तक पीएलजीए के फार्मेशनों के गठन में व छापामार युद्ध को उच्च स्तर में विकसित करने के मामले में हमने विकास हासिल किया। इन अनुकूलताओं के आधार पर पीएलजीए में सबसे पहली गुरिल्ला बटालियन का डीके में 10

अगस्त, 2009 को 182 लोगों से गठन किया गया था.

विगत 11 सालों से इस बटालियन के प्रयास ने सकारात्मक नतीजें दिए. लगभग हर साल 1-2 बड़ी कार्रवाइयां, कुछ मध्यम व छोटे किस्म की कार्रवाइयों को अंजाम देती रही. इस बटालियन को केंद्र में रखकर अंजाम दी गयी मुकरम, कोत्ता चेरुवु, बुरकापाल, मिनपा एवं अन्यान्य बड़ी कार्रवाइयों ने दुश्मन के हमले का माकूल जवाब दिया. बटालियन द्वारा की जाने वाली छापामार युद्ध कार्रवाइयां हमारे जन राज्यसत्ता के संगठनों व छापामार आध्दाराओं को बचाने में कुंजीवत बन खड़ी हैं. बड़ी व मध्यम कार्रवाइयों को सफल बनाकर दुश्मन से जो हथियार जब्त किए थे, वो पीएलजीए की हथियार संपत्ति को बढ़ाने में मददगार बने. इसके जरिए सफल छापामार युद्ध कार्रवाइयों ने न सिर्फ जनता एवं स्थानीय जन निर्माणों में बल्कि देश भर के क्रांतिकारी शिविर को उत्साह व आत्मविश्वास से लबरेज किया. फलस्वरूप डीके के दक्षिण सब जोन में भर्ती बढ़ने में मदद मिली. यह बटालियन स्थानीय बलों (सेकंडरी व बेस फोर्स से) से अच्छे तालमेल के साथ युद्ध कार्रवाइयों के संचालन के लिए आवश्यक सभी संसाधनों व जरूरतों की पूर्ति कर रही है. इसने जिन छापामार युद्ध कार्रवाइयों को अंजाम दिया, उन सभी में जनता और मिलिशिया की क्रियाशील भागीदारी थी.

पहली बटालियन ने जो सकारात्मक अनुभव दिए, उन पर निर्भर होकर कांग्रेस निर्देशित कार्यभार 'दंडकारण्य, बिहार-झारखंड में बटालियनों के गठन के लक्ष्य से पीएलजीए की प्राथमिक युनिटों के रूप में कंपनियों का विस्तृत स्तर पर विकसित करें' की पूर्ति में विकास हासिल करने के लिए जनवरी, 2011 में संपन्न केंद्रीय कमेटी की तीसरी बैठक ने यह प्रस्ताव किया कि आगामी दो सालों में बीजे में दो बटालियन व डीके में एक बटालियन गठित की जाए, जहां कंपनियां बनी और बटालियन गठित नहीं कर सकते हैं, वहां अस्थायी बटालियन कमांडों का गठन करके पीएलजीए बलों को केंद्रीकरण-विकेंद्रीकरण कार्यनीति द्वारा संचालित करते हुए छापामार युद्ध को मोबाइल युद्ध में विकसित किया जाए.

इस प्रस्ताव के मुताबिक जून, 2012 में डीके में दूसरी बटालियन का गठन किया गया. परंतु कम समय में ही उसमें कुछ सांगठनिक समस्याएं

उत्पन्न हुई. आखिर अगस्त, 2014 तक उसे रद्द करके दो कंपनियों के रूप में पुनर्निर्माण करना पड़ा. यह हमारे लिए नकारात्मक अनुभव है. सीआरबी और डीके एसजडसी ने यह समीक्षा की कि केंद्र गुरिल्ला बेस के रूप में मौजूद माड इलाके को दुश्मन के हमलों से बचाने के लिए कठिन स्थिति में भी बटालियन निर्माण करने का निर्णय हालांकि सही था लेकिन उच्च स्तर के निर्माण के रूप में बटालियन को राजनीतिक, सैनिक व सांगठनिक तौर पर संचालित करने की सही शक्तियों का चयन कर उन्हें पर्याप्त राजनीतिक-सैनिक-सांगठनिक प्रशिक्षण दिलाए बगैर ही गठन करना सही नहीं था. इस गलती के फलस्वरूप यह निर्माण जल्द ही ध्वस्त हुआ.

सीसी की तीसरी बैठक (जनवरी 2011) में बीजे आंदोलन में सिर्फ अनुकूलताओं को ही देखकर, प्रतिकूलताओं को न देख कर वहां दो गुरिल्ला बटालियनों को गठित करने का जो निर्णय लिया गया है, वह मनोगत था.

डीके में दूसरी बटालियन के अनुभव व बीजे में बटालियनों का निर्माण न कर पाने के नकारात्मक अनुभव से हमें यह सबक लेना चाहिए कि उच्च स्तर के फार्मेशनों के गठन के संदर्भ में संबंधित इलाकों का जनाधार, भर्ती का स्तर, उन फार्मेशनों को चलाने वाली राजनीतिक व मिलिटरी नेतृत्वकारी शक्तियों की स्थिति-स्रोत, हथियारों की स्थिति, इन मामलों पर और भी गहराई से व समग्रता के साथ विचार करें.

गुरिल्ला बटालियनों के गठन के पहले आवश्यकतानुसार बटालियन कमांड गठन ने भी हमें सकारात्मक अनुभव दिया.

वर्तमान में हमारे जनयुद्ध के सामने मौजूद सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक व सांगठनिक समस्याएं

- 1. व्यापक मैदानी, ग्रामीण इलाकों में वर्ग संघर्ष को जारी रखने में विफलता, शहरी नीति के आधार पर शहरी आंदोलन को संचालित करने में विफलता.**

दंडकारण्य, बिहार-झारखंड को मुक्तांचलों में विकसित करने के केंद्रीय कार्यभार को हासिल करने के लिए अन्य छापामार जोनों में शक्ति अनुसार छापामार युद्ध और वर्ग संघर्ष को जारी रखने, देशभर के सभी लाल प्रतिरोध

इलाकों में साम्राज्यवाद विरोधी, दलाल नौकरशाही पूंजीपति विरोधी व सामंती विरोधी संघर्षों को तीव्र करने कांग्रेस ने समूची पार्टी को निर्देशित किया था। उसी तरह 'शहरी इलाकों में हमारा कार्य' के पालिसी के आधार पर मजबूत शहरी आंदोलन का निर्माण करने कांग्रेस ने निर्देशित किया था। परंतु इन 14 सालों की कालावधि में कांग्रेस के निर्देशों के अनुसार व्यापक मैदानी, ग्रामीण इलाकों में वर्ग संघर्ष को जारी रखने में एवं मजबूत शहरी आंदोलन का निर्माण करने में विफल हो गए। इस कर्तव्य को सही रूप से समझने में विफलता ही इसका प्रधान कारण है। प्रतिक्रांतिकारी हमले का तीव्र रूप से जारी रहना वस्तुगत तौर पर इस विफलता का एक मुख्य कारण है ही, नतीजतन हमारा क्रांतिकारी आंदोलन फिलहाल कुछ रणनीतिक इलाकों तक ही सीमित हो गया है। हालांकि मैदानी व शहरी इलाकों में कुछेक जगहों पर वर्ग संघर्ष को संचालित किया गया था, लेकिन उसमें गोलबंद ताकतों को संगठित न कर पाना और आत्मगत शक्तियों को बढ़ा नहीं पाना एक और बड़ी कमजोरी है जिसे हम सामना कर रहे हैं। इस वर्ग संघर्ष में आगे आने वाली ताकतों को लगातार कुछ रणनीतिक इलाकों में जनयुद्ध की अग्रगति के लिए भेज नहीं पाना एक और कमजोरी है।

हमने इन 14 सालों में पहले पांच सालों में डीके, बीजे में उच्च स्तर पर छापामार युद्ध को, उसके बाद एक हद तक छापामार युद्ध व वर्ग संघर्ष को जारी रखा। एओबी में छोटी व मध्यम किस्म की कार्रवाइयों के जरिए छापामार युद्ध एवं वर्ग संघर्ष को संचालित किया। पश्चिम बंगाल में 2011 तक वर्ग संघर्ष एवं छापामार युद्ध को संचालित किया। तेलंगाना में 2018 तक प्रधानतया जनवादी तेलंगाना के लिए वर्ग संघर्ष को संचालित करते आए जबकि विगत 4, 5 सालों से छोटी कार्रवाइयों के जरिए छापामार युद्ध को संचालित कर रहे हैं। बाकी इलाकों में इस दौरान हमारी ताकत के मुताबिक ही सही वर्ग संघर्ष का निर्माण करने में हम विफल हो गए। शहरी आंदोलन का निर्माण करने में विफल हो गए।

हमारे देश में क्रांतिकारी आंदोलन की जीत के लिए आवश्यक तीन जादुई हथियारों—पार्टी, जनसेना, संयुक्त मोर्चा का यदि हम निर्माण करना चाहते हैं, विस्तारित करना चाहते हैं या विकसित करना चाहते हैं तो लगातार

वर्ग संघर्ष को संचालित करना ही उसके लिए प्रधान स्रोत है। उस हेतु हमारे देश में यदि हम मैदानी, वन व शहरी आंदोलनों को परस्पर पूरक के रूप में चिह्नित कर, संचालित नहीं करते हैं एवं लाल प्रतिरोध इलाकों, छापामार जोनों व छापामार आधारों के बीच के अंतस्संबंधों को चिह्नित कर संचालित नहीं करते हैं तो हमारे क्रांतिकारी आंदोलन का आगे बढ़ना मुश्किल ही है। इसका कारण है, उक्त मामले को स्पष्टता व समग्रता के साथ समझने, विभिन्न इलाकों के लिए उपयुक्त वर्ग संघर्ष कार्यक्रम बनाकर दृढ़तापूर्वक अमल कराने, बदलती सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों की जब का तब ठोस रूप से जांच-पड़ताल करते हुए बदली हुई परिस्थितियों के लिए उपयुक्त वर्ग संघर्ष कार्यक्रम बनाकर माओवादी कार्यशैली पर आधारित होकर आत्मगत शक्तियों को बढ़ाने के व्यवहार को जारी रखने में नेतृत्वकारी कमेटियों (सीसी, एसएसी/एसजडसी/एससी) की विफलता।

2. कारपेट सेक्युरिटी को ध्वस्त न कर पाना, आर्टिलरी हासिल न कर पाना.

क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों में 2005 से कारपेट सेक्युरिटी व्यवस्था प्रारंभ हुई। 2008 तक इसे ध्वस्त करने के लिए हमने कुछ रेड, शार्ट सरप्राइज अटैक किए। बीजे में 2014 तक कारपेट सेक्युरिटी व्यवस्था के बाहर के पुलिस थानों/कैपों पर सरप्राइज पर आधारित कुछ रेड किए। मध्य रीजन में 2009 से कारपेट सेक्युरिटी को ध्वस्त करने के लिए हम रेड नहीं कर सके। यह हमारी मिलिटरी विफलता है। वर्तमान में कारपेट सेक्युरिटी को ध्वस्त किए बगैर हम क्रांतिकारी आंदोलन का एक और सीढ़ी (ऊंचाई/मंजिल) तक विकसित होना मुश्किल ही है। यह मिलिटरी क्षेत्र में हमारे सामने मौजूद चुनौती है।

3. पीएलजीए में पार्टी का अपेक्षाकृत कमजोर रहना, कमांडों की कमांडिंग क्षमता व कंबाट बलों की संघर्ष क्षमता सापेक्षिक तौर पर कमजोर रहना.

पीएलजीए के प्रधान, द्वितीय व बुनियादी बलों में मजबूत पार्टी का रहना ही जनयुद्ध में उन्हें सक्षम व सही तरीके से चलाने के लिए गारंटी देता है।

परंतु वर्तमान में पीएलजीए के विभिन्न फारमेशनों में पार्टी अपेक्षाकृत कमजोर ही है. सर्वहारा व पेट्टी बुर्जुआ तबकों से पर्याप्त मात्रा में पार्टी शक्तियों के नहीं रहने के कारण किसान शक्तियों से ही लैस पीएलजीए को संचालित करने, यहां तक कि अपने सैद्धांतिक व राजनीतिक स्तर को बढ़ाने में उन शक्तियों में भी सीमितताओं के कारण इस समस्या का सामना कर रहे हैं. नतीजतन हमारी जनसेना गैर-सर्वहारा रुझानों का सामना कर रही है.

ऊपर से निचले स्तर तक के कमांड हमारे जनयुद्ध को नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं. परंतु एलआईसी जोकि काउंटर इंसर्जेंसी सिद्धांत है, का अध्ययन करने, दुश्मन के प्रतिष्ठापामार युद्ध कार्यनीति का अध्ययन करने, जनयुद्ध के स्तर के मुताबिक छापामार कार्यनीति बनाने, उस कार्यनीति के आधार पर टीसीओसीयों और प्रतिरोध कार्रवाइयों की योजनाएं बनाने व उन्हें सफल बनाने के लिए हमारे बलों को मोटिवेट करने, युद्ध कार्रवाइयों व अभियानों को सक्षम तरीके से कमांडिंग (सी-4) करने में हमारे कमांड अपेक्षाकृत कमजोर हैं.

कमजोर जनसेना को मजबूत सेना के रूप में विकसित होने के लिए आवश्यक हैं, सर्वहारा वर्गीय सिद्धांत मालेमा से सशस्त्र बनना, हिम्मत व साहस के साथ संघर्ष करने के साथ जनयुद्ध में युद्ध आपूर्ति की कमी से पार पाते हुए सीमित संसाधनों से जनयुद्ध में जीतें हासिल करना है. दुश्मन की कार्यनीति का पलटवार करने के स्तर में हमेशा कंबाट स्किल्स व टेक्निकल स्किल्स को बढ़ाना एवं उन पर पकड़ हासिल करना जरूरी है. तभी हमारे बलों की कंबाट क्षमता बेहतर रहेगी. इन मामलों में हमारे बलों का सामर्थ्य अपेक्षाकृत कमजोर है.

4. पीएलजीए के संगठितकरण की समस्या:

विगत 14 सालों की कालावधि में अस्थायी पीछेहट का शिकार हुए इलाकों में आंदोलन के मजबूत न होने के कारण मध्य व पूर्वी रीजनों में कांग्रेस निर्देशित केंद्रीय कर्तव्य को हासिल करने के लिए पीएलजीए युनिटों का निर्माण, विस्तार व उच्च स्तर के फार्मेशनों का गठन प्रधानतया डीके, बीजे की भर्ती पर निर्भर होकर ही जारी रहा. क्रांतिकारी आंदोलन के आगे बढ़ने के दौर में पीएलजीए फार्मेशनों का विस्तार करने व उच्च स्तर के फार्मेशनों के गठन

के लिए; क्रांतिकारी आंदोलन के अनुकूल हो या प्रतिकूल, जैसी भी परिस्थितियों के दौर में आंदोलन के विस्तार के लिए, नेतृत्व की सुरक्षा जरूरतों के लिए इन इलाकों से कुछ शक्तियों के आवंटन से द्वितीय बलों के निर्माण में लगातार बदलाव हुआ जिसके चलते नेतृत्व व सदस्यों के संरचना (कांपोजिशन) में बदलाव आ रहे हैं. पर्याप्त हथियार उपलब्ध न कराने, सदस्यों की कमी की वजह से पर्याप्त संख्या में सदस्यों को सेकंडरी बलों के लिए आवंटित नहीं कर पा रहे हैं. भर्ती के घट जाने से 2013 के प्रारंभ तक बीजे में एवं 2017 प्रारंभ तक डीके में कुछ इलाकों में कुछ एलजीएस एवं कुछ प्लाटूनों को हमने रद्द किया और 2020 तक कुछ कंपनियों और प्लाटूनों का स्तर घटाया गया, जिनका पुनर्निर्माण नहीं कर पाए. कुछ जगहों पर हालांकि पुनर्निर्माण किया गया था लेकिन उन्हें संगठित करने में सीमितताएं रह रही हैं. इससे एलजीएस एवं प्लाटूनों की संघर्ष क्षमता घटकर उनके द्वारा की जाने वाली छोटे व मध्यम किस्म की कार्रवाइयां कम हो गयीं. वर्तमान में क्रांतिकारी आंदोलन के सभी इलाकों में प्रधान व द्वितीय बलों में निर्धारित संख्या में सदस्य नहीं हैं और हथियारों की कमी है.

4. जन संगठन-संयुक्त मोर्चा

2007 की एकता कांग्रेस के बाद पिछले 14 सालों में संयुक्त मोर्चा क्षेत्र में हमारी पार्टी का कार्य की समीक्षा करने का मतलब है, उस कांग्रेस द्वारा बनायी गयी पार्टी राजनीतिक लाइन, याने नवजनवादी क्रांति की रणनीति का अमल को समीक्षा करना ही है. इसके तहत जनता से शत्रु वर्गों को अलग-थलग करते हुए, मजदूर-किसान मित्रता के बुनियाद पर, सर्वहारा के नेतृत्व में मित्र वर्गों को विभिन्न रणनीतिक व कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चों में संगठित करने, उनके नेतृत्व में मजदूर, किसान, मध्यम वर्ग, छोटे व मध्यम व्यापारी/पूंजीपति आदि व्यापक उत्पीड़ित वर्गों, उत्पीड़ित तबकों, उत्पीड़ित सामाजिक समुदायों के जनता को गोलबंद कर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि समस्याओं पर आंदोलनों का निर्माण करने व विकसित करने में; इसमें प्रधान रूप से कृषि क्रांति की धुरी पर व्यापक ग्रामीण इलाकों में व्यापक उत्पीड़ित किसानों को गोलबंद कर सामंती सत्ता उखाड़ फेखकर, क्रांतिकारी जन राजसत्ता को स्थापित करने व विकसित करने में हमारी पार्टी का कार्य की समीक्षा करनी होगी. विशेषकर जनांदोलनों के क्रम में हमारी क्रांतिकारी पक्ष में जीते गए मित्र वर्गों पर सर्वहारा के नेतृत्व को स्थापित करते हुए क्रमशः रणनीति संयुक्त मोर्चा को मजबूत करने में; पार्टी के हाथों संयुक्त मोर्चा को बतौर एक जादुई हथियार के रूप में, पार्टी के नेतृत्व में जनयुद्ध को चलाने लायक उसे ढालने में हमारा कार्य की समीक्षा करनी है. कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चों में सर्वहारा नेतृत्व को स्थापित करने व विकसित करने; उनके नेतृत्व में व्यापक जनांदोलनों को निर्मित व विकसित करने; उस तरह के संयुक्त मोर्चों में स्वतंत्र कार्यक्रम बनाना, उस कार्यक्रम को संयुक्त मंचों पर अनुमोदित करवाकर लागू करने के लिए किए गए प्रयास को, इन तमाम चीजों में हमारी सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं की समीक्षा करनी है.

पार्टी की एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस 2007 में संयुक्त मोर्चा के जो कार्यभार तय किए, पहले उन पर संक्षेप में नजर डालते हैं. यदि हम कांग्रेस द्वारा तय नौ कार्यभारों को दो भागों में विभाजित करते हैं तो पहले किस्म के मोर्चे ये हैं कि उनमें रणनीतिक दृष्टि से गठित किए जाने वाले संयुक्त मोर्चे

को मजबूत करने के लिए लिए गए हैं जबकि ये दूसरे किस्म के मोर्चे हैं कि साम्राज्यवादियों, उनके दलालों के जनविरोधी व देशविरोधी नीतियों के खिलाफ मजदूर, किसान, छात्र, बुद्धिजीवी, प्रगतिशील, जनवादी, देशभक्त एवं धर्मनिरपेक्ष ताकतों के साथ एकजुट होकर कार्यनीतिक स्वभाव से युक्त संयुक्त मोर्चे का निर्माण करने के लिए लिए गए हैं। कांग्रेस ने जो कार्यभार तय किए, उनमें राष्ट्रीयमुक्ति के लिए चल रहे सशस्त्र संघर्षों के साथ समन्वय, ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद के खिलाफ धर्मनिरपेक्षों व अल्पसंख्यकों विशेषकर मुसलमान अल्पसंख्यकों के साथ मिलकर व्यापक मोर्चे का निर्माण करना, पितृसत्ता के खिलाफ महिलाओं को गोलबंद कर मोर्चा बनाने जैसे रणनीतिक महत्व के भी मामलें हैं। केंद्रीय कमेटी ने उन सभी कार्यभारों जिन्हें कांग्रेस ने तय किया, को अपनाकर विगत 14 सालों के दौरान उन पर अमल करने के लिए जो कार्य किए, यहां उनकी समीक्षा करते हैं।

विगत 14 सालों की समयावधि में, 2011 तक आंदोलन की जीतें प्रधान थीं। जनयुद्ध में जनता को सक्रिय व व्यापक रूप से गोलबंद करते हुए दुश्मन को जबर्दस्त धक्के पहुंचाते हुए कई सफलताएं हासिल किए थे। रणनीतिक इलाकों में जहां दुश्मन कमजोर है, उनकी सत्ता को ध्वस्त करते हुए क्रांतिकारी जन राजसत्ता के इकाइयों (आरपीसी), छापामार आधारों को गठित किए। इस दौरान आंदोलन के सभी इलाकों में सभी वर्गीय संगठन और तमाम संयुक्त मोर्चे काफी सक्रिय रूप से काम कर रहे थे। उस समय में अखिल भारतीय स्तर के कुछ जन संगठनों और संयुक्त मोर्चे अपेक्षाकृत सक्रिय रूप से काम किया। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो उन्हें जनयुद्ध तेज व विस्तार होने के लिए मदद की। परंतु बाद के काल में इनकी सक्रियता और छापामार की तीव्रता व व्यापकता में ढलान पर आकर, आंदोलन कठिन दौर में चला गया। पिछले 9 सालों से बढ़ती प्रतिकूलताओं के बीच में ही इनकी गतिविधियां जारी हैं। वर्तमान अस्थायी पीछेहट की स्थिति से उबरने का प्रयास कर रहे हैं।

क्रांतिकारी जन राजसत्ता के इकाइयां और छापामार आधारः

कांग्रेस के कार्यभारों पर अमल के तहत कांग्रेस के फौरन बाद डीके व

बीजे के साथ एओबी में केंद्रीय कार्यभार के मुताबिक जन राज्यसत्ता की संस्थाओं की निर्माण प्रक्रिया तेज हो गयी. बीजे व एओबी में एरिया स्तर में, दंडकारण्य में डिविजन स्तर की जनताना सरकारें गठित हुई, डीके स्पेशल जोन स्तर में आरपीसी समन्वय कमेटी गठित हुई.

दंडकारण्य में कांग्रेस तक अस्तित्व में आई एरिया जनताना सरकारों (एआरपीसी) के ऊपर, उसके उपरांत काल में डिविजन स्तर की जनताना सरकारें गठित हुई. उसके बाद 2008 में जोन जनताना सरकार तैयारी कमेटी गठित हुई. डीके में जहां गांव (पंचायत), एरिया, डिविजन आरपीसियों की गठन हुई, वहां उनकी प्रतिनिधि सभाएं व चुनाव हर तीन साल में एक बार नियमित रूप से आयोजित हो रही हैं. नयी कमेटियां चुनी जा रही हैं. इन कमेटियों ने सक्रिय रूप से काम करते हुए जनता का विश्वास हासिल किया है. इन्होंने 2011 तक दंडकारण्य में सैनिक क्षेत्र में हासिल जीतों में क्रांतिकारी जनताना सरकारों की भूमिका अविभाज्य है. दुश्मन पर किए गए हर जबर्दस्त छापामार हमले (बैटिल) की जीत के लिए स्थानीय जनताना सरकारों ने क्रियाशील व सक्रिय भूमिका निभायी. ये राजनीतिक सत्त की इकाइयों में रूप में संगठित होते हुए विस्तार करने के लिए राजनीतिक, सैनिक, सांगठनिक, जनकल्याण और सांस्कृतिक तौर पर जनता की जीवन स्तर बढ़ाने, जनता को सक्रिय रूप से गोलबंद करते हुए उनकी समस्याओं को हल करने में सक्रिय रूप से काम किया. लगभग सभी जगहों पर जनमुक्ति छापामार सेना में क्रांतिकारी जन निर्माणों के युवा की भर्ती का प्रोत्साहन दिया. उसके बाद सामना की गयी कठिन दौर में क्रमशः कुछ जगहों पर वो ध्वस्त हुई, कुछेक जगहों पर निष्क्रिय हुई. करीबन एक—तिहाई अब भी तक जनता की भागीदारी के साथ सक्रिय रूप से काम कर रही हैं. कुछ जगहों पर जनविरोधी आदिवासी मुखियाओं की जमीनों को जब्त करके उन्हें भूमिहीन, गरीब किसानों के बीच वितरित किया गया.

दूसरी ओर दंडकारण्य में 2011 से क्रांतिकारी जनताना सरकारों द्वारा सहकारी पद्धति में जनता के कृषि कार्य में मुख्य बदलावों के बारे में 'भूमि समतलीकरण, क्यारियों का निर्माण, सिंचाई व्यवस्था का निमार्ण' अभियान का आह्वान देने के साथ ही हर साल दो से तीन सप्ताह तक प्रति दिन औसतन

डेढ़ लाख जनता (स्त्रीयों-पुरुषों) का उसमें उत्साह के साथ शामिल होना जारी है। इसे प्रधानतया वर्गीय बुनियाद पर/प्राथमिकता के अनुसार ही संचालित कर रहे हैं। जनता अपने श्रम साधनों व खाद्य पदार्थों को संग्रहित कर रही है जबकि आवश्यकतानुसार जनताना सरकारें निधियों का आवंटन कर रही हैं। तब से लेकर दुश्मन इस 'भूमि समतलीकरण' अभियान को धक्का पहुंचाने के लक्ष्य से उस अभियान के दौरान में हमलों को तेज करने लग जाता है। गरिप्तारियां व हत्याकांड कर रहा है। फिर भी जनता बदलती परिस्थितियों के अनुरूप पद्धतियों व रूपों को बदलकर क्रांतिकारी दृढसंकल्प के साथ हर साल इस अभियान में अब भी विभिन्न स्तरों में अपेक्षाकृत बड़े पैमाने पर शामिल होते हुए सफल बना रही है।

लेकिन हमने निष्क्रिय आरपीसीयों को सक्रिय बनाने, जो ध्वस्त हुए उन्हें पुनर्निर्माण करना, जनता में उनपर और विश्वास बढ़ाने में मिली अवसरों को उचित रूप से इस्तेमाल नहीं कर पा रहे हैं। स्थानीय क्रांतिकारी जनताना सरकारें व संबंधित पार्टी कमेटियां भूमि समतलीकरण अभियानों को सही समय पर समीक्षा करने में कमियां जारी हैं।

बीजे में क्रांतिकारी आंदोलन गुरिल्ला जोन स्तर तक विकसित होने से पहले, आरपीसीयों का निर्माण से पहले, क्रांतिकारी किसान कमेटियों (केकेसी) का निर्माण करते आए थे। इनके प्रधान लक्ष्य ग्रामीण इलाकों में सामंती सत्ता को उखाड़ फेंककर, जनता की राजनीतिक सत्ता को स्थापित करना। दशियों सालों से केकेसी यूनिट ग्राम, एरिया स्तर में ही नहीं, बल्कि सबजोन/ब्लाक, जोन/जिले स्तरों में गठित होकर कार्य किया। हमारी एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित केंद्रीय कर्तव्य को हासिल करने के तहत एक योजनाबद्ध तरीके से आरपीसीयों का निर्माण करने का सीसी/इआरबी के निर्णय के तहत बीजे, पू.बि.-पू.उ.झा. सैकों में कार्य किया गया। इसके तहत कई ग्राम स्तर के आरपीसी, तीन एरिया स्तर के आरपीसी गठित होकर काम किया। वो जमींदारों के पास से जमीन जब्त कर भूमिहीन-गरीब किसानों के बीच वितरित किया। जनता को बीज व खाद उपलब्ध कराया। कृषि में मेड़ों का निर्माण, छोटे-छोटे तालाबों व कुंवों, केनालों का निर्माण, चेकडेम, मध्य स्तर के बांधों का निर्माण कर सिंचन व्यवस्था उपलब्ध कराया। पेयजल उपलब्ध करने के लिए ज्यादातर

गांवों में कुछ कुंवों को रिपेर किया. कुछ नए कुंवों का निर्माण किया. बच्चों की पढ़ाई के लिए कई स्कूल चलाए. जनता के लिए स्वास्थ्य सेवाएं मेडिकल शिविरों के जरिए, मेडिकल दस्तों के जरिए उपलब्ध कराया. कुछ गांवों में वृक्षारोपण किया. जनता की जीवन स्तर बढ़ाने का प्रयास किया. आरपीसी की रक्षा के लिए ग्राम स्तर में जन मिलिशिया और कई आत्मरक्षा दस्तें सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं.

बीजे में लंबे क्रांतिकारी आंदोलन के क्रम में क्रांतिकारी जनता की सत्ता का निर्माण के तहत आरपीसीयों की स्थापना कर जनता की सपने को साकार किए हैं. वर्तमान इन्हें सुव्यवस्थिति कर, मजबूत करते हुए विकसित करने व हमारे तमाम संघर्षरत इलाकों में विस्तारित करने की जरूरत है. इस तरह एक योजनाबद्ध तरीके से आरपीसीयों की स्थापना के लिए सांगठनिक तैयारियां कर निर्माण करने में, फंक्शनिंग करवाने में, उनका काम की समीक्षा करने में, उन्हें विकसित कर विस्तारित करने में गंभीर कमजोरी है. आरपीसीयों की रक्षा के लिए जन मिलिशिया (सेक्शन, प्लाटून व कंपनी फारमेशनों में) मजबूत करने में, उनकी मदद में पीएलजीए के प्रधान व द्वितीय बलों का निर्माण कर मजबूत करने में कमजोरी है. किंतु दुश्मन के तीव्र हमले में ये ज्यादातर ध्वस्त हो गए.

पश्चिम बंग में लालगढ़ आंदोलन के तहत उभर कर आयी जन सरकार को एरिया आरपीसी का आकार देकर, उसके मातहत ग्राम स्तर के आरपीसीयां गठित करने की प्रक्रिया दुश्मन के दमन की वजह से लागू नहीं हो पायी.

एओबी में क्रांतिकारी जन कमेटियों को निर्माण करने व विस्तार करने का प्रयास हुआ. इस काल में आरपीसीयों की संख्या बढ़ना व घटाना दिखती थी. वो स्थिरता से काम नहीं कर पा रही थी. सर्वप्रथम गालिकोंडा एरिया में कई गांवों में आरपीसीयों को गठित कर उन्हें फंक्शनिंग कर एक अच्छा अनुभव हासिल किया. 2013 तक 13 आरपीसीयां गठित होने समेत कलिमेला एरिया आरपीसी तैयारी कमेटी का निर्माण किया. तमाम इलाकों में आरपीसीयों के नेतृत्व में कृषि विकास के कार्यक्रम चलाए. हालांकि दुश्मन के गंभीर दमन समेत पार्टी की केंद्रीकरण उचित रूप से नहीं होने की वजह से उन तमाम निर्माण कुछ काल में ही ध्वस्त हो गए. पर 2014 में जी.बी. के निर्माण पर प्राथमिकता देने का एसजडसी द्वारा लिए गए निर्णय के तहत चुने गए इलाके

में नेतृत्व के केंद्रीकरण समेत, सामाजिक शोध, फील्ड ट्रेनिंग चलाकर, कृषि क्रांति के कार्यक्रम को जारी रखते हुए, अभियानों के रूप में संगठितिकरण पर ध्यान देकर जनसंगठन, पार्टी, मिलिशिया, पांच पाकेट आरपीसीयों का निर्माण समेत और कुछ पाकेटों में आरपीसीयों का निर्माण करने के लिए जरूरी तैयारी की. कट आफ और पेदाबयलु एरियाओं में क्रांतिकारी भूमि सुधारों को लेकर कुछ गांवों में सामूहिक टीमों के रूप में और 23 गांवों में सहकारी टीमों के रूप में गठित होकर कृषि और जमीन समतल कार्यक्रम चला रहे हैं. कुछ जगहों पर चेकडेम निर्माण कर सिंचन सुविधा उपलब्ध करवाया. कृषि औजार, पशु और बीज का वितरण किया. बिना खेती योग्य वाली टीले वाली जमीन में काजू का पेड़ रोपा गया. सहकारी और सामूहिक कृषि के जरिए खेती का क्षेत्रफल बढ़ी, साथ-साथ फसल उत्पादन बढ़ा. अफीम खेती का हतोत्साह करते हुए जनता में प्रचार कर उसे कुछ हद तक कम किया. फसलों की अदला बदली, साग-सब्जी खेती, फल बागवानी का प्रोत्साहन दिया. कट आफ एरिया में हजारों जनता स्वेच्छा से गोलबंद होकर महीनों भर श्रम कर गांवों के बीच लगभग 50 कि.मी. सड़क निर्माण किया.

महाराष्ट्र के उत्तर गढ़चिरौली-गोंदिया डिविजन में कुछ आरपीसीयां गठित हुईं. एरिया आरपीसी के निर्माण के लिए आवश्यक तैयारियां की गयी. लेकिन बाद के क्रम में दुश्मन के हमलों के बढ़ने के साथ ही वो ध्वस्त हो गयी.

ओड़िशा में आरपीसी निर्माण प्रक्रिया अपनायी गयी. नियमगिरी में विस्थापन विरोधी आंदोलन जोकि समरशील ढंग से जारी था, का उन्होंने नेतृत्व प्रदान करने का प्रयास किया. कृषि क्रांति के कार्यक्रम अपनाकर जनता को संगठित करने में उन्होंने अपने हिस्से की भूमिका निभायी. उनके मजबूत होकर विकसित होने के समय में ही एक तरफ तीव्र दमन व दूसरी ओर हमारे स्थानीय नेतृत्वकारी शक्तियों को खोने की वजह से आरपीसीयों का निर्माण अस्थायी तौर पर पिछड़ गया. फिर से उनके संगठितिकरण का कार्य जारी है.

तेलंगाना के आदिवासी ग्रामीण इलाके में 2019 तक तीन आरपीसी होते थे. दुश्मन के भीषण हमलों की वजह से दो आरपीसीयां भंग हो गयी, जबकि एक आरपीसी ही काम कर रही है. किंतु कृषि क्रांति का कार्यक्रम लागू है, इसके तहत जनसंगठनों के नेतृत्व में जनता सामूहिक रूप से जमीन समतल

कार्यक्रम चला रहे हैं। खेतों के मेड़, सिंचन और पेयजल के लिए छोटे-बड़े तलाब निर्माण कर रहे हैं। मछली पालन, साग-सब्जी बागवानी आदि न्यूनतम कृषि सुधार कार्यक्रम लागू करते हुए पार्टी नेतृत्व में जनता की जीवन स्तर बढ़ाने के लिए प्रयास कर रहे हैं।

विगत तीन-चार सालों से कुछ जगहों पर आरपीसियों को गुप्त रूप से संचालित करने का प्रयास कर रहे हैं। कॉरपेट सेक्युरिटी के बीच सत्ता को संचालित कर सकने, सृजनात्मक ढंग से जनसत्ता चलाने के लिए किए जा रहे कार्य में कुछ हद तक अच्छे अनुभव हासिल कर रहे हैं। तथापि उनमें जो समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं, स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन स्तर का नेतृत्व नजदीक रहकर मार्गदर्शन देने के जरिए ही उनका सही हल निकाल सकते हैं। परंतु यह प्रयास पर्याप्त मात्रा में नहीं चल रहा है।

जनसंगठन-संयुक्त मार्च के मंच

अखिल भारत के जनसंगठन दो किस्म के हैं। पहला, क्रांतिकारी जनसंगठन, जबकि दूसरा, व्यापक आधार पर बनने वाले विभिन्न संयुक्त मोर्चे के मंच/जनसंगठन। क्रांतिकारी जनसंगठनों ने साम्राज्यवाद विरोधी व सामंतवाद विरोधी आंदोलनों में जनता को गोलबंद करने का प्रयास करते हुए ही व्यापक जनसमुदायों के और व्यापक तबकों को, प्रगतिशील संगठनों, शक्तियों, अन्य जनवादी संगठनों को क्रांतिकारी शिविर की ओर लाने का प्रयास किए।

आंदालेन के इलाकों में जिन इलाकों में आरपीसीयों का निर्माण हुआ, वहां उन्होंने किसान जनता को कृषि क्रांतिकारी गुरिल्ला युद्ध में गोलबंद करते हुए ही जनता को जनसंगठनों में संगठित करते हुए वर्गसंघर्षों में, जनांदोलनों में गोलबंद कर रही हैं। राजनीतिक प्रचार कर रही हैं। जहां आरपीसीयां गठित नहीं हुआ, वहां यह काम कुछ हद तक क्रांतिकारी जनसंगठन कर रहे हैं।

कठिन दौर में डीके में कमजोर हुए किसान मजदूर, महिला, सांस्कृतिक व बाल संगठनों को जब का जब मजबूत करने और पुनर्निर्माण करने की प्रक्रिया हो रही है। ग्राम, पंचायत, एरिया, कुछ जगहों पर डिविजन स्तरों में, लगभग सभी जगहों पर इन जनसंगठनों का अधिवेशन आयोजन कर कार्यकारिणी चुन रहे हैं। डिविजन, एरिया स्तर के जनसंगठनों की कमेटियों

का कामकाज एक हद जारी है, मगर ग्राम व पंचायत स्तर के कमेटियां सही रूप से काम नहीं कर रहे हैं. 2020 में लिए गए संगठितकरण (पार्टी, पीएलजीए, जनसंगठन व आरपीसी) अभियान के तहत इन संगठनों का संगठित करने का कार्यक्रम चल रहा है. मजबूत इलाकों में ये विभिन्न जनांदोलनों और जन कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से जनता को गोलबंद कर रहे हैं.

बीजे में 2010 तक क्रांतिकारी जनसंगठन काम किया. उसके बाद दुश्मन के पाशविक ग्रीनहंट हमले में ये बहुत हद तक ध्वस्त हो गए. मगर उसके बाद इनके निर्माण व आंदोलन की गतिविधियां स्वतस्फूर्ति से किए जा रहे हैं. इन्हें सक्रिय करने का प्रयास करते हुए अलग-अलग स्तरों में जनता को गोलबंद कर रहे हैं. अन्य जनवादी जनसंगठन भी कुछ सीमितताओं में काम कर रहे हैं.

एओबी में 2013 तक क्रांतिकारी जनसंगठन लगभग ग्राम, पाकेट और एरिया स्तर में काम किया. उसके बाद दुश्मन के हमले में ध्वस्त हो जाना, फिर से पुनर्निर्माण करने की प्रक्रिया जारी है. विशेषकर हमारे मजबूत इलाकों में इनका नियमित रूप से फंक्शनिंग कर पा रहे हैं.

इसी तरह ओड़िशा, तेलंगाना, एमएमसी आदि इलाकों में क्रमशः जनसंगठनों का निर्माण गठित हो रहे हैं. किंतु दुश्मन के दमन में उनका कामकाज प्राथमिक स्तर पर ही चला पा रहे हैं. क्रमशः संगठनों की सक्रियता बढ़ाने पर हमारी पार्टी की कमेटियां एक हद तक ध्यान दे रहे हैं.

हमारी पार्टी ने देशभर के क्रांतिकारी इलाकों में नहीं, बल्कि जनता के दैनंदिन समस्याओं पर, जमीन, विस्थापन, रोजगार आदि समस्याओं पर, किसान, मजदूरों की मौलिक समस्याओं पर, छात्र, बुद्धिजीवी, महिला, आदिवासी, दलित, धार्मिक अल्पसंख्यकों की समस्याओं पर, राज्यहिंसा, राजनीतिक बंदियों की रिहाई, ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद, सरकारी झूठी सुधारों, सरकारी व पुलिस बलों के सिविक एक्शन प्रोग्राम आदि समस्याओं पर कार्यनीतिक तौर पर विभिन्न जनसंगठनों और संयुक्त मोर्चों को गठित किया. विभिन्न उत्पीड़ित वर्गों व उत्पीड़ित तबकों व समुदायों की जनता को जनसंगठनों में गोलबंद की

है. देशभर में और विभिन्न राज्यों में भी बड़े पैमाने पर हुए इस तरह के जनांदोलनों में उत्पीड़ित वर्गों, तबकों व राष्ट्रीयताओं के बीच एकता बढ़ रही है. जनता का नेतृत्व प्रदान करने वाली एक नयी तबका उभर कर आ रही है.

भारत देश का संविधान में नाम के वास्ते शामिल किए गए विभिन्न पेसा, 5वीं व छठवीं अनुसूचित कानूनों के अमल के लिए आंदोलन के कुछ इलाकों में ग्राम स्तर पर संयुक्त मोर्चे के मंचों का निर्माण करते हुए व्यापक जनता को हमने गोलबंद कर कर रहे हैं. जनता जल-जंगल-जमीन पर कानून अधिकार के लिए जुझारू रूप से लड़ रही हैं. सरकारें कुछ प्रतिघाती संगठनों को सामने लाकर इन संयुक्त मोर्चे के मंचों नुकसान पहुंचाने के लिए साजिशें कीं, फिर भी जनता लड़ रही हैं. उसके बाद के क्रम में देश के कई आदिवासी बहुल इलाकों में इस जनांदोलन 'हमारा गांव में हमारी सरकार' के नारे को लेकर 'पथलगड़ी' आंदोलन का उभार आया और विस्तार हुआ। इसके समर्थन में शहरों में कई प्रगतिशील व जनवादी संगठन व हस्तियों ने आगे आए.

उसी तरह स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्यों में लगातार तीव्र राज्य दमन जारी है, बावजूद विभिन्न उत्पीड़ित वर्गों, उत्पीड़ित तबकों व समुदायों की जनता संगठित करने के लिए कई जनवादी संगठन गठित होकर काम कर रहे हैं. व्यापक आधार पर कई समस्याओं पर राजनीतिक आंदोलन चला रहे हैं.

देश में बढ़ रही हिंदुत्व शक्तियों की हथकंडे, उनकी प्रतिघाती छात्र संगठनों का विस्तार और शिक्षा व्यापारीकरण के साथ छात्रों में तीव्र अशांति फैल रही है. फलतः वे कई समस्याओं पर जुझारू रूप से हड़तालों में उतरना पिछले 5-6 सालों में बढ़ी है. देश में क्रांतिकारी व जनवादी छात्र संगठनों बहुत कमजोर है. बावजूद अपनी शक्ति के अनुसार इन आंदोलनों में वे हिस्सा ले रहे हैं. इन आंदोलनों का दिशा निर्देशन करते हुए उनका नेतृत्व प्रदान करने लायक इन छात्र संगठनों को मजबूत करने की जरूरत है.

अखिल भारतीय जन संगठनों को समन्वित करके मार्गदर्शन देने के लिए बनाया गया केंद्रीय कमेटी के नेतृत्व में गठित 'सुकोमो' जब तक काम करता रहा, तब तक याने 2011 तक वह सकारात्मक परिणाम दिया. अखिल भारतीय

जनसंगठनों ने अपने प्रयास में अच्छे परिणाम हासिल किए. उसके बाद हमारी केंद्रीय कमेटी को हुए भारी नुकसानों से 'सुकोमो' समेत ज्यादातर जनसंगठन ध्वस्त हो गए. संयुक्त मोर्चा के क्षेत्र में हमारा कार्य बहुत ही नकारात्मक रूप से प्रभावित हुआ. उसके बाद दुश्मन के भीषण हमले, पार्टी के नुकसानों से वो बहुत सीमित हो गए, देश में क्रांतिकारी व जनवादी शक्तियों द्वारा संचालित संयुक्त मोर्चे की गतिविधियों को दुश्मन से थोड़ा भी अनुमति न मिलन की स्थिति 2014 की आखिरी तक ही उत्पन्न हो गयी.

कुल मिलाकर, हमें चार जनवादी वर्गों के संयुक्त मोर्चे में किसानों को छोड़ बाकी वर्गों को गोलबंद कर संगठित करने में काफी पिछड़ गए हैं. विभिन्न क्रांतिकारी व जनवादी शक्तियों को गोलबंद व संगठित करना सीमित हो जाने से क्रांतिकारी आंदोलन की अग्रगति में तीव्र बाधा बनी हुई है.

जनांदोलन

क्रांतिकारी आंदोलन पर दिन-ब-दिन तेज हो जा रहे दमन के बीच ही देशभर में और आंदोलन के तमाम इलाकों में हमारी पार्टी के नेतृत्व में और विभिन्न संयुक्त मोर्चे के मंचों के नेतृत्व में भी विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक समस्याओं पर व्यापक जनांदोलन हुए. इसमें मजदूरों, किसानों, दलितों, आदिवासियों, छात्रों, महिलाओं, विस्थापित जनता की समस्याओं, पर्यावरण, भ्रष्टाचार, सूदखोरी शोषण से संबंधित समस्याओं को लेकर आंदोलन चलाए.

विस्थापन विरोधी आंदोलन: क्रांतिकारी जनसंगठन व जनाधार जहां मजबूत है, सिर्फ वहीं पर नहीं, बल्कि देशभर में साम्राज्यवादियों, दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों, बड़े सामंतियों को खिलाफ जनता चेतनापूर्वक आगे बढ़ रही है. ये संघर्ष प्रधानतया भूमि समस्या को केंद्र में रखकर उनके अस्तित्व के लिए जारी हैं. आर्थिक संकट से जूझ रहे साम्राज्यवादियों व देश के शासक वर्गों के लिए ये जन संघर्ष एक बड़ी चुनौती के रूप में खड़े हैं. इन 14 सालों में देशभर में हुए कई समरशील जन संघर्षों का यदि विश्लेषण करते हैं तो निर्विवाद रूप से कह सकते हैं कि यह पूरा समय विशेषकर हमारे आंदोलन के इलाकों में 'विस्थापन विरोधी जन आंदोलनों के समय' के तौर पर गुजरा

या वह एक प्रधान रुझान के रूप में खड़ी है। इस समय में बहुराष्ट्रीय कारपोरेशनों और देशीय कॉरपोरेट वर्गों, राज्यसत्ता के विरोध में जनता ने एसी कई विजय हासिल की जो इतिहास में अपना स्थान दर्ज करेंगे।

झारखंड में भाजपा सरकार ने छोटा नागपुर टेनेंसी एक्ट, संथाल परगना टेनेंसी एक्ट (सीएनटी, एसपीटी) में कॉरपोरेट वर्गों के हितों के अनुरूप संशोधन करना चाहा। परंतु उस राज्य की जनता सरकार की सभी दमनकारी नीतियों का हिम्मत के साथ सामना करते हुए जुझारू संघर्षों के जरिए उसे रोका है। उसी तरह उस राज्य में भूमि अधिग्रहण संशोधन कानून-2017 को भंग करने की मांग को लेकर आंदोलन हुए। 'हमारा गांव में हमारी सरकार' के नारे के साथ पथलगड़ी जनांदोलन उस राज्य से कई आदिवासी बहुल राज्यों में विस्तारित हुआ। गोड्डा जिले में अदानी पॉवर प्लांट, गुमला जिले के सालकोट में वन्यजीवी संरक्षण केंद्र, ग्रेटर रांची, ईको सेन्सिटिव जोन के कारण विस्थापित होने वाले हजारों आदिवासी और गैर-आदिवासी जनांदोलन व्यापक रूप से चलाए गए।

पश्चिम बंगाल के सिंगूर में उपजाऊ कृषि जमीन में प्रस्तावित टाटा प्लांट के खिलाफ किसान एकजुट होकर लड़े और टाटा को वहां से भगाएं। नंदिग्राम में उच्च स्तर पर जुझारू ढंग से चले जन प्रतिरोध के चलते वहां से सलेम गुप कंपनी का उपसंहार हुआ। लालगढ़ में दलाल पूंजीपति जिंदल की रक्षा के लिए आए पुलिस के अत्याचारों के खिलाफ जनता द्वारा राज्यसत्ता के खिलाफ पुलिस अत्याचार निरोधक जन कमेटी (पीसीएपीए) बनाकर महान जन संघर्ष चलाए गए।

ओड़िशा के कलिंगनगर में विस्थापन विरोधी आंदोलन, नियमगिरी में वेदांता बाक्साइट खदान का विस्तार, और इस तरह के कई खनन परियोजनाओं तथा रिफायनरी के कार्यों को बंद करना के आंदोलन न सिर्फ देश में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हुए।

दंडकारण्य (छत्तीसगढ़ व महाराष्ट्र) में जनता ने एकजुटता से आंदोलन चलाकर लोहांडीगुडा से टाटा कंपनी की वापसी करने में मजबूर की। धुरली (पश्चिम बस्तर) में माइनिंग विस्तार को रोका है। आमदाई, रावघाट, पिट्टोड़मेट्टा,

सुर्जागढ़, आगरा मसेली, दमकोड़ी, झंडेपार (यहां भी लोहे के प्लांट को बंद करना पड़ा) खदान परियोजनाओं के खिलाफ, बोधघाट बांध के खिलाफ विस्थापित होने वाली जनता ने आंदोलन कर रही हैं।

एओबी के विशाखा में बाक्साइट खनन के खिलाफ लंबे समय से आदिवासी जनता ने संघर्ष कर विजय हासिल की। माली, देवमाली, दंगादेवुला, सेरुबंदा पहाड़ों में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के खनन परियोजनाओं को, सोंपेटा में नागार्जुन कंस्ट्रक्शन कंपनी के थर्मल पॉवर प्लांट की स्थापना को, काकरापल्ली में प्लांट को रोका है। बलिमेला जलाशय से प्रभावित जनता ने पुनरावास के लिए लड़े रहे हैं।

तेलंगाना के पोलावरम बांध के खिलाफ तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़ और ओडिशा राज्यों के सीमा पर कई गांवों के जनता के आंदोलन, कंतनपेल्ली (वारंगल) परियोजना को, टाइगर जोन, मल्लन्ना सागर प्रोजेक्ट के खिलाफ, एर्रागुंटापल्ले (मंचिर्याला) आदि ओपन कास्ट के खिलाफ, नल्लामला युरेनियम खनन परियोजना के खिलाफ कई जुझारू जन संघर्ष हुए। 'हरिताहारम' के नाम पर जमीन को कब्जा कर अपनी जमीन से बेदखल करने के खिलाफ आदिवासी और गैर-आदिवासी जनता के आंदोलन हजारों पुलिस बल तैनात करने के बावजूद जारी हैं।

तमिलनाडु के तूत्तुकूड़ी के वेदांता स्टेरलाइट कंपनी विरोधी जनप्रतिरोध, नेडुवासल हाइड्रोकार्बन प्रोजेक्ट, कतिरमंगलम मिथेन प्रोजेक्ट, तेनिपोटिटपुरम न्यूट्रिनो प्रोजेक्ट्स, चन्नाई-सेलम 8 लेन ग्रीन वेस रोड प्रोजेक्ट, वेस्ट बेल्ट सेलम-ईरोड-कोयमबत्तूर गेडल पैप लाइन प्रोजेक्ट, तटीय सागरमाला प्रोजेक्ट, भारतमाला रोड प्रोजेक्ट्स, काउति वेडियप्पन मलाई प्रोजेक्ट, रक्षा गलियारा के विस्थापन विरोधी जनान्दोलन अलग-अलग स्तरों में हुए। पर्यावरण को बचाने के लक्ष्य से पश्चिमी घाटियों की संरक्षण के लिए आंदोलन हुआ।

एमएमसी के जेआरबी डिविजन में भाजी डोंगरी, डुटागढ़, बसंतपुर में प्रस्तावित खनन परियोजनाओं, केबी डिविजन में अभयारण्य बफर जोन के खिलाफ संयुक्त मंचों को गठित कर जनान्दोलन चलाए गए।

देश की प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा, देश की जनता की जरूरतों के लिए

ही उनका इस्तेमाल होना चाहिए, ऐसी आवाज उठाते हुए साम्राज्यवाद व सीबीबी विरोधी आंदोलनों में प्रगतिशील, जनवादी व क्रांतिकारी विचारों से लैस लोग एवं आदिवासी हितैषी आगे आ रहे हैं। देश में पांचवीं अनुसूची इलाकों में लागू होने वाले पेसा, अनुसूचित जनजाति और अन्य वनवासियों का (वनाधिकारों की पहचान) कानून 2006 (नया वन कानून-2006 कहते हैं) को लागू करने और प्रस्तावित 'नया वन संशोधन बिल-2019' को भंग करने की मांग को लेकर आदिवासी आंदोलनरत हैं। इससे देखकर सरकारें ग्रामसभाएं और पत्थलगड़ी जैसे आदिवासी जनांदोलनों को माओवादी द्वारा चलाए जाने के आरोप लगाते हुए उनपर राज्यहिंसा तेज की हैं। बावजूद, 2018 से लेकर वे तमाम लोग एकता कायम रखकर, जुझारू रूप से कई शक्तियों का समर्थन जुटाते हुए संसाधनों की लूट के खिलाफ दृढ़तापूर्वक लड़ रहे हैं। जनता के दृढ़ आंदोलन से कुछ जगहों पर पेसा कानून अमल में आया और ग्रामसभाएं बने। कानूनन वनक्षेत्र पर ग्रामसभाओं के हाथों अधिकार अमल में आया। किंतु, उसका अमल को रोककर शाक वर्ग विभिन्न तरीके से प्रयास करने के तहत पुलिस व सरकारी अधिकारी कई तरह रुकावट पैदा कर रहे हैं। दूसरी तरफ बिना पट्टे वाले किसानों को जमीन से बेदखल करने का सुप्रीम कोर्ट के आदेश के खिलाफ भी आदिवासी जनता ने जुझारू रूप से गोलबंद हुई।

औद्योगिक वर्गों के हितों के लिए केंद्र सरकार 2014 में जिस भूमि अधिग्रहण बिल लाया था, उसके खिलाफ समूचे देश की जनता के दृढ़तापूर्वक संघर्ष के फलस्वरूप उस अध्यादेश कानून का रूप अख्तियार नहीं कर सका। यह जनता की बड़ी जीत थी।

आंदोलन के इलाकों में खनन परियोजनाओं की रक्षा के लिए बिठाई गयी सैकड़ों पुलिस व अर्धसैनिक बलों के कैंपों की वापसी, जनता पर पुलिस हत्याकांडों व अत्याचारों के खिलाफ, सड़क व पुल-पुलिया के विरोध में जनता ने लगातार धरने व प्रदर्शन कर रही हैं। इन आंदोलनों के जरिए कई नई शक्तियों व इलाकों से हमारी पार्टी की संबंध बढ़ रहे हैं। मुख्य रूप से कोरोना लाकडाउन से रोजगार खो कर गांवों में ही रह गए 'प्रवासी' मजदूर और शिक्षण संस्थाएं बंद होकर घरों में ही रहने वाले छात्र इन जनांदोलनों में हिस्सा ले रहे हैं।

ये संघर्षों व उनके विजयों ने देशभर में विशेषकर विस्थापित जनता को काफी प्रभावित किया. केंद्र व राज्यों के शासकों व कॉरपोरेट संस्थाओं का गर्दन मरोड़कर जनता ने जीत हासिल की. नए आंदोलन का इलाका पश्चिम घाटियों में मेकडोनाल्ड जैसी बहुराष्ट्रीय कॉरपोरेशनों की संस्थाओं पर किए गए हमलों के प्रभाव ने दशकों से संशोधनवादियों के राज में एक नई परंपरा का सृजन किया. इन सब के द्वारा कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चा के क्षेत्र में पार्टी ने अच्छा अनुभाव हासिल किया. रणनीतिक संयुक्त मोर्चे को मजबूत करने व विस्तार करने में इन्होंने पूरक का काम किया.

ऐसे इलाकों में जहां हमारी पार्टी मजबूत नहीं हैं, वहां की जनता को भी इन ने काफी प्रभावित किया. इन सब के फलस्वरूप देश में बहुराष्ट्रीय संस्थाओं व देशीय कारपोरेट वर्गों की हजारों करोड़ रुपये की औद्योगिक पूंजी शासक वर्गों के आशानुरूप कार्यरूप धारण नहीं कर पा रही है. प्रधान मंत्री मोदी ने जो 'मेक इन इंडिया' की नीतियां अपनायीं, जन आंदोलन के इलाकों उन नीतियों को कड़ी चुनौती दे रहे हैं. खासकर क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों में हजारों सशस्त्र बलों को तैनात करने के बावजूद खदानों के खनन कार्य, सड़कों व पुल-पुलियों का कार्य जनता के विरोध व विरोधी गतिविधियों, विध्वंसों के बगैर बेरोकटोक, सुचारु ढंग से संचालित नहीं कर पा रहे हैं.

संघर्षरत जनता को गिरफ्तारियां करते हुए, उनपर लाठी, गोली (तुत्तुकूड़ी) के प्रयोग के बावजूद जनता अपनी जमीनों के लिए व अस्तित्व व अस्मिता के लिए संघर्ष कर रही है. बिके हुए दलालों की मदद से जनता को विभाजित कर आंदोलन के संगठनों के जवाब में विस्थापन अनुकूल संगठनों का गठन करना साधारण बन गया है. परंतु जनता अपने विस्थापन विरोधी संघर्षों के जरिए सच्चाई को आसानी से समझ रहे हैं. संशोधनवादियों, सुधारवादियों, गांधीवादियों एवं कई प्रकार के गैर-सरकारी संगठनों के पुनरावास व अधिक मुआवजे की मांगें जनता में मजाक के पात्र बन रही हैं.

भारत के शासक वर्ग उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (एलपीजी) नीतियों तेजी से अमल करने के फलस्वरूप कंगाल हुए किसान, आदिवासी, गरीब व मध्यम वर्ग के जनता द्वारा 2005 से आज तक पैदा की गयी एक जुझारूपूर्ण संघर्ष की लहर का प्रतीक के रूप में ये आंदोलन खड़े होंगे। ये

साम्राज्यवाद विरोधी और राजसत्ता विरोधी आंदोलन में बहुत ही मूल्यवान अनुभव उपलब्ध कराए। साम्राज्यवादियों, उनके दलाल शासकों और उनकी संरक्षण देने वाली निरंकुश राजसत्ता के खिलाफ तेज होने वाली क्रांतिकारी आंदोलन की दिशा दिखा रही हैं।

नागरिक अधिकारों को कुचलते हुए अत्यंत पाशाविक रूप से जारी राज्यहिंसा के खिलाफ आंदोलन: भारत सरकार ने हमारी एकीकृत पार्टी को देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरे के रूप में घोषित की। केंद्र व राज्य सरकारें संयुक्त रूप से क्रांतिकारी आंदोलन व उसका नेतृत्व करने वाली हमारी पार्टी का नामोनिशान खत्म करने नई-नई रणनीति तय करते हुए सैनिक हमलों को तेज किया। 2005-09 के बीच विभिन्न राज्यों के आंदोलन के इलाकों में स्थानीय प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों को आगे रखकर सलवा जुद्ध, सेंद्रा, शांतियात्रा, हर्मद वाहिनी जैसे धोखेबाजीपूर्ण नामों से सफेद दमनकारी हमलों को तेज किया। परंतु हमारी पार्टी के आह्वान के अनुसार क्रांतिकारी जनता, जन मुक्ति छापामार सेना व जनवादी लोगों ने जहां के वहां उन्हें कड़ा प्रतिरोध करके हराए। उसके तुरंत बाद 2009-17 के मध्य 'ऑपरेशन ग्रीनहंट' के नाम से अघोषित 'आल आउट वार' को जारी रखा। पार्टी के आह्वान को लेकर सैकड़ों की संख्या में क्रांतिकारी, प्रगतिशील संस्थाएं, शक्तियां मिलकर ऑपरेशन ग्रीनहंट को 'जनता पर युद्ध' घोषित कर, देशभर में 'फोरम एगनेस्ट वार आन पीपुल' गठित कर प्रतिरोध किया। हमारी पार्टी ने चौतरफा जवाबी-रणनीति के साथ ही उसे मुकाबला किया।

विदेशों की कई माओवादी क्रांतिकारी शक्तियों व संस्थाओं ने ऑपरेशन ग्रीनहंट के विरोध में भाईचारा आंदोलन चलाए। राजनीतिक बंदियों की रिहाई पर अभियानें चलाए। लालगढ़ आदि जनांदोलनों का समर्थन किया।

उसी तरह न्यूनतम नागरिक और जनवादी अधिकारों का भी हनन करते हुए मुठभेड़ों में क्रांतिकारियों व आम जनता की हत्या करने के विरोध में और उनके लाशों जब्त करने के लिए लड़ रहे क्रांतिकारी, जनवादी व प्रगतिशील जनसंगठनों व आंदोलनों के नेताओं पर व सामाजिक कार्यकर्ताओं पर 'अर्बन माओवादी' का ठप्पा लगाकर 'उपा' जैसे कई क्रूरतम मामले दर्ज कर लंबे समय तक जेलों में बंदी बनाने के विरोध में देशभर में कई राज्यों में विभिन्न

रूपों में जन प्रतिरोध हुआ. एनआईए संशोधन कानून, उपा संशोधन कानून, आरटीआई संशोधन कानून आदि क्रूर संशोधन कानूनों के विरोध में, कई मजदूर कानूनों में संशोधनों के विरोध में, विभिन्न राज्यों में जनसंगठनों पर प्रतिबंध के विरोध में, सैकड़ों जनवादी संगठनों और राजनीतिक पार्टियों के साथ देशभर में, विभिन्न राज्यों संयुक्त मंचों का गठित होकर जनवादी अधिकारों के लिए आंदोलन हुए.

ऑपरेशन ग्रीनहंट के खिलाफ देश और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लगातार हुए जनविरोध व जनवादियों का विरोध के फलस्वरूप, केंद्र व राज्य सरकारें अपनी रणनीति को मई 2017 में समीक्षा की और अत्यंत आक्रामकता से लैस 'समाधान' रणनीति को सामने लायीं.

पार्टी की एकता कांग्रेस के बाद के 14 सालों की समयावधि में भारत के शोषक-शासक वर्गों द्वारा लगातार जारी प्रतिक्रांतिकारी युद्ध का क्रांतिकारी शक्तियों द्वारा एकताबद्ध तरीके से क्रांतिकारी युद्ध व विभिन्न संयुक्त मोर्चों के मंचों के जरिए मुकाबला करने की कालावधि के तौर पर ही सीसी समीक्षा कर रही है.

जमीन के लिए आंदोलन: पार्टी कांग्रेस के बाद एओबी स्पेशल जोन में कृषि क्रांति के कार्यक्रमों के तहत वर्गीय संगठनों के नेतृत्व में नारायणपटना में जमीन कब्जा आंदोलन सामने आए. नारायणपटना में आदिवासी किसान सशस्त्र तरीके से विद्रोह कर, जमींदारों से 2,500 एकड़ से अधिक खेतीयोग्य जमीन पर कब्जा किया था. इस संघर्ष ने कोरापुट जिला समेत समूचे ओड़िशा राज्य पर अच्छा प्रभाव डाला. विशाखा मन्थम इलाके में 10 हजार एकड़ के जंगली जमीन में सरकार ने काफी प्लांटेशन लगाकर करोड़ों रुपये संपदा को लूट रही है. 'जंगल पर अधिकार आदिवासियों और उत्पीड़ित जनता का ही है' के नारे के साथ संयुक्त मंच के नेतृत्व में 2,000 एकड़ काफी प्लांटेशनों पर कब्जा जमाकर फसल पा रहे हैं. काफी प्लांटेशनों का आक्रमण आंदोलन नए इलाकों में विस्तारित हो रहा है. कट ऑफ एरिया, पेदाबयालु, नारायणपटना, नंदपुर इलाकों में 'जोतने वाले को जमीन' के आधार पर संचालित सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी संघर्ष में हजारों किसान गोलबंद हुए. गैर-आदिवासी भूस्वामियों व आदिवासी मुखियाओं के सिर झुकाकर सैकड़ों

एकड़ जमीन पर कब्जा किया गया। भैफरगुडा में 1,500 एकड़ वन भूमि पर किसानों ने कब्जा किया। कलिमेली प्रांत में सिंचाई के लिए, फसलों के समर्थन मूल्य के लिए किसान बड़े पैमाने पर गोलबंद होकर जुझारु संघर्ष संचालित किए।

तेलंगाना में विभिन्न जिलों में कई गांवों में सैकड़ों किसान जन संगठनों के नेतृत्व में जमीन संघर्ष कमेटियां गठित कर 3,280 एकड़ सरकारी बंचराई और पोला जमीनों को किसानों ने कब्जा किए। जमीन की समस्या पर किसानों की गोलबंदी दिन-ब-दिन बढ़ रही है। उसी तरह किसानों की समस्याओं पर, सिंगरेनी समेत अन्य मजदूर, असंगठित मजदूर, बेरोजगार, छात्र, कर्मचारी, शिक्षकों की समस्या आदि कई समस्याओं पर विभिन्न आंदोलन और सांगठनिक रूपों लेकर आंदोलन चलाए गए। इस परिप्रेक्ष्य में 80 व 90 दशकों में किसानों कब्जा की गयी जमीन को फिर से जमींदारों के हाथों से जब्त करने के लिए किसानों को तैयार करने की जरूरत है।

हालांकि दंडकारण्य में कुछ जगहों पर गरीब किसान दुष्ट मुखियाओं व जमींदारों के जमीन पर कब्जा किया था लेकिन वन जमीनों को खेतीयोग्य बनाना ही अभी भी भूमि कब्जा का एक प्रधान रूप है। कुछ डिविजनों में किसानों के फसलों को उचित कीमत देने, बोनस देने, बिनशर्त धान खरीदने की मांगों को लेकर विभिन्न किसान संगठनों के साथ मिलकर आंदोलन चलाए गए। तेंदूपत्ता बोनस नकद रूप में अदायगी करने छत्तीसगढ़ सरकार पर दबाव बनाकर हासिल किए गए।

बीजे में केकेसी के नेतृत्व में उभार की तरह चली जमीन आंदोलनों में उत्पीड़ित किसानों ने लाखों एकड़ जमीनों को जमींदारों से कब्जा किए। वहां के आंदोलन अस्थायी रूप से पीछेहट का शिकार होने के कारण उस जमीन को जमींदारों ने सशस्त्र खुफिया गिरोहों की मदद से फिर से कब्जा कर बहुराष्ट्रीय कंपनियों को और मध्यम किसानों बेच रहे हैं। इससे जमीन की समस्या फिर आगे आयी है। इस तरह की जमीनों का विवरण संग्रहित करने और सर्वे का ब्योरा पर आधारित होकर फिर अलग-अलग इलाकों में जमीन के लिए आंदोलन चलाने का निर्णय इआरबी ने लिया है।

पृथक तेलंगाना राज्य का आंदोलन: 2007 पार्टी की एकता कांग्रेस के बाद पृथक तेलंगाना आंदोलन ने महान जन आंदोलन का मोड़ लिया। हमारी पार्टी प्रारंभ से बहुत स्पष्ट रुख के साथ प्रधानतया 'जनवादी तेलंगाना' नारे के साथ उस आंदोलन में शामिल हुई। जब का तब ठोस नारों व मांगों के साथ पार्टी शक्तियों ने अपने रुख को जनता के सामने रखा। अपनी शक्ति अनुसार उस आंदोलन का नेतृत्व प्रदान करते हुए अस्थायी पीछेहट की स्थिति का शिकार तेलंगाना के क्रांतिकारी आंदोलन को फिर से विकसित करने का प्रयास किया गया। पृथक तेलंगाना के गठन के लिए संचालित राजनीतिक आंदोलन में मुख्य भूमिका निभायी। इस आंदोलन के फलस्वरूप 2014 में पृथक तेलंगाना राज्य बन गया। यह जनता की राजनीतिक जीत है। तेलंगाना में क्रांतिकारी आंदोलन का पुनरविकास कार्य के लिए यह राजनीतिक आंदोलन मददगार साबित हुई। तेलंगाना राज्य की जन आकांक्षाओं को ऊंचा उठाते हुए ही हमारी पार्टी ने जनवादी तेलंगाना का नारा दिया। क्षेत्रीय स्तर पर किए गए राजनीतिक प्रयास से क्रांतिकारी जनाधार को अपेक्षाकृत बढ़ा पाए हैं। इस अनुभव ने ओड़िशा में लंबे समय से कोसल इलाके के आकांक्षा रहे पृथक राज्य की मांग के साथ आंदोलन गठित करने के लक्ष्य से मार्च 2020 में एक घोषणा पत्र तैयार करने में मददगार रही।

ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद के खिलाफ आंदोलन: मोदी के नेतृत्व में ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी भाजपा ने केंद्र में सत्ता में आने के बाद देश में एक भायानक माहौल पैदा किया है। खासकर वामपंथी, जनवादी, धर्मनिरपेक्ष शक्तियों में, दलितों, आदिवासियों और धार्मिक अल्पसंख्यकों में एक गंभीर असुरक्षा की भावना पैदा किया है। फिर भी, इन फासीवादी नीतियों व गतिविधियों के खिलाफ देशभर में और विभिन्न राज्यों में ये शक्तियां हिम्मत के साथ आगे आ रही हैं और विभिन्न संयुक्त मंचों का गठित कर आंदोलन कर रही हैं। फासीवादी हिंदुत्व व राज्य आतंक विरोध में विभिन्न रूपों में लड़ रही हैं और अपना तीव्र विरोध दर्ज कर रहे हैं। ये जुझारू रूप ले लिए हैं। इसके लिए हाल ही में ही अत्यंत एकता के साथ जुझारू रूप से हुए दिल्ली शाहीनबाग आंदोलन पूरे देश के लिए एक नमूने के रूप में खड़ा है। इन आंदोलनों में हमारी पार्टी शक्तियां शक्ति के अनुसार भाग लेकर जनता को

संगठित करने का प्रयास कीं। हमारी पार्टी के नेतृत्व में विभिन्न राज्यों के ग्रामीण और शहरी इलाके में भी जनता ने कई आंदोलन चलाए। विभिन्न रूपों में युवा आगे आकर आत्मसम्मान के संघर्ष चलाए। हम हिंदू नहीं हैं, ऐसा कहते हुए, 2021 की जनगणना में ऐसा लिखने के विरोध में कई आदिवासी संगठन आंदोलन के कार्यक्रम चलाए। मोदी सरकार धर्म के आधार पर बनाया नागरिकता संशोधन कानून (सीएए), राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) और राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर (एनआरसी) को तीव्र रूप से विरोध करते हुए उन्हें वापस लेने की मांग को लेकर देशभर में उमड़े जनांदोलनों में, विशेषकर असम में भी, हमारी पार्टी के नेतृत्व में आंदोलन के इलाकों के जनता और जनसंगठन सक्रिय रूप से हिस्सा लिया।

छात्र और बुद्धिजीवियों के आंदोलन: देश में शिक्षा के कारपोरेटीकरण और ब्राह्मणीकरण के तहत कस्तूरि रंगन कमेटी के रिपोर्ट के आधार पर अत्यंत जनविरोधी और देशद्रोही राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को मोदी सरकार ने मंजूरी दे दी। इसके विरोध में देशभर में क्रांतिकारी छात्र, बुद्धिजीवी, वामपंथी, जनवादी व धर्मनिरपेक्ष शक्तियों का विरोध उमड़ पड़ी। हिंदुत्व शक्तियां जो साजिशें कर रही हैं, उनके खिलाफ, शिक्षा के व्यापारीकरण के खिलाफ, देश में कॉमन स्कूल व्यवस्था को अमल कराने की मांग को लेकर एवं शिक्षा के अधिकार को लेकर देशभर में जनवादी, देशभक्त शिक्षाविद्, बुद्धिजीवी, शिक्षक व छात्र आंदोलनरत हैं। छात्रों में वामपंथी व जनवादी विचारों वालों व सरकारी की नीतियों को विरोध करने वालों को राज्यसत्ता एवं राज्य की मदद से प्रतिक्रांतिकारी हिंदुत्व छात्र संगठन परेशान करना, उनपर भौतिक रूप से हमले करना, जिन्हें वे खतरनाक समझते हैं, उन्हें गायब करना, हत्याएं करना, उन्हें आत्महत्या करने बाध्य करना, विचारों की अभिव्यक्ति की आजादी को रोककर कुचलना आदि देश के अनेक विश्व विद्यालयों में एक साधारण दृश्य बन गया है। छात्रों के साथ प्राध्यापकों, प्रोफेसरों को भी निशाना बनाकर हिंदुत्ववादी शक्तियां उनका पीछा कर रही हैं। इन सबका मजबूती से विरोध करते हुए अनेक वामपंथी, जनवादी विचार वाले छात्र, आंबेडकर के विचार वाले कई दलित व पिछड़े तबकों व आदिवासी छात्र संगठित हो रहे हैं। दिल्ली में जेएनयू छात्रों व शिक्षकों पर हिंदुत्व शक्तियों के हमले, इसके खिलाफ देशभर

में विभिन्न कालेजों में, विश्वविद्यालयों में उमड़ पड़ी छात्र-शिक्षक व जनवादियों के एकताबद्ध आंदोलन इसका उदाहरण है। छात्रों में सक्रिय रूप से गोलबंद होने वालों को अर्बन नक्सल के ठप्पा लगाकर सरकार उन्हें कई तरह से परेशानी कर रही है। कुल मिलाकर कहा जाए तो हद पार करती आज की सामाजिक परिस्थितियां ही छात्रों को सामाजिक संघर्ष में छात्र लहर के रूप में आगे धकेल रही हैं।

राजनीतिक बंदियों की रिहाई के लिए आंदोलन: अखिल भारतीय स्तर पर एवं विभिन्न राज्यों में राजनीतिक बंदियों की रिहाई के लिए 2009 से हमारी पार्टी काम कर रही है। विभिन्न आंदोलन के कार्यक्रम ले रही है। राजनीतिक बंदियों व विचारणाधीन बंदियों के परिवारजनों को साथ में लाकर, जनवादियों, अधिवक्ताओं, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं को गोलबंद कर रही है। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनावों से पहले कांग्रेस पार्टी द्वारा राजनीतिक बंदियों की रिहाई के लिए किए गए वादे को पूरा करने की मांग को लेकर पिछले दो सालों से दंडकारण्य में राजनीतिक बंदियों की रिहाई के लिए विशेषकर आदिवासी जनता हजारों संख्या में सरकार विरोधी प्रदर्शन कर रहे हैं। बिहार के मुंगेर जिला अदालत ने पांच आदिवासी व किसान कामरेडों को फांसी सजा देने और झारखंड के दुमका जिला अदालत ने पू.बि.—पू.उ.झा. के सैक सदस्य का प्रवीर को फांसी की सजा देने के खिलाफ संयुक्त मंच का गठित कर जनांदोलन चला रहे हैं। 2017 से हमारी पार्टी ने 23 मार्च को साम्राज्यवाद विरोधी दिवस एवं बाकी दो संदर्भों 13 सितंबर और 10 दिसंबर को राजनीतिक कैदियों के अधिकार दिवसों के रूप में विभिन्न राज्यों और जेलों में मना रहे हैं।

देश के शासक वर्गों द्वारा लागू की जारी साम्राज्यवादी-परस्त और व्यापक किसान जनविरोधी नीतियों की वजह से कृषि संकट की परिस्थितियों में देशभर में व्यापक किसानों ने हजारों, लाखों की तादाद में दीर्घ यात्राएं, शांति यात्राएं, किसान संसद, देश की राजधानी में नए तरह के प्रदर्शन व धरनों का आयोजन करना बहुत बढ़ गया है। कृषि को देश व विदेशी कारपोरेट वर्गों के लिए हवाले करने और कांट्रैक्ट कृषि नीतियों को लागू करने मोदी सरकार ने सितंबर 2020 में बहुती निरंकुश तरीके से बनाए गए तीन कृषि कानूनों को

पूरी तरह वापस लेने की मांग को लेकर, सरकारी साजिशों को नाकाम करते हुए सैकड़ों किसान संगठन दिल्ली को घेराव कर अभूतपूर्व ढंग से समझौताबिहीन आंदोलन कर रहे हैं। इस आंदोलन के तहत बने व्यापक संयुक्त मोर्चों में हमारे आंदोलन के इलाकों के हमारे किसान संगठन और किसान हिस्सा लेकर लड़ रहे हैं। कृषि क्रांति के कार्यक्रम के साथ नव जनवादी क्रांति का नेतृत्व करते हुए हमारी पार्टी ग्रामीण इलाकों को केंद्र बनाकर हालांकि कार्यरत है लेकिन किसानों को संगठित करने में पिछड़ी हुई है। प्रारंभ से क्रांतिकारी किसान कमेटियों और खेत मजदूर संगठनों का निर्माण करने के बावजूद व्यापक किसानों की समस्याओं पर उन्हें सक्रिय ढंग से गोलबंद नहीं कर पा रहे हैं। इस कमजोरी से उबरने के लिए हाल ही में कुछ प्रयास हुआ। हमारी सीसी ने एक बुकलेट जारी कर कृषि संकट पर हमारी पार्टी के रुख को देश की जनता के सामने रखी। इसे व्यावहारिक रूप देने के लिए समूची पार्टी धरातल पर उतरने की जरूरत है।

महिला क्षेत्र में कार्य:

कांग्रेस के बाद देश के हमारे आंदोलन के सभी राज्यों के क्रांतिकारी और जनवादी आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी काफी बढ़ गयी। लालगढ़ जन उभार में, नारायणपटना भूमि कब्जा आंदोलन में, तमाम विस्थापन विरोधी आंदोलनों में और कृषि क्रांति के संघर्षों में महिलाओं ने ज्यादा जुझारू भूमिका निभायी। विभिन्न राज्यों में महिलाएं व्यापक संयुक्त मोर्चा के मंचों द्वारा अपनाए गए सभी जनवादी संघर्षों व प्रदर्शनों में सक्रिय रूप से शामिल हुईं। क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों में हजारों की संख्या में संगठित महिलाएं तीव्र राज्यहिंसा का सामना करती हुई तमाम संघर्षों में बहुत ही जुझारू रूप से शामिल हो रही हैं। महिलाओं पर सरकारी किराए सशस्त्र बलों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों के खिलाफ वे जुझारू रूप से लड़ रही हैं। क्रांतिकारी जन कमेटियों (आरपीसी) में वे सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। वनोपाज के लिए जायज दरें समेत नकद रूप में बोनस की अदायगी आदि आर्थिक समस्याओं पर, जंगल पर अधिकार के लिए, राज्यहिंसा के खिलाफ, पुलिस से अवैध रूप से गिरफ्तार किए गए लोगों की रिहाई के लिए, पुलिस कैपों की स्थापना के खिलाफ,

राजनीतिक कैदियों की रिहाई के लिए, किसानों की समस्याओं पर, विस्थापन विरोधी आदि राजनीतिक आंदोलनों में, दुश्मन के क्रूर हत्याकांडों में मरने वाले कामरेडों व जनता की लाशों के लिए वे आंदोलित हैं। कारपेट सेक्युरिटी के बीच ही हजारों संख्या में गोलबंद होना उनकी क्रांतिकारी चेतना को दर्शाती है। पीएलजीए द्वारा संचालित सैनिक कार्रवाइयों में महिलाएं सक्रियता के साथ शामिल हो रही हैं।

आंदोलन के तमाम इलाकों में महिलाओं पर हो रहे पाशविक पुलिस हमलों, अत्याचारों व उनकी हत्याओं की निंदा करते हुए उनके न्यायपूर्ण संघर्षों के समर्थन में कई प्रतिशील, जनवादी व क्रांतिकारी महिला संगठन व व्यक्ति और नागरिक/मानवाधिकार संगठन क्षेत्रीय जांच-पड़ताल के लिए जा रहे हैं। राज्यसत्ता द्वारा उन्हें रोकने के जितने भी प्रयास किए जा रहे हों, जितना भी परेशान किया जा रहा हो, उसके बावजूद उन सभी का सामना करते हुए ही, उन्होंने पीड़ित महिलाओं के समर्थन में खड़े हो रहे हैं। 2005-20 के बीच सलवा जुद्ध व सेंद्रा से रणनीतिक 'समाधान-प्रहार' हमले तक सैकड़ों महिलाएं पुलिस अत्याचारों व हत्याओं का शिकार हो गयीं। इस तरह की पीड़ित महिलाओं को मदद देते हुए कुछ वामपंथी महिला संगठन, कुछ बुर्जुआ पार्टियों की महिला नेता ने पाशविक पुलिस की अमानवीय कार्रवाइयों को निंदा करते हुए विभिन्न रूपों में अपने विरोध जता रहीं। वे सरकारी महिला कमीशनों, अन्य सरकारी संस्थाओं को कानूनी तौर पर खड़ा किया गया।

केंद्रीय कमेटी के लिए हुए बड़े नुकसानों के तहत हमारी केंद्रीय महिला सब-कमेटी के ध्वस्त हो गया। अखिल भारत के स्तर पर महिला संगठन का निर्माण के लिए हमारा प्रयास स्तगित हो गया। उसी तरह विभिन्न राज्यों में गठित महिला सब-कमेटीयां भी ज्यादातर ध्वस्त हो गए। पार्टी में पितृसत्ता विरोधी अभियानों का संचालन, तमाम क्षेत्रों में महिला कामरेडों का विकास के लिए ठोस लक्ष्यों को लेकर महिलाओं के विशेष बैठकें जैसे विशेष कार्यक्रम होने के बावजूद, कुछ राज्यों में अनियमित रूप में सही, महिला पत्रिकाएं निकालने के बावजूद, इस क्षेत्र में अपेक्षित प्रगति हासिल नहीं कर पाए। हाल ही में चलाए गए विभिन्न स्पेशल एरिया/स्पेशल जोनों के प्लीनमों में लिए गए कर्तव्यों के मुताबिक फिर से बीजे व डीके में महिला सब-कमेटीयां गठित

होकन काम कर रही हैं,

साहित्य व सांस्कृतिक क्षेत्र:

क्रांतिकारी आंदोलन में साहित्य व सांस्कृतिक और कला क्षेत्रों के आंदोलन एक अभिन्न हिस्सा है। इसे क्रांति में बहुत ही महत्व है। क्रांतिकारी विचारधारा व क्रांतिकारी राजनीति को अपनी रचनाओं, कला रूपों, पत्रिकाओं, सभाओं, बैठकों, प्रदर्शनों के जरिए क्रांतिकारी, जनवादी, साहित्यिक व सांस्कृतिक संगठन/संस्थाएं, लेखक व कलाकार जनता के बीच में ले जा रहे हैं। मालेमा को अपनी मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में घोषित करने वाले क्रांतिकारी लेखक संगठन, नवजनवादी क्रांतिकारी राजनीति को ऊंचा उठाने वाले साहित्यिक व कला संस्थाएं कई दमन व हमलों के बीच इस क्षेत्र में किए जा रहे प्रयास ने आज हमारी आंदोलन को अस्थायी पीछेहट की परिस्थितियों में भी क्रांतिकारी के प्रचार के लिए बहुत ही मददगार रही। क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों में सांस्कृतिक संगठनों जनता के बीच क्रांतिकारी विचारधारा व राजनीति का सशस्त्र तौर पर प्रचार कर रहे हैं। ये सभी साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाएं अप्रासंगिक बनी व ध्वस्त होती सामंती व साम्राज्यवादी संस्कृति का बिना दो राय के जनता के बीच भंडाफोड़ करते हुए तार्किक, वैज्ञानिक व समाजवादी संस्कृति को बढ़ाने के लिए जनता को जागरूक कर रहे हैं। जनता को जनांदोलनों में उतारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

विभिन्न राज्यों में कानूनी तौर पर कार्यरत साहित्य-सांस्कृतिक संगठन प्रचार कार्यक्रम में जो रुचि दिख रहे हैं, सांगठनिक तौर पर अपने अपने संगठनों को संगठित करने के मामले में नहीं दिखा रहे हैं। उन्हें जनता में जितना पहचान है, उसकी तुलना में उसकी सदस्यता और शाखाएं बहुत ही सीमित रहकर उनकी गतिविधियां हो रही हैं। वास्तव में वे अपनी धारदार रचनाओं के जरिए और जनरंजक कला रूपों के जरिए उत्पीड़ित जनता में सांगठनिक प्रयास करने की अद्भुत परिस्थिति है। इस तरह कर पाए तो, मजदूर, किसान, छात्र, युवा, बुद्धिजीवियों में, उत्पीड़ित तबके के कई चिंतकों, बुद्धिजीवियों, साहित्य-सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं व संगठनों को क्रांतिकारी आंदोलन की ओर खींच कर ला सकते हैं। लेकिन, इस कार्य में गैर-सर्वहारा

रुझान रोड़ा बना हुआ है। पार्टी के राज्य कमेटियां कुछ संगठनों के फ्रैक्शनों में 'शिक्षा और शुद्धीकरण' अभियान को जिस हद तक चला पाएं, उस हद तक कुछ सकारात्मक बदलाव देखने को मिला है।

सत्तारूढ़ ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी शक्तियां और तमाम राजनीतिक पार्टियां क्रांतिकारी विचारधारा को थोड़ा भी सहनता बरते बगैर, नागरिक प्राथमिक अधिकारों को कुचलते हुए क्रांतिकारी लेखकों और कलाकारों पर हमले जारी रखी हुई हैं। ऐसी परीक्षात्मक समय में लेखक कोई भी हो, स्वयं संगठन द्वारा घोषित कार्यक्रम और संविधान पर अडिग रहकर उन शक्तियों के साथ हिम्मत से सामना करना है। संगठन की प्रतिष्ठा को बरकरार रखना उनका सांगठनिक कार्यभार होगा। लेकिन ऐसा करने में कुछ कामरेड विफलता का शिकार है।

क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों में गठित व कार्यरत सशस्त्र सांस्कृतिक संस्थाएं जन स्वभाव को हासिल कर चुकी हैं। वो हजारों की संख्या में सदस्यता के साथ संगठित हैं। डीके में सांस्कृतिक सब-कमेटी के नेतृत्व में चेतना नाट्य मंच कार्यरत है। पंचायत स्तर से डिविजन स्तर तक अधिवेशन चलाते हुए उसकी कार्यकारिणी चुना रहे हैं। एक सेंट्रल टीम के साथ कई डिविजन व एरिया टीम सशस्त्र रूप से कार्यरत हैं। कई पंचायत स्तर के टीमें भी काम कर रहे हैं। बीजे में सशस्त्र सांस्कृतिक टीमें विभिन्न जोंनों और सबजोंनों में कार्यरत हैं। अन्य स्पेशल एरिया/स्पेशल जोंन/राज्यों में जरूरत के मुताबिक सशस्त्र टीमें गठित होकर काम कर रहे हैं। ये आंदोलन के इलाकों में जनता को जागरूक करते हुए विभिन्न अवसरों पर व्यापक रूप से जनता को गोलबंद कर कला पददर्शन संचालित कर रहे हैं। जनयुद्ध की राजनीति, जन छापामारों के युद्ध की जीतों व क्रांतिकारी जन राजसत्ता के संगठनों के क्रियाकलापों का व्यापक तौर पर प्रचार कर रही हैं। इनके क्रांतिकारी सांस्कृतिक कार्यक्रम जनता को काफी आकर्षित करते रहे हैं। युवाओं को छापामार सेना में भर्ती होने प्रोत्साहित कर रहे हैं। किंतु देश में बदलती सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक संबंधों को, उत्पीड़ित जनता की मौलिक समस्याओं को और जनांदोलनों को वर्गसंघर्ष की राजनीति के साथ और राजसत्ता को हथियाने की राजनीति के साथ समझाते हुए जनता को

जागरूक करने लायक कला रूपों को सृजनात्मक रूप से विकसित करने में हमारे सशस्त्र क्रांतिकारी सांस्कृतिक संगठनों में सीमितताएं हैं। इसके कारण वे साम्राज्यवादी जहरैली संस्कृति को मजबूती से मुकाबला करने क्रांतिकारी जनसांस्कृतिक कला व संघर्ष के स्वरूपों को उचित रूप से विकसित नहीं कर पा रहे हैं।

देशभर में विभिन्न राज्यों में क्रांतिकारी व जनवादी सांस्कृतिक, कला संगठन, टीमें अलग-अलग अवसरों पर व्यापक रूप से जनता को गोलबंद करते हुए साम्राज्यवादी, ब्राह्मणीय हिंदुत्व सामंती जहरैली संस्कृति को भंडाफोड़ करते हुए, जनवादी संस्कृति को प्रचार कर रहे हैं, प्रोत्साहित कर रहे हैं और जनता को जागरूक कर रहे हैं। विस्थापन, ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद आदि समस्याओं पर कलाकारों के साथ वर्कशाप चलाकर नए कला रूपों को बनाकर उन्हें जनता में ले जा रहे हैं। इसके लिए आडियो, वीडियो और गाना पुस्तक प्रकाशित करने जैसे स्वरूपों इस्तेमाल कर रहे हैं। जन सांस्कृतिक संगठनों द्वारा पत्रिकाएं जारी की जा रही हैं। प्रचार के लिए सामाजिक माध्यमों और इंटरनेट का इस्तेमाल कर रहे हैं।

हमारी केंद्रीय कमेटी और विभिन्न क्रांतिकारी जनसंगठन के आह्वान के मुताबिक 2017-18 में देश व दुनिया के तौर पर महत्व रखने वाले चार क्रांतिकारी दिवसों को देश भर में क्रांतिकारी शिविर में मनाया। पहले महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति, उसके बाद क्रमशः नक्सलबाड़ी स्वर्णोत्सव, रूसी समाजवादी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ, कॉमरेड् कार्ल मार्क्स की 200वीं जन्म दिवस समारोह आयोजित किए गए। इन ऐतिहासिक क्रांतिकारी दिवसों के महत्व को ऊंचा उठाते हुए आयोजित समारोहों के जरिए पार्टी एवं क्रांतिकारी जनता को सीसी ने क्रांतिकारी संदेश (कार्ल मार्क्स की 200वीं जयंती के अवसर को छोड़) भेजे। कई शहरों, नगरों व आंदोलन के इलाकों में आयोजित इन कार्यक्रमों के जरिए क्रांतिकारी प्रचार विस्तृत पैमाने पर हुआ। इन अवसरों पर कई भाषाओं में क्रांतिकारी साहित्य का प्रकाशन किया गया। इनके आयोजन में क्रांतिकारी जन संगठन व क्रांतिकारी जन कमेटियां पहलकदमी व जोश के साथ शामिल हुईं। फिर भी पार्टी श्रेणियों को इन अवसरों पर पर्याप्त रूप से शिक्षित नहीं कर सके।

मौजूदा देशव्यापी अस्थायी पीछेहट की परिस्थितियों में क्रांतिकारी आंदोलन को बनाए रखकर मजबूत करने की दिशा में संयुक्त मोर्चा के क्षेत्र में हमारा कार्य बढ़ाने की बहुत ही जरूरत है। जनयुद्ध को बचाते हुए आगे बढ़ाने और विस्तार करने के लिए क्रांतिकारी व जनवादी जनसंगठनों को गठित कर जनाधार का मजबूत करना चाहिए। देश की जनता को सबसे खतरा बनी नयी उदारवादी नीतियों और धर्म को बहकाने वाले हिंदुत्व नीतियों को सामना करने के लिए तमाम क्षेत्रों में हमारे प्रयास बढ़ाना चाहिए। मुख्य समस्याओं पर (मजदूरों, किसानों, छात्रों, महिलाओं, विस्थापन, ब्राह्मणवादी हिंदुत्व फासीवाद से संबंधित समस्याओं पर) ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उचित संघर्ष व सांगठनिक स्वरूप अपनाते हुए साम्राज्यवादियों, उनके पिट्टू, दलाल नौकरशाह पूंजीपति व सामंती वर्गों के खिलाफ व्यापक प्रचार और मजबूत राजनीतिक आंदोलन का निर्माण करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए मुद्दों/क्षेत्रों के आधार पर साथ आने वाली शक्तियों को गोलबंद करना चाहिए। संयुक्त मोर्चे के मंचों को गठित कर, संगठित व मजबूत करना चाहिए। योजनाबद्ध ढंग से राजनीतिक व सांगठनिक प्रयास जारी रखने विशेष ध्यान देना चाहिए। इसके द्वारा ही हमारी पार्टी ने जनाधार और सांगठनिक शक्ति को बढ़ाने द्वारा जुझारू आंदोलनों के साथ क्रांतिकारी आंदोलन के नयी लहर को पैदा किया सकता है। क्रांतिकारी जन राजसत्ता में तरक्की होकर व वह मजबूत होने का मार्ग प्रशस्त होता है।

सकारात्मक पहलू:

1. दण्डकारण्य में डिविजन स्तर में वैकल्पिक जन राजसत्ता के संस्थाओं समेत बीजे, एओबी जैसे कई आंदोलन के इलाकों में ग्राम व एरिया स्तरों उत्पीड़ित जनता की राजसत्ता को स्थापित करते हुए उनके सपनों को साकार करने का रास्ते को आविष्कार किए। ये पार्टी के नेतृत्व में जनयुद्ध का नेतृत्व कर रहे हैं। पीएलजीए में युवक-युवतियों को भर्ती के लिए प्रोत्साहित करते हुए भर्ती के केंद्र रूप में काम कर रहे हैं।
2. केंद्र सरकार ने घोषणा की कि देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए

हमारी नयी पार्टी से सबसे बड़े खतरा है। फिर भी नित दमन में भी उत्पीड़ित जनता को विभिन्न कानूनी व गैर-कानूनी जनसंगठनों में, जनता की दैनंदिन व मौलिक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक समस्याओं पर कृषि क्रांति के कार्यक्रमों में और विभिन्न जनांदोलनों में जुझारू रूप से गोलबंद किए। आंदोलन के तमाम इलाकों में जनांदोलनों में और जनयुद्ध में महिलाओं की संगठित शक्ति और भूमिका बढ़ा पाएं।

3. कई रणनीतिक इलाकों में, मुख्य रूप से छापामार जोनों में राज्यसत्ता द्वारा निर्मित प्रतिक्रांतिकारी सलवा जुद्ध संदरा आदि श्वेत मिलिशिया को जनयुद्ध में नेस्तनाबूद किया। पश्चिम बंगाल के लालगढ़ जनबगावत, ओड़िशा के नारायणपटना आंदोलन जैसे कई जनांदोलनों को विभिन्न राज्यों में निर्माण करने के लिए प्रयास किए। जनांदोलनों में गोलबंद हुई जनता को विभिन्न जनमिलिशिया निर्माणों में हथियारों से लैस कर रहे हैं। पार्टी के हाथों एक मजबूत हथियार के रूप में विकसित होने की समझदारी क्रांतिकारी जनसंगठनों में पनपी जा रही है।
4. क्रांतिकारी आंदोलन पर और जनता पर प्रतिक्रांतिकारी सरकार चलाए गए ऑपरेशन ग्रीनहंट (ओजीएच) के खिलाफ विभिन्न क्रांतिकारी व जनवादी संगठनों व शक्तियों ने एकताबद्ध होकर गठित 'जनता पर युद्ध का विरोधी मंच' में हिस्सा लेकर प्रतिरोध आंदोलन चलाने में मुख्य भूमिका निभायी। इस तरह कई संयुक्त मंचों को गठित कर जनांदोलनों का निर्माण करते हुए नए अनुभव हासिल किए।
5. जनता ने हमारी पार्टी व संयुक्त मार्च के नेतृत्व में साम्राज्यवादियों और उनके पिट्टू दलाल शासकों के खिलाफ सालों से कई विस्थापित विरोधी आंदोलनों में हासिल सफलताएं विस्थापन समस्या पर संघर्षरत जनता को समर्थन में खड़े हैं। पृथक तेलंगाना आंदोलन का अनुभव देश में पृथक राज्य मांग को लेकर संघर्षरत जनता को सही दिशा दर्शा रही है।
6. बढ़ती सामंती व साम्राज्यवादी जहरैली संस्कृति के विरोध में क्रांतिकारी

व जनवादी साहित्य व संस्कृति को विकसित करते हुए, कुछ नए जन कला रूपों को सामने लाए. जनांदोलनों को प्रेरणा दिए.

नकारात्मक पहलू:

1. दुश्मन के प्रति मनोगत आकलन से व्यवहार में गलत रूप से कामकाज को जारी रहने की वजह से 2005–2012 के बीच के समय में केंद्रीय कमेटी को सिलसिलेवार हुए भारी नुकसानों की वजह से, देशभर में क्रांति के प्रति उभरी अनुकूल वातावरण को पार्टी ने सदुपयोग नहीं कर पायी. कानूनी और गैर-कानूनी संगठनों को चलाने में, आंदोलनों को जारी रखने में हुई गलतियों की वजह कई नुकसान उठाना पड़ा.
2. हमारे आंदोलन के इलाकों में 'जातने वाले को जमीन-क्रांतिकारी किसान कमेटियों/क्रांतिकारी जन कमेटियों के हाथों में ही सारी सत्ता' के नारे के साथ कृषि क्रांति के कार्यक्रम को सक्रिय रूप से जारी रखने में उचित ध्यान नहीं दिया गया. जमीन के लिए आंदोलनों में वर्ग आधार पर जमीन वितरण में गलतियां हो रही हैं. क्रांतिकारी जनसंगठनों में और आरपीसीयों के नेतृत्व में खेतिहर व गरीब किसानों के हाथों में होने लायक उन वर्गों पर ध्यान देकर उनके नेतृत्व को विकसित करने में कमी है.
3. रणनीतिक व कार्यनीतिक संयुक्त मार्चों और जनांदोलनों को केंद्रीय कर्तव्य हासिल करने की दिशा में छापामार आधारों, छापामार जनों, लाल प्रतिरोध इलाकों, प्राथमिक आंदोलन के इलाकों, मैदानी व शहरी इलाकों के लिए निर्देशित कर्तव्यों के अनुरूप उन्हें जनयुद्धोन्मुख तौर पर विकसित करने में/ढालने में कमजोरी है.
4. कई समस्याओं पर गोलबंद हो रही जनता और उनके संघर्षरत संगठनों के साथ मुख्य रूप से 2014 के बाद देश में हिंदुत्व विरोधी प्रदर्शनों का बड़े उभार आया, जिसका फायदा उठाने हमारी पार्टी राजनीतिक हस्तक्षेप पर्याप्त मात्रा में नहीं कर पायी. कई समस्याओं पर प्रचार-आंदोलन चलाने में पिछड़ गयी. सामाजिक माध्यमों समेत

तमाम प्रचार माध्यमों को इस्तेमाल करने लायक ठोस नीति बनाकर अमल करने में कमजोरी जारी है।

5. कार्यनीतिक संयुक्त मंचों के नेतृत्व में जन समस्याओं में सक्रिय रूप से भाग लेने वालों पर हमें ध्यान नहीं देने की वजह से उन्हें हमारी राजनीतिक लाइन के आधार पर संगठित नहीं कर पा रहे हैं। इससे उस मंच के मित्र शक्तियों के साथ संकीर्ण रवैया अपना रहे हैं या तो उनके पूंछ पकड़ कर चल रहे हैं और प्रतिगामी शक्तियों का भंडाफोड़ नहीं कर पा रहे हैं। उन मंचों में शामिल मित्र शक्तियों में पूंजीवादी, सामंती, अवसरवादी, संशोधनवादी शक्तियों व गैर-सरकारी संगठनों के चुनावी हितों में, आर्थिकवाद में और सुधारवाद में जनांदोलनों का शिकार होने से बचते हुए उन मंचों में योजनाबद्ध ढंग से राजसत्ता हथियाने की चेतना से विकसित नहीं कर पा रहे हैं। जनता को और जुझारू रूप से संघर्ष करने लायक राजनीतिक व सांगठनिक प्रयास नहीं कर पा रहे हैं। संयुक्त मंचों में उस तरह के प्रयास कर पाने, समर्थ, चलाकी से, चेतनापूर्वक व्यवहार कर पाने वाली नेतृत्व शक्तियों को तैयार नहीं कर पा रहे हैं। बहुसंख्यक जनता को हमारे तरफ खींचकर, हमारे वर्ग निर्माणों में संगठित नहीं कर पा रहे हैं।
6. जनांदोलनों पर केंद्रीकरण करने, अन्य आंदोलनों के साथ संबंध रखने, आंदोलनों का विस्तारित करते हुए उच्च स्तर पर ले जाने, अन्य आंदोलनों के प्रति भाईचारा प्रकट करने और क्रांतिकारी आंदोलन के लिए व्यापक जनता की मदद जुटाने में सीमितताएं हैं। संयुक्त मंचों से व्यापक जनांदोलनों को निर्मित कर विकसित करने में फायदा हो रहा है, फिर भी उन्हें दीर्घकालीन दृष्टि से बरकार रखने की दिशा में हमारी कार्याचरण रहता नहीं है।

5. शहरों में पार्टी कार्य

कांग्रेस तक देश के कई शहरों में प्रधानतया छात्रों, बुद्धिजीवियों, महिलाओं और मजदूर वर्ग के बीच हमारा पार्टी कार्य संचालित हुआ. भारत के नवजनवादी क्रांतिकारी आंदोलन में शहरों की एवं मजदूर वर्ग की नेतृत्वकारी भूमिका, आंदोलन का निर्माण, कार्यनीति के बारे में समग्रतापूर्वक चर्चा करने के बाद सीसी ने 'शहरी इलाकों में हमारा काम' के नीतिगत पत्र तैयार किया था. 2007 कांग्रेस के बाद देश को कुछ मुख्य औद्योगिक गलियारों (कॉरिडोरों) के रूप में चिह्नित कर यह निश्चय किया कि प्राथमिकता क्रम बनाकर उसके अनुसार काम किया जाए. शहरों में पार्टी कार्य को योजनाबद्ध तरीके से संचालित करने के लिए सीसी सदस्यों के साथ सीसी ने एक शहरी (उस्को) सब कमेटी गठित की.

कांग्रेस के संपन्न होने के फौरन बाद दिल्ली इंचारज एक सीसीएम गैर-जिम्मेदाराना तरीके से, कम-से-कम पार्टी को बताए बगैर ही पार्टी को छोड़कर चल दिया. कांग्रेस के समापन को एक साल पूरा होने के पहले ही उत्तर रीजनल ब्यूरो सदस्य के तौर पर काम करने वाले लंका पापि रेड्डी ने राजनीतिक तौर पर अधोपतित होकर व नैतिक रूप से पतित होकर दुश्मन के सामने घुटने टेक दिए. आंदोलन एवं शहरी आंदोलनों के बारे में उसे ज्ञात समस्त जानकारियां उसने दुश्मन को उपलब्ध करायी. 2005-15 के बीच दुश्मन के चंगुल में फंसकर शहीद हुए व जेलों में बंद हुए सीसी सदस्यों समेत राज्य स्तर के कई नेतृत्वकारी कॉमरेडों के पास से दुश्मन को प्राप्त कंप्यूटरों, हार्ड डिस्क, अन्य इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं के जरिए काफी मुख्य, अति महत्वपूर्ण शहरी आंदोलन का विवरण जो उसके लिए अभेद्य होना चाहिए था, दुश्मन के हाथ लग गया. शहरों पर और केंद्रीकृत कर हमले कर हमें गंभीर नुकसान पहुंचाने में यह उन्हें मददगार रही. इन मामलों की पृष्ठभूमि में ही सीसी ने शहरी आंदोलन की समीक्षा की.

सीसी ने यह चिह्नित किया कि एक तरफ गिरफ्तारियां, शहादतें और दूसरी तरफ देश के कई शहरों का कामकाज में कई तरह की कमियां जारी रही. उससे भी गंभीर कमजोरी जारी रही. हम इस बात को जितना स्पष्टता

से चिह्नित करते हैं कि शहर दुश्मन के लिए किले समान हैं, रणनीतिक दृष्टि से शहरों में अमल किए जाने वाले दांव-पेंचों व कार्य पद्धति के मामले में उतने ही कमजोर ढंग से व्यवहार कर रहे हैं। सीसी ने इस सच्चाई को चिह्नित किया। जहां दुश्मन हमारी एकीकृत पार्टी को बहुत गंभीरता से लेकर हमारे साथ व्यवहार कर रहा था, वहीं शहरी काम में हम तो व्यवहार में दुश्मन को हल्की नजर से देखते हुए, खतरनाक स्तर पर लीगलिज्म, यथेच्छापूर्वक व्यवहार व्यक्त हो रही है। इन परिस्थितियों में शहरों में काम को सुधारते हुए तेज करने सब कमेटी ने निर्णय लिया था। उस हेतु आवश्यक सांगठनिक कार्रवाइयां प्रारंभ की थी। उन पर निर्भर होकर अपने कार्य की योजना बनाई थी। परंतु सांगठनिक कमेजोरियों की वजह से कुछ जगहों पर हमारे निर्माणों के भीतर दुश्मन पहले ही घुस चुका था, जिससे केंद्रीय नेतृत्व समेत विभिन्न स्तरों के कैडर क्रमशः दुश्मन के जाल में फंसकर जेल गए, कुछ शहीद हो गए। इससे शीघ्र ही देश के अनेक शहरों में पार्टी को अपूरणीय क्षति हुई। कुछ शहरों से कुछ कामरेडों को उनकी अस्थायी सुरक्षा की दृष्टि से सीसी को रणनीतिक इलाकों में या अन्य क्षेत्रों के काम में भेजना पड़ा। दरअसल इन नुकसानों ने केंद्रीय कर्तव्य को हासिल करने में आगे बढ़ रहे देश के क्रांतिकारी आंदोलन पर नकारात्मक असर डाला।

देश के कई शहरों में हुए नुकसानों से पार्टी अभी भी बाहर आ नहीं पा रही है। सीसी कामरेडों समेत विभिन्न स्तरों के पार्टी कैडर सुदीर्घ जेल जीवन काटकर एक-एक करके रिहा हो रहे हैं। उनमें से कुछ लोगों ने पार्टी छोड़ दिया। इन परिणामों की पृष्ठभूमि में किसी तरह के उतावलेपन का शिकार हुए बिना भावी शहरी आंदोलन की योजना व कार्य पद्धति को तय करने का कर्तव्य सीसी एवं राज्य कमेटियों के सामने है।

शहरों व शहरों में मजदूर वर्ग के महत्व की दृष्टि से ध्वस्त हुए शहरी संबंधों को पुनर्स्थापित करने का प्रयास हो रहा है। शहरों के पुराने संपर्कों में लगभग सभी ने दुश्मन के सामने खुल गए (exposed) हैं। लेकिन उन पर दुश्मन की निगरानी है। इसलिए उस तरह के संपर्क खतरनाक है। उनके संबंधों में न जाकर नए संपर्कों से काम प्रारंभ करना चाहिए। मजदूरों, छात्रों, युवाओं, कर्मचारियों, महिलाओं, दलितों को संगठित करने पर हमारा केंद्रीकरण रहना

चाहिए. शहरों में दीर्घ दृष्टि से, संयम के साथ, किसी प्रकार की जल्दबाजी का शिकार हुए बगैर काम करना चाहिए. शहरों में सिविल पोलिसिंग का खतरा भी बढ़ गया है. शहर में होने वाली हर गतिविधि के बारे दुश्मन को जानकारी उपलब्ध कराने व सूचनाएं पहुंचाने वाली विस्तृत मशीनरी बनी हुई है. कदम-दर-कदम हर व्यक्ति के मूवमेंट्स को रिकॉर्ड करने की समाचार नियंत्रण व्यवस्था मौजूद है. दुश्मन कानूनन प्रत्येक व्यक्ति के सारे विवरणों का रिकॉर्ड बनाकर रख रहा है. यदि हम इन सभी को जानकर कड़ी सावधानियों के साथ रह सकते हैं तभी शहरों में दुश्मन की नजर से बचकर काम कर सकते हैं.

शहरों में दुश्मन का केंद्रीकरण तीव्रता के साथ जारी है. ग्रामीण इलाकों में संचालित जनयुद्ध के लिए शहरों से किसी भी तरह का मदद प्राप्त न हो, उस जनयुद्ध की वास्तविकता के बारे में रक्ती भर जानकारी भी शहरों तक न पहुंचे, इसके बारे में शहरों में प्रचार न होने लायक नियंत्रित करने सभी तरह के दमनात्मक हथकंडे अपना रहे हैं. शहरों में जितनी भी कम मात्रा में क्यों न हो जनता का पक्ष लेने वाली जनवादी ताकतों का दुश्मन सहन नहीं कर रहा है. उन सभी को शहरी माओवादी होने का टैग लगा रहा है. उन्हें हिरासत में लेकर कई तरीकों में सता रहा है. कट्टर प्रतिक्रियावादी, प्रतिगामी संघ गिरोह के नेता क्रांतिकारी व जनवादी शक्तियों के बारे में विषैला प्रचार कर रहे हैं. ऐसी परिस्थितियों में शहरों में रहकर काम करना तलवार की धार पर चलने जैसा ही है. इन परिस्थितियों में मध्यम वर्गीय बुद्धिजीवियों, क्रांतिकारी, जनवादी ताकतों को उत्पीड़ित जनता के पक्ष में खड़ा करने और उनके समर्थन में जनता की मदद इकट्ठी करने को बहुत ही महत्व है. शोषक-शासक वर्गों की निरंकुशता का धिक्कार करते हुए, जितनी भी कठिनाइयां उत्पन्न हो जाए, उत्पीड़ित जनता के पक्ष में, क्रांति के पक्ष में वे और दृढ़ता के साथ उन्हें बरकार रखने के लिए हमें प्रयास करना चाहिए. जब का तब उन्हें उचित मार्गदर्शन देनी चाहिए.

मार्गदर्शन:

1. हमारी पार्टी द्वारा बनायी गयी 'शहरी इलाकों में हमारा काम' के

पॉलिसी पेपर का पूरी तरह अध्ययन कर, उसे समझ कर अमल में लाना चाहिए.

2. शहरों में ठोस रूप से जो संबंध हैं, उन पर निर्भर होकर राज्य कमेटियों को यह निर्णय लेकर मार्गदर्शन देना चाहिए कि पहले किस क्षेत्र में केंद्रीकरण कर काम करना है और अपने इलाकों के शहरों में किस शहर में पहले काम प्रारंभ करना है. छात्र, युवा, महिला, कर्मचारी क्षेत्र समेत बुद्धिजीवियों के बीच काम करना आवश्यक है. कारपोरेट मीडिया के बाहर 'न्यू मीडिया' के तौर पर संगठित हो रही ताकतों के साथ एकताबद्ध होना चाहिए. शासक वर्गों द्वारा परसेप्शन मैनेजमेंट के तहत आगे रखने वाली ताकतों के साथ कुशलतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए.
3. शहरों में हमारे काम को पुनरुद्धार करने और विकसित करने के लिए वहां के क्रांतिकारी जन संगठनों से सक्रियता, आत्मबिलदान की चेतना, सांगठनिक क्षमता होने वाली शक्तियां एवं विभिन्न तरह से पार्टी के संपर्क में आने वाले उच्च स्तर की शक्तियां प्रधान स्रोत होनी चाहिए. उसी तरह तेजी बढ़ते शहरीकरण से ग्रामीण इलाकों की जनता को शहरों से अविभाज्य संबंध बन रहे हैं. शिक्षा, नौकरी, व्यापार, चिकित्सा आदि क्षेत्रों से उनकी जिंदगियां शहरों से गुंथ गयी हैं. देश के कई इलाकों में उस तरह के लोगों ग्रामीण क्रांतिकारी आंदोलन से सुदीर्घ काल से संबंध हैं. उनके बदलते जीवन अवस्था का ठोस रूप से अध्ययन कर, उनमें से विश्वसनीय शक्तियों का चयन कर, शहरों में विस्तार करना चाहिए.
4. शहरों में कार्यरत कॉमरेडों को चाहिए कि वे दुश्मन के लिए अभेद्य गुप्त कार्यपद्धति का पालन करें. क्रांतिकारी आंदोलन के गुप्त मामले एक भी उसे मालूम नहीं होना चाहिए. जब तक ऊपरी कमेटियां मांग नहीं करती हैं, तब तक आंदोलन के प्रतिवेदन मौखिक ही होने चाहिए. लिखित में देने वाली रिपोर्टाज एकदम संक्षिप्त में होनी चाहिए. दुश्मन के लिए अनजान कोड अवश्य उपयोग करना चाहिए. किए जाने वाले कार्यों के मामलों में विस्तारपूर्वक प्रस्ताव नहीं लिखना

चाहिए. कमजोर शक्तियां शक्तिशाली दुश्मन के साथ लड़ते समय अपनी ताकत को बचाकर बढ़ाने के लिए अपनाए जाने वाली कार्यनीति (संघर्ष और सांगठनिक स्वरूप) गुप्त कार्य पद्धतियों व कार्यशैली बिना खामी के होनी चाहिए.

5. आज की परिस्थितियों में जहां प्रौद्योगिकी काफी विकसित हुई है, इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं का अविवेकपूर्ण ढंग से इस्तेमाल नहीं करना चाहिए. ऐसा उपयोग करने से हमारी मौजूदगी खुल जाने व हमारे मूवमेंट्स के बारे में दुश्मन के सामने प्रकट होने के खतरें मुंह बाएं खड़े रहेंगे. हर पल हमारे अस्तित्व खुल जाने व हमारे आवागमन के बारे में जानने दुश्मन को अनेक मौके उपलब्ध होगी. इन्हें गंभीरता से ध्यान में लेना चाहिए. शहरों में काम करने वाले कॉमरेडों की व्यवहार शैली अत्यंत सहज होनी चाहिए. जहां कहीं भी घुलमिल जाने व किसी भी तरह के संदेह के लिए कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिए.

नवजनवादी क्रांति में शहरों की रणनीतिक महत्व को और वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखकर सही कार्यनीति अपनाते हुए शहरी आंदोलन को विकसित करने के लिए हमें दृढसंकल्पकता के साथ काम करना चाहिए. इसके लिए प्रति दिन दुश्मन की निगरानी में रहते हुए कार्य करने में कुशलताएं सीखकर उसमें निपुण बनना चाहिए.

6. भारत के क्रांतिकारी आंदोलन की वर्तमान परिस्थिति का आकलन—हमारे कर्तव्य

एकता कांग्रेस द्वारा तय प्रधान, केंद्रीय कर्तव्य के साथ अन्य तात्कालिक कर्तव्यों की पूर्ति के लिए हमने विगत 14 सालों से देश भर में सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक व सांगठनिक कार्य किया है। इस समूचे कार्य की पार्टी, जनसेना, संयुक्त मोर्चा के क्षेत्रों के कार्य के तौर पर समीक्षा करके उसमें सकारात्मक (पाजिटिव) व नकारात्मक (नेगेटिव) विषयों को चिह्नित किया है। इस समीक्षा पर आधारित होकर भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के वर्तमान स्थिति का आकलन करेंगे। उस आकलन के आधार पर तात्कालिक कर्तव्य तय करेंगे।

हमारी पार्टी व क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा हासिल सफलताएं

हमारे देश की ठोस परिस्थितियों के साथ मालेमा को लागू कर हमने (सीपीआई (एमएल), एमसीसी) 1969 में ही मौलिक रूप से सही राजनीतिक—सैनिक लाइनें तय की थीं। उन्हें व्यवहार में ले जाकर अमल करने के सारे कार्य की केंद्र व राज्य स्तर के अधिवेशनों व प्लीनमों में समीक्षा कर, उच्च स्तर का संश्लेषण कर, हमारी राजनीतिक—सैनिक लाइनों को समृद्ध करते आए हैं। उसके बाद एकीकृत पार्टी/माओवादी पार्टी के गठन से लेकर एकता कांग्रेस के संपन्न होते तक की प्रक्रिया के जरिए हमने हमारी राजनीतिक—सैनिक लाइनों को और भी सुसंपन्न किया।

छापामार सेना को नियमित सेना, छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में विकसित करने के द्वारा छापामार जोनों को मुक्तांचलों में विकसित कर सकते हैं, इस स्पष्टता के साथ ही हमने डीके, बीजे को मुक्तांचलों में विकसित करने के केंद्रीय कर्तव्य को तय किया। यह मालेमा को लागू करने में एवं माओवादी जनयुद्ध को लागू करने में ठोस अनुभव है।

हमारी पार्टी, एकता कांग्रेस में समृद्ध बनायी गयी पार्टी की राजनीतिक

व मिलिटरी लाइन और बनाया गया केंद्रीय कर्तव्य पर ही मौलिक रूप से आधारित होकर उन्हें लागू करने में समूची पार्टी की श्रेणियों को सैद्धांतिक व राजनीतिक रूप से शिक्षित करते हुए, दुश्मन के भीषण हमलों को झेलते हुए, गंभीर नुकसानों के बीच ही, दृढ़संकल्प व आत्मबलिदान की चेतना के साथ दृढ़ता से अमल किया। इसके जरिए पिछले 14 सालों के समय में सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक व सांगठनिक रूप से कई मूल्यवान अनुभव प्राप्त किया। पार्टी श्रेणियों को गैरसर्वहारा रुझानों से उबार कर बोल्शेवीकरण करने का प्रयास किया। बोब अवाकियन, प्रचंड-भट्टाराय के आधुनिक संशोधनवादी लाइनों के खिलाफ दृढ़ता से संघर्ष किया। वर्गसमर्पण वाली, संशोधनवादी, गांधीवादी व सुधारवादों का भंडाफोड़ किया। कृषि क्रांति की धुरी पर जनयुद्ध का (वर्ग संघर्ष और गुरिल्ला युद्ध) नेतृत्व प्रदान करते हुए, उसे तेज व व्यापक करने का प्रयास किया। क्रांति में तीन जादुई हथियारों को मजबूत करने के लिए प्रयास करते हुए अंतरराष्ट्रीय तौर पर पहचान प्राप्त किया।

हमारी पार्टी लाइन को व्यवहार में ले जाते हुए छापामार सेना को नियमित सेना के रूप में विकसित करने के लिए कुछ गुरिल्ला बटालियनों के निर्माण कार्य में लग गए थे। पीएलजीए के फारमेशनों को सैद्धांतिक, राजनीतिक व सांगठनिक तौर पर सुशिक्षित करते हुए गुरिल्ला युद्ध में दुश्मन से बड़े पैमाने पर हथियार जब्त कर उसे सशस्त्र करने द्वारा मजबूत करने का प्रयास किया। पीएलजीए को संचालित करने के लिए पार्टी निर्माणों के साथ विभिन्न स्तरों के कमांडों को गठित किया था। विभिन्न छापामार जोनों में आंदोलन की मजबूती व कमजोरी के आधार पर छापामार युद्ध को छोटी, मध्यम व बड़ी कार्रवाइयों को विकेंद्रीकृत व केंद्रीकृत कार्रवाइयों के द्वारा एवं अभियानों के रूप में जारी रखने का अनुभव हासिल कर, उसका संश्लेषण किया। 2007 से 2011 के बीच तक छापामार युद्ध को उच्च स्तर पर संचालित करते हुए चलायमान युद्ध संबंधित प्राथमिक लक्षणों वाली कुछ छापामार कार्रवाइयों को अंजाम दिया था। इनके जरिए छापामार सेना को नियमित सेना व छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध के रूप में विकसित करने की प्रक्रिया से संबंधित प्राथमिक तौर पर स्पष्टता हासिल हुई।

छापामार युद्ध को व्यापकता-तीव्रता के साथ संचालित कर डीके, बीजे,

एओबी, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, महाराष्ट्र (बालाघाट—गोंदिया) में दुश्मन की सत्ता पर धक्का पहुंचाते हुए/को ध्वस्त करते हुए ग्राम स्तर के जन राज्यसत्ता के अंगों का निर्माण किया। डीके, बीजे, एओबी में एरिया स्तर पर जन राज्यसत्ता के अंगों का गठन किया। डीके में और भी उच्च स्तर पर डिविजनल स्तर पर जन राज्यसत्ता के अंगों का निर्माण कर, उनकी बुनियाद पर आधारित होकर जोन जनताना सरकार समन्वय कमेटी का निर्माण किया। प्राथमिक स्तर पर नई जनवादी आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक व्यवस्थाओं का निर्माण करने में अनुभव प्राप्त किया। ये इलाकें जनयुद्ध के रणनीतिक कर्तव्यों की पूर्ति के लिए छापामार आधारों के रूप में इस्तेमाल हो रहे हैं। इन छापामार आधारों पर निर्भर होकर डीके और मध्य रीजन के आंदोलनों के समर्थन में खड़े हैं। बीजे पूर्वी रीजन के आंदोलनों के समर्थन में खड़ा रहा।

माओवादी जनयुद्ध को लागू करने के तहत जनसेना के निर्माण के साथ जनयुद्ध के संचालन का हिस्सा—आत्मरक्षा—हमला, पच्छगति—अग्रगति, हार—जीत की स्थितियों में अमल किए जाने वाले दांव—पेंचों को तय करने में कुछ अनुभव हासिल किया। जब का तब दुश्मन के हमले के स्तर, स्वभाव में आने वाले बदलावों का विश्लेषण करते हुए उन पर पलटवार करते हुए हराने के लिए हमारी पार्टी—जनसेना द्वारा अपनाए जाने वाले आत्मरक्षा—हमले के दांव—पेंचों की रूपकल्पना कर रहे हैं। जब आंध्रप्रदेश (आज का तेलंगाना राज्य को भी मिलाकर) का आंदोलन अस्थायी पीछेहट की स्थिति का शिकार हुआ, तब वहां से हमारे कुछ पार्टी व पीएलजीए बलों को अन्य इलाकों में भेज दिया गया। तो पर भी वहां से हमारे बलों को सही समय पर रिट्रीट न करने के चलते रिट्रीट होते कुछ बल दुश्मन के हमले में नष्ट हो गए व बिखर गए। डीके की मदद का उपयोग करते हुए तेलंगाना से पार्टी—पीएलजीए बलों को सीजनल अड्वांस— रिट्रीट के जरिए संचालित कर रहे हैं।

अस्थायी पीछेहट की स्थिति का शिकार तेलंगाना, एओबी व आंध्रप्रदेश के आंदोलनों को आगे बढ़ाना के लिए हम जो राजनीतिक, सांगठनिक कार्य व दांव—पेंच अपना रहे हैं, वो अस्थायी पीछेहट की स्थिति से अग्रगति में बदलने के दांव—पेंचों को विकसित करने में मददगार होंगे।

इस पूरे समयावधि में साम्राज्यवाद विरोधी, सीबीबी विराधी, सामंतवाद

विरोधी वर्ग संघर्ष के तहत हमने जिन रणनीतिक और कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चों का निर्माण किया, उन्होंने हमें संयुक्त मोर्चा के क्षेत्र में मूल्यवान अनुभव उपलब्ध कराए। ये अनुभव शहरी व मैदानी इलाकों में आंदोलनों की निर्माण के लिए उपयोगी होंगे।

इस दौरान राज्यहिंसा, जमीन की समस्या, विस्थापन समस्या आदि के आधार पर लालगढ़ आंदोलन, जमीन समस्या पर नारायणपटना आंदोलन आदि आंदोलनों का निर्माण कर साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीपति और सामंत विरोधी आंदोलन में नए अनुभव हासिल किए। जनवादी तेलंगाना के राजनीतिक कार्यक्रम बनाकर पृथक तेलंगाना आंदोलन को चलाना राजनीतिक क्षेत्र में हमें हासिल एक मुख्य अनुभव है।

दीर्घकाल तक तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल के आंदोलन तीव्र दुश्मन के हमले और हमें हुए नुकसान, आत्मगत शक्तियों की कमी-कमजोरियों की वजह से प्राथमिक स्तर में ही बहुत कमजोर रूप में हैं। तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल राज्यों के पार्टी शक्तियों को एकत्र कर एक रणनीतिक योजन के साथ तीन राज्यों की सीमा (पश्चिमी घाटी) इलाके में जनयुद्धोन्मुख करते हुए हमें एक नया जनयुद्ध मोर्चे और वर्ग संघर्ष के कार्य को आरंभ करना एक नया और सकारात्मक अनुभव है। रणनीतिक योजना के तहत ओड़िशा और एमएमसी में विस्तार करना एक और सकारात्मक अनुभव है।

लगातार विभिन्न रूपों में वर्ग संघर्ष में लगे रहते हुए, गैर सर्वहारा रुझानों के शुद्धीकरण, बोल्शेवीकरण समेत हमारे द्वारा अपनाए गए विभिन्न प्रकार के वैचारिक, राजनीतिक, सैनिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों, विविध स्तरों पर आयोजित बैठकों के फलस्वरूप पार्टी, पीएलजीए व जननिर्माणों (संयुक्त मोर्चे के क्षेत्र) के अग्रगामी तबके में कठिन स्थिति को, अस्थायी पीछेहट की स्थिति को पार करने के लिए वर्ग संघर्ष को, छापामार युद्ध को संचालित करने के दांव-पेंचों पर कुछ हद तक स्पष्टता हासिल हुई। अग्रगामी तबके का अनुसरण करने के साथ व्यवहार से सीखते हुए मध्यस्थ तबका विकसित हो रहा है। अग्रगामी व मध्यस्थ तबकों में कठिन स्थिति को, अस्थायी पीछेहट की स्थिति को पार करने के दृढ़संकल्प, त्यागशीलता, अनुशासन अपेक्षाकृत बढ़ रहे हैं। यह कठिन स्थिति को, अस्थायी पीछेहट की स्थिति को पार करने के लिए आत्मगत शक्ति

के दृष्टि से मजबूत स्रोतों व आधारों में से एक बना रहेगा.

अस्थायी पीछेहट की स्थिति में पहुंचने के मुख्य कारण

भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के 2012 तक कठिन स्थिति में व वर्तमान में अस्थायी पीछेहट की स्थिति में पहुंचने के मुख्य कारणों में एक है, प्रतिक्रांतिकारी हमले की तीव्रता. और एक मुख्य कारण है आत्मगत कार्य से संबंधित है.

दुश्मन के हमले में पार्टी की नेतृत्वकारी शक्तियों समेत आत्मगत शक्तियों को खोना:

2007 से 2020 तक बीते 14 सालों में केंद्रीय कमेटी और राज्य कमेटियों के सदस्यों से लेकर एरिया कमेटियों के सदस्यों तक विभिन्न स्तरों के नेतृत्व कामरेड दसियों संख्या में दुश्मन के हत्याकांडों में शहीद हुए और दसियों संख्या में जेल में बंदी हो गए. पार्टी और आंदोलन को छोड़कर जाने वालों या दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण करने वालों की संख्या बहुत ज्यादा है.

ये नुकसान, पार्टी की एकता और एकता कांग्रेस के बाद बने अद्भुत आत्मगत अनुकूल परिस्थिति का इस्तेमाल करने में और एकता कांग्रेस निर्देशित लक्ष्य हासिल करने में गंभीर नकारात्मक असर डाला. केंद्रीय कर्तव्य और अन्य फौरी कर्तव्यों के बीच आपसी संबंधों को समझने में कमी हुई. सामाजिक शोध के आधार पर वर्गसंघर्ष के कार्यक्रम और कार्यनीति को विकसित करने में देरी हुई. 2021 जनवरी तक इस कर्तव्य को पूरा नहीं कर पाए. इससे देश के व्यापक मैदानी व ग्रामीण इलाकों में वर्गसंघर्ष को और शहरी आंदोलनों को विकसित करने में कमजोरी जारी रही. पार्टी में गैर-सर्वहारा रुझान पर्याप्त मात्रा में सुधार नहीं पाए.

हमारी पार्टी में और क्रांतिकारी आंदोलन में 2007 से 2011 तक याने पांच साल तक प्रधान रूप से सकारात्मक पहलू रही और आंदोलन मजबूत स्थिति में थी तथा भारत के क्रांतिकारी आंदोलन अग्रगति की स्थिति में थी. लेकिन एकता समय से ही उक्त कारणों से नुकसान क्रमशः हमारी पार्टी में बढ़कर 2012 तक सकारात्मक पहलू घटकर, क्रांतिकारी आंदोलन में नकारात्मक पहलू प्रधान पहलू के रूप ले लिए. इसका नतीजा ही 2012 तक अखिल भारत

के क्रांतिकारी आंदोलन कठिन दौर में चले जाना। इस कठिन दौर से उबरने के लिए हमने 9 सालों से किए राजनीतिक, सैनिक और सांगठनिक कार्य में कुछ सकारात्मक पहलू शामिल हैं, फिर भी दुश्मन के हमले की तीव्रता की वजह से कठिन दौर से उबर नहीं पाएं। ऐसी स्थिति में प्रतिक्रांतिकारी 'समाधान' हमले से परिस्थिति और प्रतिकूल बनी, तो 2018 से हमारी क्रांतिकारी आंदोलन अस्थायी पीछेहट की स्थिति में चली गयी।

इस अस्थायी पीछेहट की स्थिति के लक्षण

अस्थायी पीछेहट की स्थिति को समझने के लिए हमें आज की दुश्मन (शोषक—शासक वर्ग) की आर्थिक, राजनीतिक व सैनिक स्थिति; हमारी पार्टी, पीएलजीए—छापामार युद्ध की स्थिति; जन संगठनों—संयुक्त मोर्चा संगठनों की स्थिति; क्रांतिकारी जन राज्यसत्ता के संगठनों की स्थिति का संश्लेषण कर देखने पर —

1. केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा 'समाधान' के नाम पर प्रतिक्रांतिकारी हमले को जारी रखना। क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों में छः लाख से अधिक पुलिस, अर्ध-सैनिक व कमांडो बलों को तैनात किया गया जबकि आंदोलन के इलाकों समेत देशभर में जनता पर ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद ने राज्यसत्ता के समर्थन से हमलों को तीव्र किया।
2. छापामार आधारों, लाल प्रतिरोधी इलाकों व नए विस्तार के इलाकों में भी कारपेट सेक्युरिटी का विस्तार। इस कारपेट सेक्युरिटी पर निर्भर होकर छापामार आधारों पर अविराम जारी हमलों की वजह से क्रांतिकारी जन राज्यसत्ता के संगठन कमजोर होते हुए छापामार आधारों के कमजोर हो जाना।
3. हमारी पीएलजीए का अभी भी प्रधानतया दस्ता/सेक्शन, प्लाटून प्रधान फार्मेशनों के रूप में, कुछ सीमित कंपनियां, एक गुरिल्ला बटालियन के फार्मेशनों से युक्त छापामार सेना के रूप में रहना। डीके, बीजे, पूर्वी बिहार—पूर्वोत्तर झारखंड, एओबी में ही छोटे, मध्यम व बड़े किस्म की कार्रवाइयां व अन्य कुछ इलाकों में मध्यम व छोटे किस्म की कार्रवाइयां करने के स्तर पर ही हमारा छापामार युद्ध का

संचालित होना. तमाम छापामार जोनों में गुरिल्ला कार्रवाइयों की संख्या घटती जाना, दुश्मन के बलों से हथियार व कारतूस की जब्ती घट जाना.

4. देश भर में छापामार जोनों में प्रतिक्रांतिकारी हमले का 'डेवलप' (विकास) फेज में पहुंचना. केंद्र व राज्य सरकारों के पुलिस, अर्ध-सैनिक व कमांडो बलों की इस स्तर पर तैनाती बढ़ना कि वे आंदोलन के सभी इलाकों – लाल प्रतिरोधी इलाकों, छापामार जोनों, छापामार आधारों में एक ही समय में ऑपरेशंस/हमलें कर सकें.
5. प्रतिक्रांति द्वारा जारी फासीवादी हमले की वजह से शहरों, मैदानी इलाकों, लाल प्रतिरोधी इलाकों व छापामार जोनों में जन संगठनों का ध्वस्त होते जाना.
6. हालांकि शासक वर्ग आर्थिक, राजनीतिक संकट का सामना कर रहे हैं लेकिन पर्याप्त मात्रा में हमारे ताकतवर नहीं बनने की वजह से उनके बीच में उस स्तर तक विभाजन की स्थिति नहीं बनी है जिससे कि वे केंद्र व राज्य स्तर पर हमारे साथ संयुक्त मोर्चा के लिए तैयार हो जाएं. स्थानीय, जिला स्तरों पर बुर्जुआ पार्टियों के कार्यकर्ता, नेता, शक्तियां व संस्थाएं उनके राजनीतिक हितों के लिए हमारे साथ संयुक्त मोर्चा के लिए तैयार रहने की स्थिति, संशोधनवादी पार्टियों, पेट्टी बुर्जुआ संगठनों/संस्थाओं का कुछ अंतरों से हमारे साथ राज्य व जिला स्तर पर संयुक्त मोर्चा में काम करने की स्थिति. दुलमुली मित्र-धनी किसानों व राष्ट्रीय बुर्जुआजी का साम्राज्यवादी, सीबीबी व सामंती शोषण एवं उत्पीड़न से फटेहाल बनकर संघर्ष के लिए तैयार होते हुए ऐसी जगहों पर जहां हम मजबूत हैं, वहां हमारे साथ संयुक्त मोर्चा के लिए तैयार होने की स्थिति.
7. शहरी व मैदानी इलाकों में जनता अपनी आर्थिक, सामाजिक, तबकाई (सेक्शनल) व राजनीतिक समस्याओं को लेकर गैर-कानूनी व जुझारु संघर्षों में व्यापक पैमाने पर गोलबंद होने का रुझान क्रमशः प्रारंभ हुआ है, बावजूद इसके उन्हें वर्ग मुक्ति के लिए सशस्त्र संघर्ष के स्तर तक विकसित करने वाली पार्टी का उन इलाकों में कमजोर रहना.

8. केंद्रीय कमिटी के पास अखिल भारतीय और राज्य स्तर पर क्रांतिकारी आंदोलन का सही समय पर समन्वय करने लायक व और राज्य कमिटियों के पास समन्वय मशीनरियों के अभाव की कमजोर स्थिति.
9. चूंकि क्रांतिकारी आंदोलन की ताकत का स्तर दुश्मन की ताकत की तुलना में कमजोर है, इसलिए दुश्मन अपने हमलों में हासिल सफलताओं को संगठित करते हुए आंदोलन की ताकत को ध्वस्त करने आगे बढ़ना. क्रांतिकारी आंदोलन अस्थायी रूप से पीछेहट की स्थिति में जाना.

क्रांतिकारी आंदोलन को इस अस्थायी पीछेहट से उबार कर अग्रगति में ले जाना ही हमारा मौजूदा प्रधान लक्ष्य है.

वस्तुगत तौर पर प्रतिक्रांतिकारी हमले की तीव्रता को पहचान कर, उसके अनुरूप रणनीति व कार्यनीति संबंधित दिशानिर्देश के मुताबिक पार्टी को ढालने में कमजोरी और आत्मगत स्थिति की कमजोरी, दोनों मिल जाने से अस्थायी पीछेहट की स्थिति पैदा हुई. देशव्यापी क्रांतिकारी आंदोलन वर्तमान में अस्थायी पीछेहट की स्थिति में रहना साधारण स्थिति है. जबकि असमान विकास के नियम के मुताबिक हमारा क्रांतिकारी आंदोलन अस्थायी पीछेहट में और भाटे में रहे छापामार जोनों, ध्वस्त हुए छापामार जोनों, लाल प्रतिरोध इलाकों, आंदोलन के कमजोर वाले इलाकों, प्राथमिक स्तर के वर्ग संघर्ष वाले इलाकों के रूप में है. हमारे आंदोलन के इलाकों के दायरे और आबादी काफी घटी है. अब भी हमारी पार्टी व आंदोलन नहीं होने वाले ग्रामीण और शहरी इलाके तथा आबादी अत्यधिक है. इस ठोस स्थिति को ध्यान में रखकर अस्थायी पीछेहट की स्थिति को उभार/अग्रगति में विकसित करने की योजना बनानी होगी.

मौजूदा अस्थायी पीछेहट की स्थिति हमारे वर्तमान दांव-पेंचों, साधारण कार्याचरण की दिशा को तय करता है. उसके मुताबिक –

1. ध्वस्त होते जन संगठनों का पुनर्निर्माण करना, ध्वस्त होते जनाधार को फिर से मजबूत बनाना.
2. देश भर में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं पर जन संघर्षों

में गोलबंद होने वाली जनता को वर्गीय व तबकाई संगठनों में संगठित करना, उन्हें साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद व सामंतवाद विरोधी वर्ग संघर्षों की राजनीति से चेतनत करते हुए जुझारु संघर्षों के रूप में विकसित करते हुए सशस्त्र संघर्ष के स्तर तक विकसित करना, व्यापक मैदानी इलाकों व शहरों में पार्टी को उस तरह काम करने लायक विकसित करना.

3. स्थानीय स्तर से लेकर केंद्रीय स्तर तक मध्यस्थ तबकों को हमारी ओर ला खड़ा करना, प्रधान दुश्मन को अलग-थलग करते हुए दुश्मनों के बीच के अंतरविरोधों को क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने में मदद करने योग्य इस्तेमाल करना, मित्रवत ताकतों को हमारे पक्ष में खड़ा करना.
4. लाल प्रतिरोधी व छापामार जनों के इलाकों के दायरे को बढ़ाना, पुनस्संगठित होना, जिसके जरिए आंदोलन के इलाकों का विस्तार करना.
5. छापामार युद्ध को विस्तृत-तीव्रतर करते हुए यथासंभव कारपेट सेक्युरिटी को ध्वस्त करते हुए जन राज्यसत्ता के संगठनों-छापामार आधारों को बनाए रखने का प्रयास करना.
6. आंदोलन के सभी इलाकों में पीएलजीए को राजनीतिक, सैनिक व सांगठनिक तौर पर संगठित करते हुए ताकत के मुताबिक प्रधान रूप से छोटे व मध्यम किस्म के छापामार कार्रवाइयों को जारी रखते हुए हथियार आदि सैनिक साजोसामन को बढ़ाना.
7. केंद्रीय व राज्य कमेटियों की समन्वय मशीनरी को विकसित करने का गंभीर प्रयत्न करना. तब तक हमारी राजनीतिक-मिलिटरी लाइन व पॉलिसी के आधार पर विभिन्न राज्यों में नेतृत्वकारी कामरेड टीमों के रूप में रहते हुए पहलकदमी के साथ आंदोलन को मार्गदर्शन उपलब्ध कराना.

कुल मिलाकर देखा जाए तो पार्टी की सैद्धांतिक व राजनीतिक बुनियाद को सुदृढ़ करते हुए, सांगठनिक तौर पर संगठित करना, जनाधार को बढ़ाने

के लिए वर्ग संघर्ष को तीव्रतर करना, पार्टी, पीएलजीए, संयुक्त मोर्चा को संगठित करना, नेतृत्व, कैडरों व पीएलजीए बलों को बचाना, ताकत के मुताबिक छापामार युद्ध को संचालित करना, यही वर्तमान में हमारे कार्याचरण की दिशा के रूप में रहेगा।

ऊपर उल्लेखित ठोस राजनीतिक परिस्थिति से प्रारंभ कर, हमें अस्थायी पीछेहट की स्थिति को पार करने और क्रांतिकारी आंदोलन को अग्रगति में विकसित करने के लक्ष्य से हमें रणनीतिक योजना बनानी चाहिए। अस्थायी पीछेहट की स्थिति से अग्रगति में क्रांतिकारी आंदोलन के विकसित होने के लिए वस्तुगत/आत्मगत परिस्थितियों में उपलब्ध तात्कालिक व दीर्घकालिक मौकों का उल्लेख पहले करेंगे।

1. 1970 के दशक से स्टैगप्लेशन के रूप में जारी पूंजीवाद के साधारण संकट के तहत आर्थिक रूप से क्रमिक तौर पर कमजोर होते आ रहे अमेरिकी साम्राज्यवाद 2008 में उत्पन्न गृह ऋणों के संकट की वजह से उसका और भी कमजोर हो गयी। तब से अमेरिका सहित साम्राज्यवाद-पूंजीवादी देश और गहरी व व्यापक संकट में फंसे गए। उस संकट से उबरने के लिए वह आज तक तमाम नीतियां जो अपनायी वे विफल हो गयी। 21वीं सदी के दूसरी दशक के अंत तक वह महाशक्ति का ओहदा को खो जाने के बाद बहुध्रुवीय विश्व अस्तित्व में आयी।
2. अमेरिकी महाशक्ति ओहदा को खो जाने के बाद, बहुध्रुवीय विश्व अस्तित्व में आयी, बावजूद अब भी वह दुनिया के उत्पीड़ित जनता व उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं के लिए नंबर वन दुश्मन है। वह अपनी आधिपत्य को बरकरार रखने के लिए आक्रामकता के साथ प्रयास करते हुए बहुध्रुवीय विश्व को चुनौती दे रहा है। इससे दुनिया का पुनर्विभाजन के लिए अमेरिका व चीन के बीच प्रतिद्वंद्वता बढ़ रही है। रूसी साम्राज्यवाद अपने प्रभावी इलाकों को कायम रखने के लिए प्रयास कर रहा है। इस स्थिति में विश्व भर में भौगोलिक- राजनीतिक समीकरण (री एलाइनमेंट) बदल रहे हैं।

3. साम्राज्यवादी देशों व पूंजीवादी देशों में आर्थिक क्षेत्र में संरक्षणवादी नीति (प्रोटेक्शनिज्म), राजनीतिक क्षेत्र में नस्लवाद (रेसिज्म) व फासीवाद बढ़ रहा है.
4. पिछड़े देशों के संसाधनों व बाजार को लूटने के लिए साम्राज्यवादी देशों के बीच होड़ बढ़ रही है. इससे साम्राज्यवाद और उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं व उत्पीड़ित जनता के बीच अंतरविरोध तेज हो रहा है.
5. बुनियादी अंतरविरोधों के तीखे होते जाने के फलस्वरूप देशीय व अंतर्राष्ट्रीय तौर पर उत्पीड़ित वर्गों, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं, उत्पीड़ित तबकों की जनता साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही बुर्जुआ वर्ग व सामंतवाद के खिलाफ व्यापक पैमाने पर संघर्षों में गोलबंद हो रही हैं. इन संघर्षों से ही दुनिया भर में माओवादी पार्टियां/क्रांतिकारी पार्टियां पैदा हो रही हैं व मजबूत हो रही हैं. आगामी दिनों में बाकी देशों में भी क्रांतिकारी पार्टियां जन्म लेकर संगठित होने के मौकें दिन-ब-दिन बढ़ रहे हैं.

देशीय तौर पर देखा जाए तो, नरेंद्र मोदी के नेतृत्वाधीन केंद्र सरकार द्वारा 'नया भारत' के नाम पर ब्राह्मणीय हिंदुत्व राज्य की स्थापना के लिए अपनायी जा रही तमाम ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी नीतियां हमारे देश के उत्पीड़ित वर्गों, राष्ट्रीयताओं व सामाजिक समुदायों के खिलाफ हैं. इसलिए देश के मजदूरों, किसानों, मध्यम वर्ग के लोग, राष्ट्रीय (छोटे व मध्यम किस्म के) पूंजीपतियों, उत्पीड़ित जातियों, धार्मिक अल्पसंख्यकों, दलितों, आदिवासियों, महिलाओं – ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद के खिलाफ व्यापक रूप से लड़ रहे हैं. इन आंदोलन आगामी दिनों में और व्यापक होकर, जुझारू बनकर संगठित होने के अवसर बढ़ रहे हैं. यह हमारे देश के राजनीतिक परिणामों में नया बदलाव है.

उपरोक्त वस्तुगत स्थिति क्रांतिकारी आंदोलन की अग्रगति के लिए तात्कालिक व दीर्घकालिक अवसर पैदा करती है तो आत्मगत स्थिति से देखा जाए, तो विगत नौ सालों से हम जो राजनीतिक, सैनिक व सांगठनिक कार्य कर रहे हैं, उसमें, विशेषकर जनयुद्ध के अनुभवों से प्राप्त सबक हमें कठिन

स्थिति को, अस्थायी पीछेहट को पार करने के लिए फौरी अवसर उपलब्ध करा रहे हैं। उसी तरह कठिन स्थिति में, अस्थायी पीछेहट की स्थिति में पार्टी को संगठित करने पर, जनता के बीच काम पर, पार्टी के नेतृत्व में छापामार युद्ध को संचालित करने के दांव-पेंचों पर हमारी पार्टी व पीएलजीए को सापेक्षिक रूप से स्पष्टता हासिल हुई। देश के 16 राज्यों में क्रांतिकारी आंदोलन को संचालित करने वाली हमारी पार्टी में अभी भी अलग-अलग अंतरों के साथ काफी संख्या में कैडर व नेतृत्वकारी शक्तियां मौजूद हैं।

कुल मिलाकर देखा जाए, देशव्यापी क्रांतिकारी आंदोलन ने वर्तमान में अस्थायी पीछेहट की स्थिति में है; दुश्मन ने हमारी पार्टी व पीएलजीए बलों को उन्मूलन नहीं कर पाया; विभिन्न स्तरों में क्रांतिकारी गतिविधियां जारी हैं, ऐसा आकलन किया गया।

हालांकि भारत का क्रांतिकारी आंदोलन साधारणतया अस्थायी पीछेहट की स्थिति में है लेकिन हमारे देश के असमान विकास के फलस्वरूप वर्ग संघर्ष व जनयुद्ध में असमानताएं मौजूद हैं। हमारे क्रांतिकारी आंदोलन में मौजूद असमान विकास को ध्यान में रखकर अस्थायी पीछेहट में रहे क्रांतिकारी आंदोलन को अग्रगति में लाने हेतु उपयोगी तात्कालिक कर्तव्यों को तय करेंगे।

हमारी रणनीतिक योजना

देश में अस्थायी पीछेहट की स्थिति में रहे आंदोलन को अग्रगति में लाने के लिए अभी भी छापामार जोनों के रूप में रहे डीके, बीजे, पूर्वी बिहार-पूर्वोत्तर झारखंड के आंदोलनों को मुक्तांचन बनाने के लक्ष्य से विकसित करना है। इस लक्ष्य और देशभर में अन्य इलाकों में जारी आंदोलनों के लक्ष्यों के बीच आपसी संबंध को पहचान कर तय केंद्रीय कर्तव्य हासिल करने का प्रयास करना है।

केंद्रीय कर्तव्य हासिल करने में अस्थायी रूप से पीछेहट की स्थिति जब तक अग्रगति में नहीं बदलती, तब तक पार्टी, पीएलजीए, संयुक्त मोर्चा को संगठित करना, नेतृत्व, कैडरों व पीएलजीए बलों को बचाना, छापामार युद्ध को जारी रखते हुए ही जनाधार और आत्मगत शक्ति को बढ़ाना हमारी रणनीतिक योजना में महत्वपूर्ण पहलू हैं। इस समझदारी के साथ ही उक्त तीन छापामार

जोनों को मुक्तांचल बनाने के लक्ष्य से विकसित करने के लिए हमें गंभीर कोशिश करनी चाहिए.

रणनीतिक योजना में और एक मुख्य पहलू है पूर्वी व मध्य रीजियनों के बीच व्यापक रणनीतिक इलाकों को अखंडित (कंटिग्युअस) क्रांतिकारी युद्ध क्षेत्र के रूप में विकसित करना. इसलिए इस रणनीतिक कर्तव्य पूरा करने के लिए उपयोगी होने लायक योजनाबद्ध ढंग से केंद्रीय कमेटी समेत इआरबी व सीआरबी आत्मगत व पादार्थिक रूप से विशेष महत्व देकर प्रयास करना चाहिए. इसके अलावा देशभर में अन्य (एओबी, तेलंगाना, ओड़िशा, पश्चिमी घाटी व एमएमसी) इलाकों के आंदोलनों को केंद्रीय कर्तव्य के साथ समन्वय करते हुए उनकी फौरी व प्रधान कर्तव्य हासिल करने की दिशा में विकसित करने के लिए और शहरी आंदोलनों विकसित करने के लिए योजनाबद्ध ढंग से प्रयास करना चाहिए.

फौरी कर्तव्य

प्रधान , केंद्रीय कर्तव्य

सीसी पूरी पार्टी के केंद्रीय कर्तव्य को पूरा करने में एकताबद्ध होकर एक मजबूत शक्ति बतौर काम करना चाहिए. डीके, बीजे और पूर्वी बिहार—पूर्वोत्तर झारखंड के आंदोलनों को आधार इलाके के लक्ष्य से विकसित करना चाहिए. इसके मुताबिक इन इलाकों में क्रांतिकारी जनाधार को व्यापक व मजबूत करते हुए आत्मगत शक्ति को बढ़ाते हुए राजनीतिक सत्ता दखल करने के लक्ष्य से वर्गसंघर्ष व गुरिल्ला युद्ध को व्यापक और तेज करना चाहिए. पार्टी, पीएलजीए और संयुक्तमोर्चा को यह लक्ष्य हासिल करने के अनुरूप मजबूत करना चाहिए. डीके आंदोलन को भाटा की स्थिति से, बीजे व पूर्वी बिहार—पूर्वोत्तर झारखंड के आंदोलनों को अस्थायी पीछेहट की स्थिति से उबार कर आगे बढ़ने की तरह विशेष प्रयास करना चाहिए. इन इलाकों से सटे होने वाले गुरिल्ला जोनों और लाल प्रतिरोध इलाकों के अलावा देश के अन्य विकासशील गुरिल्ला जोन व लाल प्रतिरोध इलाकों में वर्गसंघर्ष व गुरिल्ला युद्ध को विकसित करते हुए जनाधार और आत्मगत शक्ति को बढ़ाने पर सीसी ध्यान देना चाहिए. उसी तरह देशभर में क्रांति के लिए अनुकूल बदलती परिस्थितियों को नजर में रखकर, शहरी व मैदानी इलाकों में उचित कार्यनीति तय कर क्रांतिकारी आंदोलन का निर्माण के लिए प्रयास करना चाहिए. देशभर में आंशिक मुद्दों पर स्वतःस्फूर्ति से उभर रहे जनांदोलनों पर हमारी पार्टी जहां—तहां सभी स्तरों पर पहलकदमी से प्रतिक्रिया देकर उन्हें संगठित आंदोलनों के रूप में विकसित करने का प्रयास करना चाहिए. रणनीतिक दृष्टि से योजनाबद्ध ढंग से दृढ़संकल्प के साथ आज का जनयुद्ध के केंद्र बिंदु रहे उक्त तीन गुरिल्ला जोनों पर अपने ध्यान केंद्रित करना चाहिए. इसके अलावा देश के विभिन्न इलाकों और क्षेत्रों में काम करना चाहिए. तभी असमान वृद्धि का उसूल के अनुरूप ही क्रमशः भारत के क्रांतिकारी आंदोलन आज की अस्थायी पीछेहट की स्थिति से उबर कर आधार इलाकों को विकसित करने के लक्ष्य से आगे बढ़ेगा.

राजनीतिक कर्तव्य

1. भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को अस्थायी पीछेहट की स्थिति से अग्रगति में विकसित कर सकने की ताकत व क्षमता रखने वाली पार्टी के रूप में उसके सैद्धांतिक व राजनीतिक स्तर को विकसित करें. पार्टी में मौजूद गैर-सर्वहारा रुझानों को सुधारें, बोल्शवीकरण करें.
 2. जनाधार को बढ़ाते हुए दुश्मन के लिए अभेद्य मजबूत व गुप्त पार्टी का निर्माण करते हुए, पीएलजीए व जन संगठनों-संयुक्त मोर्चे को सुदृढ़ बनाते हुए व बढ़ाते हुए जन संघर्षों व छापामार युद्ध को विस्तृत-तीव्रतर करें. भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के उन्मूलन के लिए केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा जारी प्रतिक्रांतिकारी 'समाधान' रणनीतिक हमले को हराएं.
 3. 'भारत देश के उत्पादन संबंधों में बदलाव-हमारा राजनीतिक कार्यक्रम' नामक दस्तावेज में दिए गए वर्ग संघर्ष कार्यक्रम व कार्यनीति के आधार पर सभी इलाकों में साम्राज्यवाद विरोधी, दलाल नौकरशाही बुर्जुआ विरोधी, सामंती विरोधी वर्ग संघर्षों को तीव्रतर करें. कृषि क्रांतिकारी आंदोलन को तीव्रतर करें.
 4. साथ में आने वाली सभी शक्तियों को लेकर व्यापक आधार पर ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी विरोधी संयुक्त मोर्चा के निर्माण पर केंद्रित करें.
 5. एओबी में वर्ग संघर्ष को तीव्रतर करते हुए छोटे, मध्यम किस्म की कार्रवाइयों के जरिए छापामार युद्ध को जारी रखें. पार्टी, पीएलजीए को सुदृढ़ बनाएं. जन राज्यसत्ता के अंगों का निर्माण करते हुए-संगठित करते हुए-विस्तार करें. अस्थायी पीछेहट की स्थिति से आगे बढ़ते हुए छापामार जोन को विकसित करें.
- तेलंगाना में साम्राज्यवाद विरोधी, सामंतवाद विरोधी वर्ग संघर्ष को तीव्रतर करते हुए जनाधार को मजबूत करते हुए छोटे किस्म की छापामार कार्रवाइयों के जरिए छापामार युद्ध को जारी रखें. अस्थायी पीछेहट की स्थिति से आगे बढ़ते हुए छापामार जोन को विकसित

करें.

ओडिशा, एमएमसी और पश्चिमी घाटियों में साम्राज्यवाद विरोधी, सामंतवाद विरोधी वर्ग संघर्ष को तीव्रतर करते हुए जनाधार को बढ़ाते हुए पार्टी व पीएलजीए को मजबूत करें. लाल प्रतिरोधी इलाकों के कर्तव्यों को पूरा करते हुए शक्ति अनुसार छापामार युद्ध को जारी रखते हुए छापामार जोनों का निर्माण करें.

2यू, पश्चिम बंगाल, उत्तर छत्तीसगढ़ में अस्थायी रूप से पीछेहट की स्थिति को पार करने के लिए वर्ग संघर्ष को तीव्रतर करते हुए, जनाधार को मजबूत करें. छोटे किस्म की कार्रवाइयों के द्वारा छापामार युद्ध को जारी रखकर, उन इलाकों में छापामार जोनों के पुनर्निर्माण में लग जाएं.

उत्तर रीजन के सभी राज्यों में व असम में वर्ग संघर्ष को तीव्रतर करते हुए लाल प्रतिरोधी इलाकों को विकसित करें.

6. क्रांतिकारी आंदोलन के राज्यों में संगठितकरण पर आधारित होकर नए इलाकों व नए क्षेत्रों में विस्तार करें.

सांगठनिक कर्तव्य

1. पार्टी कमेटियों को पहलकदमी के साथ अपने-अपने इलाकों के आंदोलनों का सफल नेतृत्व उपलब्ध कराने की क्षमता रखने वाली स्वयंसमृद्ध कमेटियों के रूप में तैयार करें. दुश्मन के हमले को कारगर ढंग से मुकाबला करते लायक पार्टी की गुणवत्ता (क्वालिटी) को बढ़ाएं.
2. एक ऐसी मजबूत गुप्त पार्टी का निर्माण करें जिसके केंद्र में पेशेवर क्रांतिकारी हों और अंशकालीन सदस्यों की इकाइयों वाली विस्तृत मशीनरी से लैस हो. ऐसी गुप्त मशीनरी का निर्माण करें जो दुश्मन के हमलों के लिए अभेद्य हो. पार्टी की ताकत को बढ़ाने के लिए, पार्टी सदस्यों व पेशेवर क्रांतिकारियों की तादाद् बढ़ाने के लिए रिक्रूटमेंट ड्राइव पर केंद्रित करें. बुनियादी क्रांतिकारी वर्गों से और सामाजिक तबकों से पार्टी कैडरों को भर्ती करने पर, पार्टी के तमाम क्षेत्रों में

इनकी भूमिका बढ़ाते हुए पदोन्नत करने पर विशेष ध्यान दें. दुश्मन के हमले का डटकर मुकाबला करने लायक पार्टी की गुणवत्ता (क्वालिटी) को बढ़ाएं.

3. जनवादी केंद्रीयता के दायरे के मातहत रहते हुए ही सभी कमेटियों को चाहिए कि वे न सिर्फ ऊपरी कमेटियों के आदेशों पर आधारित हों बल्कि अपने स्वयं की पहलकदमी का उपयोग करते हुए राजनीतिक व सैनिक दांव-पेंचों को सृजनात्मक व जीवंत तरीके से बनाने की पहल करनी चाहिए.
4. यथेच्छापूर्वक व स्वतःस्फूर्तता वाली कार्यशैली से बचते हुए पार्टी कमेटियों को इस तरह विकसित करें कि वे माओवादी कार्यशैली में कुशलता हासिल कर सकें.
6. सभी स्तरों पर द्वितीय श्रेणी के नेतृत्व को विकसित करें.

सैनिक कर्तव्य

1. माओवादी जनयुद्ध के सिद्धांत, अंतराष्ट्रीय क्रांतिकारी आंदोलन के अनुभवों, राष्ट्रीयताओं के संघर्षों के अनुभवों एवं हमारे जनयुद्ध के अनुभवों का अध्ययन करें. इन सैद्धांतिक अनुभवों के अध्ययन के जरिए हमारे जनयुद्ध को बेहतर तरीके से जारी रखें.
2. जनता से जीवंत संबंध बढ़ाकर, उन्हें राजनीतिक रूप से जागरूक व संगठित करें. वे हथियारबंद होने और आत्मरक्षा करने, सत्ता के इकाइयों का निर्माण करने, अपनी जीवन स्तर को बढ़ाने और जनयुद्ध में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए सभी तरह के प्रयास करें.
3. डीके, बीजे में कारपेट सेक्युरिटी को विफल करने के छापामार युद्ध के दांव-पेंचों को विकसित करें. कारपेट सेक्युरिटी को ध्वस्त करने के लिए सभी किस्म के संसाधनों को संग्रहित करते हुए तैयारियां करें.
4. दुश्मन द्वारा अमल किए जा रहे एलआईसी आधारित काउंटर कम्युनिस्टि इंसर्जेंसी व काउंटर गुरिल्ला वार के दांव-पेंचों को हराने के स्तर तक पीएलजीए कमांडों की कमांडिंग क्षमता व हमारे बलों की

कंबाट क्षमता को बढ़ाएं.

5. सभी प्रकार के कंबाट स्किल्स व टेक्निकल स्किल्स को विकसित करें.
6. आत्मरक्षा के नियमों व छापामार युद्ध के नियमों का कड़ाई से पालन करें एवं उनके अमल में व्याप्त खामियों को तत्काल सुधारें ताकि दुश्मन के हमले में हमारे बल नष्ट न हो जाएं.
7. छापामार जोनों में व लाल प्रतिरोधी इलाकों में जन मिलिशिया का व्यापक तौर पर निर्माण करें. आंदोलन के सभी इलाकों में विशेष दृष्टि से भर्ती बढ़ाएं.
8. ध्वस्त व कमजोर हुए सहायक विभागों का सीढ़ी दर सीढ़ी पुनर्निर्माण करें, संगठित करें.

संयुक्त मोर्चा के कर्तव्य

1. रणनीतिक व कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चा के क्षेत्रों में हमारे अनुभवों का अध्ययन करें. अनुभवों से सीख लेकर संयुक्त मोर्चा के कार्य में सुधार लाएं. रणनीतिक व कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चों को संगठित करें. तमाम स्तरों में जन राजसत्ता के इकाइयों समेत जनसंगठनों और संयुक्त मोर्चों के निर्माणों में सक्षम नेतृत्व को विकसित करें. कार्यनीति के प्रति समझदारी बढ़ाए व व्यापक करें.
2. सभी छापामार जोनों में जनयुद्ध में हासिल जीतों पर आधारित होकर स्थानीय स्तर पर जन राज्यसत्ता के अंगों का निर्माण करें, उच्च स्तर पर विकसित करें.
3. विस्थापन समेत साम्राज्यवादी वैश्वीकरण की सभी नीतियों के खिलाफ व्यापक जनता को इकट्ठा कर संयुक्त मोर्चा का निर्माण करें.
4. जातीय उत्पीड़न के खिलाफ दलितों को संगठित करें, जुझारू संघर्षों का निर्माण करें.
5. पितृसत्ता के खिलाफ एवं सामंतवाद व साम्राज्यवाद के शोषण व उत्पीड़न के खिलाफ महिला आंदोलन को मजबूत करें.
6. ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी हमलों शिकार तमाम धार्मिक अल्पसंख्यकों

को संगठित कर जुझारू प्रतिरोध को बढ़ाएं.

7. भारत के शासक वर्गों द्वारा अमल में लायी जा रही फासीवादी नीतियों व राजनीतिक दमनकांड के खिलाफ व्यापक जनसमुदायों को गोलबंद करें, जनवादी अधिकारों के आंदोलन को व्यापक व मजबूत बनाएं.
8. हमारी पार्टी के नेतृत्व में जारी दीर्घकालीन जनयुद्ध के और भारत की विस्तारवाद के खिलाफ लड़ रहे कश्मीर, उत्तर-पूर्व के असम, नगालैंड, मणिपुर आदि इलाकों में जारी विभिन्न राष्ट्रीयताओं के संघर्षरत संस्थाओं के बीच संयुक्त मोर्चा गठित करने का प्रयास करें.

शहरी कर्तव्य

1. शहरी आंदोलन के अनुभवों का अध्ययन करें. उनसे उपयुक्त सीख लेते हुए आज की परिस्थिति के मुताबिक नए तौर-तरीकों में शहरी आंदोलन का निर्माण करें.
2. संकीर्णतावादी गलतियों का शिकार न होकर सही दांव-पेंचों पर अमल करें.
3. मजदूर वर्ग पर केंद्रित करें. कुंजीभूत क्षेत्र के मजदूरों के बीच दीर्घकालिक दृष्टि से आंदोलन का निर्माण करें.
4. व्यापक स्तर पर छात्र, युवा व महिला आंदोलनों का निर्माण करें. मजदूर, छात्र, युवा एवं महिला आंदोलनों से नई पीढ़ी की पार्टी में भर्ती करते हुए शक्तिशाली व व्यापक शहरी आंदोलन समेत नेतृत्व का निर्माण करें.
5. शहरी इलाकों में कानूनी/गैर-कानूनी निर्माणों के बीच और गतिविधियों के बीच समन्वय मशीनरी व गुप्त मशीनरी को विकसित करें.
6. जनयुद्धोन्मुख मजबूत शहरी आंदोलन का निर्माण करें.

कॉमरेडो!

भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के वर्तमान अस्थायी पीछेहट की स्थिति अग्रगति में विकसित करने के लक्ष्य से हमने तात्कालिक कर्तव्यों को तय

किया है. ये साधारणतया आगामी पांच साल की समयावधि के लिए लागू होते हैं. तथापि इनमें कुछ दीर्घकालिक कर्तव्य भी हैं. इन पांच सालों में जब का तब बदलते अंतर्राष्ट्रीय व देशीय राजनीतिक परिणामों पर, वर्ग संघर्ष में और आंदोलन की मजबूती व कमजोरी में होने वाले बदलावों पर निर्भर होकर केंद्रीय कमेटी, रीजनल ब्यूरोओं व एसएसी/एसजडसी/एससीयों द्वारा इनमें उक्त आवश्यक बदलाव कर सक्षम रूप से नेतृत्व प्रदान करने के जरिए कर्तव्यों में पहलकदमी के साथ प्रत्याशित नतीजे हासिल कर सकते हैं.

